एशिया की लोक कथाऐं

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Asia Ki Lok Kathayen (Folktales of Asia)
Cover Page picture: Trans-Siberian Railroad, Siberia, Russia
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Asia

Some Countries of Asia
Arab, Iran, Iraq, Afganistan, Pakistan, India, Kazakistan, Turkmen, Russia, Mongolia, Combodia, Japan, China, North and South Korea, Taiwan, Indonesia, South-east Asian Islands etc…

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

एशिया की लोक कथाऐं 7

1 एक भिखारी और एक कंजूस 9

2 शहद की एक छोटी सी बूँद 11

3 बोर्नियो में चीते क्यों नहीं 15

4 गाने वाला काशीफल 21

5 कहानियों की भेंटः बगदाद का खलीफा 29

6 अली कोजिया और बगदाद का सौदागर 33

7 ह्वान और डॉग 48

8 काशीफल के बीज 68

9 जादुई बटुआ 80

10 जो बोओगे वही खाओगे 87

11 एक राजा जो बूढ़ों से नफरत करता था 96

12 राजकुमार और फकीर 103

13 अमीन और गुल 112

14 सात खुश गॉव वाले 122

15 चॉद बचाया 127

16 नर मच्छर क्यों नहीं काटते 133

17 नारियल वाला आदमी 137

18 मुर्गियॉ जमीन क्यों खुरचती हैं 141

19 बन्दर और बड़ी मक्खियॉ 145

20 गिरगिट और चीते की लड़ाई 149

21 राजा जिसने अपने तरीके बदले 158

22 मक्खियों ने कर्जा चुकाया 164

23 कुँए का मेंढक 168

24 तैवान में खरगोश पकड़ना 173

25 हाथी की नाक लम्बी क्यों 178

26 कैन्डी वाला आदमी 182
27 चीता और मेंढक 189
28 दो ख़रगोश और एक भालू 194
29 दस्ताने 196
30 एक मछियारा, एक कीड़ा और एक घोंघा 202
31 चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे 209

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" के नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

एशिया की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह साइज़ में भी और जनसंख्या में भी एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। रूस का साइज़ इसको साइज़ में और चीन और भारत की जनसंख्या इसको जनसंख्या में सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है।

एशिया महाद्वीप में लगभग 50 देश हैं। इसके कुछ मुख्य देशों के नाम हैं – रूस, चीन, भारत, जापान, उत्तर और दक्षिण कोरिया, मंगोलिया, कम्बोडिया, तिब्बत, अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कज़ाकिस्तान आदि। एशिया के बहुत सारे देशों में से हमने रूस, चीन, भारत, जियोर्जिया और अरब देशों की लोक कथाऐं उन देशों के नाम से ही दी हैं। इस पुस्तक में उसके बाकी बचे हुए कुछ देशों की कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं।

आशा है कि और लोक कथाओं की तरह से ये लोक कथाऐं भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी।

1 एक भिखारी और एक कंजूस[1]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के अरब देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बूढ़ा भिखारी एक बहुत पुराने गॉव से गुजरा। उसने एक बहुत बड़ा और सुन्दर मकान देखा तो उसका दरवाजा उसके एक बड़े से लोहे के कुंडे को दरवाजे पर मार कर खटखटाया।

अब इस मकान में एक बहुत ही कंजूस आदमी रहता था। इस आदमी की कंजूसी गॉव भर में मशहूर थी। हालॉकि वह बहुत अमीर था पर उसने कभी किसी को कुछ भी नहीं दिया था।

भिखारी के दरवाजा खटखटाने पर उस कंजूस ने दरवाजा खोला तो सामने एक भिखारी को खड़े पाया। भिखारी उसको देख कर बोला — "मुझे थोड़ा मॉस या दूध दे दीजिये मैं बहुत भूखा हूॅ।"

कंजूस ने रुखाई से जवाब दिया — "नहीं नहीं, मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। चले जाओ तुम यहॉ से।"

भिखारी को तो बहुत भूख लगी थी सो वह फिर बोला — "तो कुछ गेहूॅ या बीन्स ही दे दीजिये।"

---

[1] A Beggar and a Miser – a folktale from Saudi Arabia, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_1.html

कंजूस फिर बोला — "मेरे पास कुछ भी नहीं है तुम्हें देने को। कहा न मैंने तुमने सुना नहीं?"

भिखारी फिर बोला — "तो फिर एक रोटी का टुकड़ा ही दे दीजिये मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।"

कंजूस तंग हो कर बोला — "अरे मैं तुमको रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी भी नहीं है।"

भिखारी ने भी अपना आखिरी तीर छोड़ा — "आप यह सब कुछ भी नहीं दे सकते तो कम से कम मुझे एक गिलास पानी ही पिला दीजिये मैं उसी से अपनी भूख बुझा लूँगा।"

अबकी बार कंजूस को भिखारी पर बहुत ज़ोर का गुस्सा आ गया और वह झल्ला कर बोला — "चले जाओ यहाँ से। मेरे पास पानी भी नहीं है।"

भिखारी अबकी बार शान्ति से बोला — "मेरे बेटे, जब तुम इतने गरीब हो कि मुझे एक गिलास पानी भी नहीं दे सकते तो फिर तुम यहाँ क्यों बैठे हो? मुझे लगता है कि तुम तो मुझसे भी ज़्यादा गरीब हो। आओ मेरे साथ हम दोनों अच्छे लोगों से खाना माँगेंगे और अपना पेट भरेंगे।"

2 शहद की एक छोटी सी बूँद[2]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के बर्मा देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह एक बहुत ही छोटी और प्यारी सी कहानी है।

एक बार की बात है कि एक गर्म दोपहर को एक राजा अपने मन्त्री के साथ अपने महल की दीवार पर खड़े अपने बाजार की तरफ देख रहे थे। बाजार में उस समय बहुत सारे लोग आ जा रहे थे।

राजा वहाँ खड़े खड़े चावल की एक केक खा रहे थे जिस पर शहद लगा हुआ था और साथ में वे दोनों आपस में अपने राज्य की बातें भी करते जा रहे थे।

चावल की केक खाते खाते उस पर पड़े शहद से उसकी एक बूँद टपक कर नीचे खिड़की की दीवार पर गिर पड़ी।

यह देख कर मन्त्री जी वहाँ से जाने लगे तो राजा ने पूछा — "अरे मन्त्री जी आप कहाँ जा रहे हैं?"

मन्त्री जी बोले — "मैजेस्टी मैं किसी नौकर को बुलाने जा रहा हूँ जो शहद की इस बूँद को साफ कर देगा।"

राजा बोले — "चिन्ता न करो। यह कोई बड़ी भारी बात नहीं है और यह कोई खास बात भी नहीं है।"

---

[2] A Little Drop of Honey – A folktale from Burma, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=252
Adapted from a Burmese Folktale by Mike Lockett

मन्त्री जी रुक गये। जब वे यह बात कर रहे थे तभी वह शहद की बूँद खिड़की की दीवार से टपक कर नीचे सड़क पर जा गिरी। राजा और उनके मन्त्री ने देखा कि उस शहद की बूँद पर बहुत सारी मक्खियाँ इकट्ठी होने लगीं।

मन्त्री जी फिर बोले — "योर मैजेस्टी मुझे लगता है कि इस शहद की बूँद से पहले कोई समस्या उठ खड़ी हो हमको इस शहद की बूँद का कुछ करना चाहिये।"

राजा फिर बोले — "मन्त्री जी यह तो कोई समस्या ही नहीं है। आप बेकार में ही इसकी इतनी चिन्ता कर रहे हैं।"

जैसे ही राजा ने यह कहा तो उन दोनों ने देखा कि एक छिपकली आयी और अपनी लम्बी जीभ निकाल कर उन मक्खियों को खाने लगी।

तभी वहाँ के दूकानदारों ने देखा कि छिपकली के पीछे से एक बिल्ली आयी और उन मक्खियों को खाती छिपकली पर झपट पड़ी।

मन्त्री जी फिर बोले — "योर मैजेस्टी मुझे लगता है कि इससे पहले कोई समस्या उठ खड़ी हो हमको इस शहद की बूँद का कुछ करना चाहिये।"

राजा फिर बोले — "मन्त्री जी यह कोई समस्या नहीं है। आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें।"

जैसे ही राजा ने यह कहा तो उन दोनों ने फिर देखा कि एक कुत्ता बिल्ली को काटने के लिये बिल्ली के पीछे से भौंकता चला आ रहा है।

मन्त्री जी ने फिर देखा कि उस कुत्ते और बिल्ली में तो लड़ाई हो रही है।

यह देख कर मन्त्री जी फिर बोले — "योर मैजेस्टी मुझे लगता है कि इससे पहले कि ये हालात और ज़्यादा खराब हो जायें हमको कुछ करना चाहिये।"

और राजा ने फिर वही जवाब दिया — "मन्त्री जी यह कोई समस्या नहीं है। आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें।"

कुत्ते और बिल्ली की लड़ाई ज़ोर पर थी। बहुत शोर मच रहा था सो यह देखने के लिये कि यह शोर कहॉ से आ रहा है और क्यों हो रहा है दूकानदार अपनी अपनी दूकान छोड़ छोड़ कर वहॉ आने लगे जहॉ कुत्ता बिल्ली को खाने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा रहा था।

कुछ लोगों ने देखा कि कुत्ता बिल्ली को खाने की कोशिश कर रहा था तो उन्होंने कुत्ते के मालिक को पीटना शुरू कर दिया। जबकि दूसरों ने देखा कि बिल्ली कुत्ते को मार रही है तो उन्होंने बिल्ली के मालिक को पीटना शुरू कर दिया।

जल्दी ही वहॉ आदमियों के बीच झगड़ा शुरू हो गया तो इस झगड़े को रोकने के लिये वहॉ पुलिस आ गयी। कुछ लोगों ने डंडे उठा लिये और उससे एक दूसरे को मारने लगे।

इस मार पीट के बीच वे यह भी भूल गये कि वे एक दूसरे को क्यों मार रहे थे। पुलिस उनके ऊपर काबू नहीं पा सकी तो हालात को काबू करने के लिये राजा की फौज को वहॉ बुलाया गया।

राजा और उनके मन्त्री ऊपर खड़े खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे कि शहद की एक छोटी सी बूँद ने वहॉ क्या रंग खिला दिया था। राजा और मन्त्री जी के सिवा वहॉ खड़े सभी लोग लड़ रहे थे।

मन्त्री जी ने राजा की तरफ देखा तो राजा बोले — "यह शहद की बूँद शायद हमारी ही समस्या थी मन्त्री जी।"

3 बोर्नियो में चीते क्यों नहीं[3]

इन्डोनेशिया के टापू[4] एशिया के दक्षिण पूर्व में स्थित हैं। ये टापू जंगलों से भरे पड़े हैं, यहाँ तक कि उसके तीन बड़े टापू – बोर्नियो, जावा और सुमात्रा भी। उसके हर टापू पर चीते घूमते रहते हैं सिवाय बोर्नियो टापू के। यह कहानी यही बताती है कि बोर्नियो टापू पर चीते क्यों नहीं हैं।

सो बहुत पहले की बात है कि इन्डोनेशिया के सभी टापुओं पर चीते सभी जगह घूमा करते थे। ये भूखे जानवर बहुत खाते थे और इतना खाते थे कि दूसरों को खाना मिलना मुश्किल हो जाता था।

चीतों का राजा एक सबसे बड़ा चीता था। एक बार उसने अपने एक दूत को बुलाया जो एक चीता ही था और उससे कहा — "जाओ और बोर्नियो के जानवरों के राजा को ढूँढ कर लाओ।

उसको बोलना कि मैं उसके टापू पर अपने भूखे परिवार के साथ जल्दी ही खाना खाने आऊँगा। वह अपने टापू पर बहुत सारे जानवरों को इकट्ठा कर ले और उसको यह दे देना..."

[3] Why There Are No Tigers in Borneo – a folktale from Indonesia, Asia. Translated from the Web Site: http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=117

[4] Indonesian Islands – Java, Sumatra, Borneo etc

यह कह कर राजा चीता ने अपनी मूँछ का एक लम्बा सा बाल तोड़ा और उस दूत को देते हुए कहा — "यह उसको दिखाना ताकि वह यह समझ ले कि मैं कितना बड़ा और कितना ताकतवर हूँ।" दूत ने वह बाल लिया और बोर्नियो टापू की तरफ चल दिया।

बोर्नियो टापू पर सबसे पहला जानवर जो उसको मिला वह था एक बहुत ही छोटा सा "छोटा हिरन"[5]।

दूत चीता उसको अपने मालिक की मूँछ का बाल देते हुए उससे बोला — "मेरे मालिक ने मुझे यहाँ भेजा है। यह तुम अपने राजा को देना और उसको बताना कि देखो मेरा राजा कितना बड़ा और ताकतवर है।

मेरा राजा यहाँ आ रहा है। सो तुम्हारे राजा को उन सब चीतों को जो मेरे राजा के साथ तुम्हारे टापू पर उसके साथ आयेंगे खाने के लिये काफी जानवर देने होंगे।"

यह सुन कर वह छोटा हिरन बहुत डर गया। उसने सोचा — "चीते तो बिल्ली होते हैं और बिल्ली चूहे खाती है। बड़ी बिल्ली, जैसे चीता, बड़े जानवर खाता है जैसे हिरन और छोटा हिरन।" और छोटा हिरन नहीं चाहता था कि उसको कोई खाये।

[5] Translated for the word "Mousedeer" – Also called Chevrotain, this extant species is found in forests in South and Southeast Asia, with a single species in the rainforests of Central and West Africa. They are solitary or live in pairs, and feed almost exclusively on plant material. Depending on their exact species, the Asian species weigh between 1.5 and 17.6 lb. See its picture above.

उसको यह भी मालूम था कि वह चीते से लड़ने के लिये बहुत छोटा था सो वह अपने दोस्त साही[6] के घर दौड़ा गया। वहाँ जा कर वह उससे बोला — "मेरे दोस्त, मुझे तुमसे एक काम है। तुम मुझे अपना एक सबसे लम्बा और सबसे मजबूत काँटा दे दो।"

"पर तुम्हें उसकी क्या जरूरत पड़ गयी? मेरे काँटे तो बहुत लम्बे हैं सख्त हैं और तेज़ हैं। उससे तो तुम अपने आपको ही चोट मार लोगे।" साही बोला।

छोटा हिरन बोला — "मैं यह सब तुम्हें बाद में बताऊँगा पर अभी तो सबसे जरूरी बात यह है कि अगर तुम अपना काँटा मुझे दे दोगे तो तुम बोर्नियो के जंगल के हर जानवर की जान बचाओगे।"

साही यह सोच कर हँसा कि ऐसा कैसे हो सकता है। उसका केवल एक काँटा उस सारे टापू के जानवरों की जान कैसे बचा सकता है पर फिर भी उसने उसको अपना एक सबसे लम्बा, मजबूत और तेज़ काँटा निकाल कर उस छोटे हिरन को दे दिया।

छोटे हिरन ने उसको अपने मुँह में दबाया और जितनी जल्दी वहाँ से भाग सकता था उतनी जल्दी वहाँ से भागता हुआ उस दूत चीते के पास आया।

[6] Translated for the word "Porcupine". See its picture above.

दूत चीते ने पूछा — "क्या हुआ? क्या तुमने अपने राजा से कहा कि हमारा राजा यहॉ बोर्नियो में आ रहा है? और क्या तुमने उसको यह भी बताया कि चीते मॉस खाते हैं और उसको उन चीतों के खाने के लिये बहुत सारे जानवर देने हैं?

और क्या तुमने उसको हमारे राजा की मूँछ का वह बाल भी दिखाया जो मैंने तुमको दिया था ताकि वह यह जान सके कि हमारा राजा कितना बड़ा है?"

छोटे हिरन ने दूत चीते की ऑखों में ऑखें डाल कर देखा और बोला — "हमारे राजा अभी बड़े बड़े जानवरों का शिकार करने में लगे हैं इसलिये वह अभी तुम्हारे पास बात करने के लिये नहीं आ सकते।

पर उन्होंने मुझसे तुमसे यह कहने के लिये कहा है कि वह खुद भी चीते खाने के लिये बहुत भूखे हैं और वह यह उम्मीद करते है कि तुम सब लोग यहॉ जरूर आओगे ताकि वह तुम लोगों को खा सकें। और उन्होंने तुम्हारे लिये यह भेजा है।" कह कर उसने साही का वह कॉटा उसके सामने जमीन पर रख दिया।

दूत चीते ने पूछा — "यह क्या है? यह तो बहुत लम्बा, सख्त और तेज़ है।"

छोटा हिरन बोला — "हॉ यह हमारे राजा की मूँछ का बाल है। उन्होंने यह बाल तुमको इसलिये दिया है ताकि तुम्हारे राजा को

यह बाल देख कर यह अन्दाज हो जाये कि हमारे राजा कितने बड़े हैं।"

दूत चीते ने वह बाल उठाया और तुरन्त ही अपने राजा के पास भाग गया। वह बाल उठाते ही उसके पंजे में चुभ गया और उससे खून निकलने लगा। यह देख कर दूत चीता डर गया।

वहॉ जा कर वह बोला — "राजा साहब, मैं बोर्नियो से आपके लिये उनके जानवरों के राजा की मूँछ का बाल ले कर आया हूँ। यह तो मुझे आपकी मूँछ के बाल से भी ज़्यादा लम्बा, सख्त और तेज़ दिखायी पड़ रहा है। इसने तो मेरे पंजे में भी खून निकाल दिया।

बोर्नियो के जानवरों का राजा तो लगता है कि बहुत ही बड़ा है और वह चीते खाता है। उसने कहलवाया है कि वह आपको और आपके परिवार को खाने के लिये आप सबका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा है।"

चीतों के राजा ने साही के उस कॉटे को देखा तो वह तो वाकई में बहुत लम्बा, सख्त और तेज़ दिखायी दे रहा था। उसको देख कर तो वह बहुत डर गया।

उसने सोचा "मैं तो बोर्नियो के जानवरों के राजा के बराबर बड़ा नहीं हूँ।"

फिर वह बोला — "अगर हम बोर्नियो गये तो वहॉ के जानवरों का राजा हम सबको खा जायेगा।" इसलिये उसने अपना बोर्नियो

जाने का विचार छोड़ दिया और अपना खाना कहीं और ढूँढने का फैसला किया।

इसी लिये दुनियॉ में बहुत सारी जगह तो चीते पाये जाते हैं पर बोर्नियो में नहीं।

4 गाने वाला काशीफल[7]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के ईरान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया अपने एक बड़े सफेद कुत्ते के साथ अकेली रहती थी। एक दिन उसने सोचा कि वह पहाड़ के ऊपर अपनी पोती[8] से मिलने जायेगी।

अगर वह अपने कुत्ते को अपने साथ ले जाती तो वह किसी मुसीबत में फॅस जाता इसलिये उसने उसे घर पर ही छोड़ दिया और अकेली ही उससे मिलने चल दी।

जाते समय उसने अपने कुत्ते से कहा — "तुम घर पर ही रहो और घर की देखभाल करो मैं ज़रा अपनी पोती से मिल कर आती हूॅ।" और यह कह कर वह पहाड़ों के रास्ते पर चली गयी।

---

[7] The Singing Pumpkin – a folktale from Iran, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=96
Picture permission from www.KelsyParks.com

[8] Translated for the word "Grand-daughter" – she may be a daughter's daughter or the son's daughter

जब वह पहाड़ के ऊपर जा रही थी तो रास्ते में एक गुफा पड़ी। उसने उस गुफा के अन्दर से एक अजीब सी आवाज सुनी।

वह आवाज सुन कर वह डर गयी और उसने जल्दी से उस गुफा के पास से गुजर जाना चाहा पर जैसे ही वह उस गुफा के पास से गुजरी तो उसमें से एक जिन्न निकल आया।

कुछ जिन्न तो दिखायी नहीं देते पर यह जिन्न तो बहुत ही बदसूरत था और ऐसा राक्षस दिखायी देता था जो आदमियों को खाता है। कुछ जिन्न तो अच्छे होते हैं पर यह जिन्न बहुत ही नीच था। कुछ जिन्न तो आपकी इच्छा पूरी करते हैं पर यह वैसा जिन्न नहीं था।

यह जिन्न तो बहुत ही नीच दिखायी दे रहा था। वह उस बुढ़िया की तरफ भयानक नजरों से देख रहा था और अपने होठ चाट रहा था।

कुछ जिन्न लोगों को छोड़ देते हैं और उनको अपने रास्ते जाने देते हैं पर यह जिन्न अपनी गुफा से बाहर निकल कर उस बुढ़िया के रास्ते में खड़ा हो गया और बोला — "मुझे भूख लगी है। मैं तुम्हें खाऊँगा।"

बुढ़िया बोली — "भूख तो मुझे भी लगी है, मैं भी भूखी हूँ। इसी लिये मैं अपनी पोती के घर जा रही हूँ क्योंकि वह केक और दूसरे खाने सब कुछ बहुत अच्छे बनाती है। तुम बताओ तुम क्या खाओगे?"

जिन्न अपनी बहुत ही भयानक आवाज में बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "हा हा हा। मैं तो तुम्हें खाऊॅगा ओ बुढ़िया।" बुढ़िया को लगा कि वह उससे मजाक नहीं कर रहा था।

बुढ़िया बोली — "पर मुझे खाने से तो तुम्हारा पेट भरेगा नहीं। तुम मुझे पहाड़ के ऊपर मेरी पोती के घर क्यों नहीं जाने देते? पहाड़ से नीचे ऊपर आने जाने का यही तो एक रास्ता है सो मैं यहीं से अपने घर वापस जाऊॅगी। जब तक मैं वहॉ से खा पी कर मोटी हो कर आती हूॅ तब तक तुम मेरा यहीं इन्तजार करो।"

जिन्न बोला — "यही ठीक रहेगा, मैं यही करूॅगा। तुम जल्दी ऊपर जाओ और खा पी कर मोटी हो कर आओ। तब तक मैं तुम्हारा यहीं इन्तजार करता हूॅ। जब तुम वापस आओगी तब मैं तुमको खा लूॅगा।"

बुढ़िया उस पहाड़ी सड़क पर ऊपर चढ़ती चली गयी और अपनी पोती के घर आ पहुॅची। उसकी पोती उसको देख कर इतनी खुश हुई कि उसने अपनी दादी को केक, कबाब, रोटी और बहुत सारे अच्छे अच्छे खाने खिलाये।

जब तक उस बुढ़िया ने पेट भर कर खाना खाया तब तक उसके गाल और पेट दोनों कुछ ज़्यादा ही गोल हो गये थे।

बुढ़िया बोली — "बेटी इतना अच्छा खाना खा कर अब मैं घर नहीं जाना चाहती पर मैं अपना बड़ा सफेद कुत्ता घर पर ही छोड़

आयी हूँ। उसको भी भूख लग रही होगी इसलिये मुझे घर तो जाना ही पड़ेगा।

यहाँ आते समय रास्ते में एक गुफा पड़ी थी। मैं घर जाते समय उस गुफा के पास से गुजरने में डरती हूँ क्योंकि उस गुफा में एक जिन्न रहता है। वह कोई अच्छा जिन्न नहीं है जो दूसरों की इच्छा पूरी करे। वह तो भूखा जिन्न है और मुझे खाना चाहता है।"

बुढ़िया की पोती बोली — "दादी, मेरे दिमाग में एक बात आयी है।"

कह कर वह अपने बागीचे में गयी और वहाँ से एक बहुत ही बड़ा काशीफल तोड़ लायी। उसने उस बड़े से काशीफल का ऊपरी हिस्सा काट दिया।

फिर उसने उसको खोखला किया और अपनी दादी से कहा — "तुम इसके अन्दर घुस जाओ दादी और फिर मैं इसका ऊपरी हिस्सा तुम्हारे ऊपर रख दूँगी। इस काशीफल को मैं लुढ़का दूँगी और इस तरह तुम इस काशीफल के अन्दर लुढ़कती हुई घर चली जाना।

वह जिन्न तुम्हें कभी नहीं पहचान सकेगा कि इस लुढ़कते हुए काशीफल के अन्दर तुम हो। और इसके अलावा जिन्नों को काशीफल वैसे अच्छे भी नहीं लगते।"

वह बुढ़िया उस काशीफल के अन्दर घुस गयी और उसकी पोती ने उस काशीफल का ऊपरी हिस्सा उसके ऊपर कस कर लगा

कर उस काशीफल को बन्द कर दिया। फिर उसने उस काशीफल को उस पहाड़ी रास्ते पर धीरे से लुढ़का दिया।

पहले तो वह काशीफल रास्ते पर धीरे धीरे लुढ़का तो बुढ़िया ने गाना गाया — "लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जिन्न वहीं अपनी गुफा के सामने बैठा उस बुढ़िया के लौटने का इन्तजार कर रहा था। बुढ़िया तो उसे दिखायी नहीं दी, हॉ एक गाता हुआ काशीफल रास्ते पर लुढ़कता हुआ जाता जरूर नजर आया।

पर जिन्न को तो काशीफल पसन्द नहीं था सो उसने उसे जाने दिया। वह तो वैसे भी उस बुढ़िया की तलाश में था काशीफल से उसे क्या लेना देना था।

तभी रास्ता ज़्यादा और और ज़्यादा ढालू हो गया और काशीफल और ज़्यादा तेज़ी से लुढ़कने लगा। काशीफल के तेज़ी से लुढ़कने के साथ साथ बुढ़िया का गाना भी और तेज़ और और ऊँचा होता गया।

"लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जिन्न लुढ़कते हुए काशीफल को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसने उसको गाते हुए भी सुना। फिर उसको लगा कि काशीफल तो गा नहीं सकते। ऐसा लगता है कि वह बुढ़िया ही मुझे बेवकूफ बना रही है।

वह जिन्न अपनी पूँछ पर बैठ गया और अपने दोनों नंगे पाँव दोनों तरफ फैला लिये और जब वह काशीफल लुढ़कता हुआ उसकी गुफा के पास तक आया तो उसने उसको अपने पाँवों से रोक लिया।

उसे रोक कर उसने पूछा — "तुम क्या हो?"

बुढ़िया बोली — "मैं गाने वाला काशीफल हूँ।"

जिन्न बोला — "नहीं तुम गाने वाला काशीफल नहीं हो। तुम तो वह बुढ़िया हो जिसको मैंने खाने का वायदा किया था।"

बुढ़िया फिर बोली — "नहीं, मैं गाने वाला काशीफल हूँ। मुझे नीचे ढकेल दो और मुझे नीचे जाने दो।"

जिन्न बोला — "काशीफल नहीं गा सकते। तुम जल्दी बाहर निकलो ताकि मैं तुम्हें खा लूँ।"

बुढ़िया बोली — "मैं बाहर नहीं निकल सकती।"

जिन्न बोला — "हाँ हाँ, तुम बाहर निकल सकती हो।"

बुढ़िया बोली — "नहीं, मैं जब तक बाहर नहीं निकल सकती जब तक तुम जादू के शब्द नहीं कहते।"

जिन्न बोला — "ठीक है। मेहरबानी कर के बाहर आ जाओ और धन्यवाद।"

बुढ़िया बोली — हॉ, ये तो बहुत ही अच्छे जादू के शब्द हैं पर मुझे बाहर निकालने से पहले तुमको अभी कुछ और जादू के शब्द कहने होंगे। तुमको कहना होगा – "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

जिन्न बोला — "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

बुढ़िया बोली — "तुमको ये शब्द ऊॅची आवाज में और जल्दी जल्दी बोलने होंगे।"

सो जिन्न ने उन शब्दों को पहले से ऊॅची आवाज में और और तेज़ी से कहा — "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।" पर काशीफल तो फिर भी नहीं खुला और बुढ़िया भी बाहर नहीं आयी।

जिन्न ने काशीफल को हिलाते हुए कहा — "ये जादू के शब्द तो काम नहीं कर रहे और मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।"

बुढ़िया बोली — "इन शब्दों को और ज़ोर से और और तेज़ी से कहो – "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

सो जिन्न ने फिर से उन शब्दों को और ज़ोर से और और तेज़ी से बोला। बुढ़िया बोली — "हॉ अब ठीक है। एक बार और इन शब्दों को ऊॅची आवाज़ में और तेज़ी से बोलो तो शायद मैं बाहर निकल पाऊॅगी।"

सो जिन्न फिर से चिल्लाया "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

तभी उसने एक बड़ा सफेद कुत्ता भाग कर आता हुआ सुना। उस कुत्ते के आने की आवाज सुन कर जिन्न वहॉ से दूर भाग गया।

कुत्ते ने उस काशीफल को एक हल्का सा धक्का दिया और वह काशीफल लुढ़कता हुआ उस बुढ़िया को उस काशीफल के अन्दर लिये हुए उसके घर तक ले गया।

वह बुढ़िया सारे रास्ते गाती रही — "लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जब वे घर पहुँचे तो बुढ़िया उस काशीफल में से सही सलामत बाहर निकल आयी। इस तरह से वह बुढ़िया उस जिन्न को चकमा दे कर अपने घर सही सलामत वापस आ गयी।

5 कहानियों की भेंटः बगदाद का खलीफा[9]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के ईराक देश में कही सुनी जाती है।

सैंकड़ों साल पहले की बात है कि एक बार ईराक देश के खलीफा[10] के महल में उसके घर में बेटा होने की खुशी में एक दावत हुई।

जैसा कि वहॉ का रिवाज था खलीफा के बच्चे की दावत में शामिल होने के लिये और उसको भेंट देने के लिये सारे देश से बहुत सारे बड़े बड़े और अमीर लोग आये।

हर आदमी मॅहगी से मॅहगी भेंट ले कर आया था पर एक संत मैहलैद अबी[11] खाली हाथ ही वहॉ चला आया था।

हर आदमी बच्चे को भेंट देने के लिये खलीफा के सामने से गुजरा। बच्चे के लिये बहुत सारे बढ़िया कपड़े, जवाहरात और सोना आया।

खलीफा ने हर आदमी की भेंट को मुस्कुरा कर लिया पर वे लोग जब वापस जा रहे थे तो उस संत को खाली हाथ देख कर मुॅह

[9] The Gift of Stories: Caliph of Baghdad – a folktale from Iraq, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=77
Retold and written by Mike Lockett

[10] King of Iraq was called Khalifa in those days.

[11] Mehelled Abi

बना रहे थे। वह संत लाइन के आखीर में बिना किसी भेंट के खड़ा हुआ था।

वे आपस में कानाफूसी कर रहे थे — "इसके पास तो देने के लिये कुछ है ही नहीं। यह नये शाहजादे को क्या देगा? और ऐसा कैसे होता है कि राजा के बेटे के जन्म की दावत में इस तरह से बिना कोई भेंट लिये चला आये?"

जब सारे लोगों ने अपनी अपनी भेंटें शाहज़ादे को दे दीं तो आखीर में उस संत की बारी आयी। कमरे में सन्नाटा छा गया क्योंकि सभी इस बात को सुनने के लिये उत्सुक थे कि वह संत खलीफा से क्या कहेगा।

वह संत बोला — "शाहजादे को लोगों ने बहुत सारे बढ़िया कपड़े, जवाहरात और सोना दिया है, और जैसे जैसे वह बड़े होंगे उनको और भी बहुत सारी कीमती भेंटें मिलेंगी पर मैं इनके लिये इन सबसे कीमती भेंट ले कर आया हूँ। मैं इनके लिये भेंट में कहानियाँ ले कर आया हूँ।"

यह सुनते ही कमरा ठहाकों से गूँज उठा। खलीफा ने सबको अपना हाथ उठा कर शान्त किया और संत को आगे कहने के लिये कहा।

सो संत आगे बोला — "जब आपका बेटा मेरे शब्द समझने के लायक हो जायेगा तो मैं रोज आपके महल में आऊँगा और उसको कहानियाँ सुनाऊँगा।

जो भी कहानियॉ मैं उसको सुनाऊॅगा, चाहे वे सच्ची हों या झूठी, वे उसको बड़े होने पर अक्लमन्द और न्यायप्रिय बनायेंगी। और जब वह दिन आयेगा जबकि ओ खलीफा, आप राज नहीं कर पायेंगे तो आपका बेटा आपके लोगों पर उनका सरदार बन कर राज करेगा। वह बहुत दयावान और न्यायप्रिय राजा होगा और सारा अरब देश उसके राज में खुशी महसूस करेगा।"

मैहलैद अबी ने अपनी बात रखी। जब शाहजादा बोलने और समझने लायक हो गया तो वह वहॉ रोज आता था और शाहजादे को पढ़ाता था। उस शाहजादे का नाम था हारूॅ अल रशीद[12]।

वह उस शाहज़ादे को दुनियॉ भर की कहानियॉ सुनाता था, सच्ची भी और झूठी भी। शाहजादे ने उस संत से अक्लमन्दों की अक्लमन्दी सीखी और बेवकूफों की बेवकूफी से अक्लमन्दी सीखी। उसने उससे दुनियॉ के सारे धर्मों के बारे में जानकारी हासिल की।

जब उसके खलीफा बन कर राज करने का समय आया तो उसने अपने राज्य की हदों को पश्चिम में बाइज़ैन्टाइन राज्य से ले कर पूर्व में चीन[13] तक बढ़ा लिया था। उसने इतनी अक्लमन्दी से राज किया जितनी अक्लमन्दी से बहुत कम लोग राज कर पाते हैं।

[12] Harun Al Rasheed – He lived there between 786-808 AD. It is believed that these and other tales which were very common in those days were told by Shaharzaad, the Prime Minister's daughter, after her marriage to the then King Shaharyaar. She told 1001 stories to him and they became famous as "Arabian Nights".

[13] From Byzantine in West to China in East

हारूँ अल रशीद ईराक के एक बहुत ही न्यायप्रिय राजा के नाम से मशहूर हुए।

कहते हैं कि अरेबियन नाइट्स या **1001** अरेबियन नाइट्स[14] की कहानियॉ इस राजा के राज में लोक कथाओं के रूप में कही सुनी जाती थीं।

भगवान करे आपके बच्चे भी हारूँ अल रशीद की तरह से कहानियॉ सुन सुन कर लायक बनें।[15] हारूँ अल रशीद की एक कहानी आगे दी जा रही है।

ये कहानियों की किताबें भी इसी लिये छापी जा रही हैं ताकि आप इन्हें अपने बच्चों को, साथियों को, छोटे भाई बहिनों को सुनायें और उनको अक्लमन्द बनाने में मदद करें।

[14] 1001 Stories of Arabian Nights may be read at :- http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

[15] There is one more story similar to this story. Panchtantra stories of India are also like that. A King named Amarshakti gave his three foolish sons to a learned Braahman named Vishnu Sharma to teach them in six months so he taught them through stories which he composed especially for them. You may read some of them at :- http://sushmajee.com/shishusansar/stories-panchtantra/index-panchtantra.htm

6 अली कोजिया और बगदाद का सौदागर[16]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के ईराक देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह हजार साल से भी पहले की बात है कि खलीफा हारूँ अल रशीद के राज्य काल में बगदाद में एक सौदागर रहता था। उसका नाम अली कोजिया था। वह अपने काम के सिलसिले में बहुत बहुत दूर जाया करता था।

इस सिलसिले में उसने अपने घर की सारी चीज़ें बेच दी थीं। यहाँ तक कि अपना घर भी किराये पर दे दिया था।

अब उसके पास बस एक ही काम करने को रह गया था वह यह कि वह अपने खजाने को सुरक्षित रखने के लिये कोई जगह ढूँढे। उसका अपना खजाना था एक हजार सोने के सिक्के।

उसने कुछ सोच कर उनको एक बहुत बड़े बर्तन में रखा और उसको औलिव[17] के फलों से ढक दिया। फिर उसने उस बर्तन का मुँह बन्द कर दिया।

उसका एक बहुत अच्छा दोस्त था। वह भी सौदागर था।

---

[16] Ali Kogia and the Merchant of Baghdad – A folktale from Iraq, Asia. Translated from the Web Site : https://www.storiestogrowby.org/story/ali-cogia-the-merchant-of-baghdad/
[My Note: This tale has been taken from Arabian Nights. To read similar tales of Justice read the book "Nyaya Ki Kahaniyan" written by Sushma Gupta in Hindi language.]

[17] Olive is a kind of fruit. In Hindi it is called Jaitoon. See its picture above.

वह उस बर्तन को अपने उस दोस्त के पास ले गया और उससे कहा — "तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं बहुत जल्दी ही अपनी अगली यात्रा पर जाने वाला हूँ सो तुम मेरा यह औलिव भरा बर्तन रख लो और मैं इसको वहाँ से आने पर ले लूँगा।"

उसके दोस्त सौदागर ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। लो तुम यह मेरे भंडारघर की चाभी लो और उसमें जहाँ तुम्हारी मरजी हो वहाँ इस बर्तन को रख दो।

मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि जब तुम लौटोगे तो तुमको अपना बर्तन वहीं मिलेगा जहाँ तुम इसको रख कर जाओगे।"

अली कोजिया ने अपने दोस्त से चाभी ली, उसके भंडारघर में अपना बर्तन रखा और उसका ताला लगा कर चाभी उसको वापस दे दी। फिर वह अपनी यात्रा पर चला गया।

उसको वहाँ कुछ ज़्यादा समय लग गया। वह अपनी यात्रा से बगदाद सात साल तक वापस नहीं लौट पाया। इस बीच उसके दोस्त सौदागर को न तो उसका ही कोई ख्याल आया और न ही उसके बर्तन का कोई ध्यान आया।

एक दिन यह दोस्त सौदागर अपने परिवार के साथ खाना खा रहा था कि औलिव के बारे में बात छिड़ गयी तो सौदागर की पत्नी बोली कि उसने बहुत दिनों से कोई औलिव ही नहीं खाये।

सौदागर बोला — "अब जब तुमने औलिव की बात की तो मुझे याद आया कि मेरा एक दोस्त अली कोजिया सात साल पहले

औलिव भरा हुआ एक बर्तन मेरे भंडारघर में रख गया था और कहा था कि वह अपनी यात्रा से लौटने पर ले लेगा।

मेरे उस दोस्त का क्या हुआ यह तो मुझे नहीं पता पर जब उसका कारवॉ वापस आया था तो उसने मुझे बताया कि वह मिश्र चला गया। मुझे विश्वास है कि अब तक तो वह मर भी गया होगा।

अब क्योंकि वह इतने सालों से लौटा नहीं है तो हम लोग उसके वे औलिव खा सकते हैं। मैं वे औलिव निकाल कर लाता हूँ और फिर हम वे औलिव खा सकते हैं।

पत्नी बोली — "नहीं स्वामी नहीं आप ऐसा काम न करें। आपको तो मालूम ही है कि किसी की चीज़ की देखभाल करना और उसके विश्वास को बनाये रखने से बड़ा पुन्य का काम कोई नहीं है।

इसके अलावा यह आप कह भी कैसे सकते हैं कि इतने साल रखे रहने के बाद भी वे औलिव अभी तक ठीक रखे होंगे। तीसरे अगर अली कोजिया वापस आ जाता है और वह देखता है कि उसका बर्तन उसके पीछे खोल लिया गया है तो वह आपके बारे में

क्या सोचेगा। इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप उसका बर्तन ऐसा का ऐसा ही रखा रहने दें।"

उस समय तो सौदागर अपनी पत्नी की बात मान कर औलिव के बर्तन को देखना टाल गया पर खाना खाने के बाद वह रुक न सका। वह अपने भंडारघर में गया उसके रखे बर्तन को ढूँढा और उसे खोल लिया। उसने देखा कि उसके औलिव में तो फंगस लगी हुई है।

उसने यह देखने के लिये कि उस बर्तन के सारे औलिव में फंगस लगी है या नहीं उसने उस बर्तन को पलट दिया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उन औलिव के नीचे तो सब सोने के सिक्के भरे पड़े थे। औलिव तो केवल ऊपर ही ऊपर थे।

उसने तुरन्त ही वे औलिव उस बर्तन में भर दिये। उसका ढक्कन ढका और अपनी पत्नी के पास वापस आ कर बोला — "प्रिये तुम ठीक कहती थीं उन सारे औलिव में तो फंगस लगी पड़ी है।

सो मैंने उस बर्तन को वैसे ही बन्द कर के रख दिया जैसे अली कोजिया उसे छोड़ गया था। अगर वह लौट कर आया तो उसको पता भी नहीं चलेगा कि उसको छुआ भी गया है।"

उसके बाद तो वह सौदागर आगे आने वाले दिनों में इसी बात के बारे में सोचता रहा कि वह अली कोजिया के सोने को कैसे

इस्तेमाल करे। और साथ में यह भी कि अगर उसका दोस्त वापस आ जाये और अपना बर्तन माँगे तो उसको पता भी न चले।

अगले दिन वह सौदागर बाजार गया और बाजार से कुछ ताजे औलिव खरीद लाया। फिर वह अपने भंडारघर में गया और अली कोजिया के बर्तन में से फंगस लगे औलिव और सोने के सिक्के दोनों निकाल लिये।

उसके बाद उसने उस बर्तन को पूरा का पूरा नये लाये हुए औलिव से भर दिया। उसने उसको उसी तरह बन्द कर दिया जैसे उसे अली कोजिया ने किया था और उसको उसी जगह रख दिया जहाँ अली कोजिया उसको रख कर गया था।

इत्तफाक से करीब एक महीने बाद ही अली कोजिया बगदाद लौट आया तो अगले ही दिन वह अपने दोस्त के पास गया। दोस्त ने उसके इतने दिनों बाद आने की बहुत खुशी जाहिर की।

आपस में एक दूसरे का हाल पूछने के बाद अली कोजिया ने अपना औलिव का बर्तन वापस माँगा और उसको अपना बर्तन सुरक्षित रूप से रखने के लिये धन्यवाद दिया।

उसका दोस्त सौदागर बोला — "तुम्हारे बर्तन ने तो मुझे कुछ भी परेशान नहीं किया। यह लो भंडारघर की चाभी। तुम्हारा वह बर्तन वहीं रखा है जहाँ तुम उसको रख गये थे। तुम जा कर वहाँ से उसे निकाल सकते हो।"

अली कोजिया ने उससे भंडारघर की चाभी ली, उसके भंडारघर में से अपना बर्तन निकाला और उसकी मेहरबानी के लिये एक बार फिर उसको धन्यवाद दे कर अपना बर्तन ले कर घर चला गया।

घर जा कर उसने अपना वह बर्तन खोला और उसमें अपना सोना देखने के लिये नीचे तक हाथ डाला तो यह देख कर तो वह भौंचक्का रह गया कि उसमें तो एक भी सोने का सिक्का नहीं था।

पहले तो उसको लगा कि शायद उसको कोई गलती लग गयी है फिर सच जानने के लिये उसने उस बर्तन को पलट दिया। पर उसमें अभी भी सोने का एक भी सिक्का नहीं था। केवल औलिव ही औलिव भरे थे।

यह देख कर वह तो बस मूर्ति बना खड़ा रह गया उसके मुँह से केवल यही निकला "क्या यह मुमकिन है?"

अली कोजिया तुरन्त ही अपने दोस्त के पास वापस गया। वह बोला — "दोस्त मुझे तुरन्त ही वापस आते देख कर तुम आश्चर्य में न पड़ना। मुझे मालूम है कि यह बर्तन वही है जिसे मैं तुम्हारे भंडारघर में रख गया था पर औलिव के साथ साथ उसमें एक हजार सोने के सिक्के भी थे। वे मुझे इसमें नहीं मिले।

हो सकता है कि तुमने उनको अपने बिजनेस में इस्तेमाल कर लिया हो। और अगर ऐसा है तो कोई बात नहीं जब तुमको आसानी हो तब तुम मुझे उनको लौटा देना।

पर अभी कम से कम तुम यह स्वीकार कर लो कि तुमने वह मुझसे कर्जा लिया है। जहॉ तक उनको लौटाने की बात है जब भी तुम्हारे पास हों तब तुम उनको लौटा देना।"

सौदागर को यह उम्मीद थी कि वह जरूर ही वापस आयेगा सो वह उसके जवाब के लिये तैयार था।

वह बोला — "दोस्त कोजिया, जब तुम अपना यह बर्तन मेरे पास लाये थे तो क्या मैंने उसे छुआ था? क्या मैंने तुमको अपने भंडारघर की चाभी नहीं दी थी? क्या तुम उसको अपने आप ही वहॉ नहीं ले गये थे?

क्या तुमने उसको वहीं नहीं पाया जहॉ तुमने उसे रखा था? क्या वह वैसे ही बन्द नहीं था जैसे तुमने उसे बन्द किया था? और अब जब तुम वापस आ गये हो तो तुम मुझसे एक हजार सोने के सिक्के मॉग रहे हो।

क्या तुमने मुझे पहले यह बताया था कि इस बर्तन में औलिव के साथ साथ एक हजार सोने के सिक्के भी रखे हुए हैं? अच्छा है कि तुम मुझसे केवल एक हजार सोने के सिक्के ही मॉग रहे हो कोई हीरे या मोती नहीं मॉग रहे।

मेरे घर में इस तरीके से आना और इस तरह से मुझ पर इलजाम लगाना, मेरी बेइज़्ज़ती करना और मेरा नाम बदनाम करना तो बड़ा आसान काम है। चले जाओ यहॉ से।"

उसने यह सब इतनी ज़ोर से कहा कि उसके भंडारघर में काम करने वाले और पास की दूकानों में काम करने वाले सभी वहॉ इकट्ठे हो गये कि मामला क्या है।

अली कोजिया ने उस सौदागर के अपने साथ किये गये अन्याय की कहानी सबको सुनायी पर वह सौदागर सबको मना करता रहा कि उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है।

अली कोजिया तुरन्त ही अपने दोस्त को कचहरी ले गया। वहॉ जा कर उसने जज से सौदागर की शिकायत की कि उसने उसके एक हजार सोने के सिक्के चुरा लिये हैं।

जज ने पूछा कि क्या उसका कोई गवाह था जिसके सामने उसने वे सोने के सिक्के आपने दोस्त के पास रखे थे।

तो उसने जवाब दिया कि उसे इस बात का कोई ख्याल ही नहीं आया क्योंकि जिस आदमी को उसने अपना बर्तन रखने के लिये दिया था वह उसका दोस्त था और वह उस पर विश्वास करता था और हमेशा उसको एक ईमानदार आदमी समझता था।

सौदागर ने भी अपनी सफाई में जज से वही कहा जो वह अली कोजिया से पहले कह कर चुका था। साथ में उसने यह भी कहा कि हालॉकि उसने अली कोजिया का बर्तन अपने भंडारघर में रखा जरूर था पर उसने उसके साथ कोई छेड़खानी नहीं की।

सौदागर ने इस बात की कसम भी खायी कि जहॉ तक उसको पता था उस बर्तन में केवल औलिव थे। और एक बार फिर उसने

कहा कि उसको इस बेकार के इलजाम के लिये कचहरी लाने की कोई जरूरत ही नहीं थी।

उसने इस बात की भी कसम खायी कि उस बर्तन में वह पैसा था ही नहीं जिसको लेने का इलजाम उस पर लगाया जा रहा था। उसको तो पता भी नहीं था कि उसमें यह पैसा रखा हुआ था।

जज ने उसकी कसम स्वीकार कर ली और उसको कसम खिलवा कर किसी सबूत के न होने की वजह से उसको छोड़ दिया।

अली कोजिया इस बात को ले कर बहुत परेशान था कि उसको अपने इतने सारे पैसे का घाटा सहना पड़ रहा था। वह अपने घर लौटा और उसने खलीफा को इस बात की प्रार्थना करने का प्लान बनाया। उसने वह प्रार्थना लिखी और खलीफा के महल के दफ्तर में दे आया।

खलीफा के दफ्तर ने वह प्रार्थना खलीफा को दे दी। खलीफा ने अपने दफ्तर से कहा कि वह अली कोजिया से कह दे कि उसकी प्रार्थना सुनने के लिये उसको अगले दिन एक निश्चित समय पर बुलाया जायेगा।

उसने अपने दफ्तर से यह भी कहा कि उसके दोस्त सौदागर को भी इस बात की सूचना दे दी जाये। उसके दफ्तर ने दोनों को यह सूचना भिजवा दी।

खलीफा अक्सर यह किया करता था कि वह रात को वेश बदल कर अपने वजीर के साथ शहर में घूमा करते थे।

उस दिन भी वह अपने वजीर के साथ वेश बदल कर शहर का चक्कर काटने गया।

एक सड़क से गुजरते हुए उसको उस सड़क पर कुछ शोर सुनायी दिया। शोर सुन कर वह उस तरफ गया जिधर से वह शोर आ रहा था तो वह एक दरवाजे पर आ पहुँचा। वहाँ **10–12** बच्चे चाँदनी में खेल रहे थे।

खलीफा ने सुना एक बच्चा कह रहा था — "आओ कचहरी का खेल खेलते हैं।"

क्योंकि अली कोजिया और उसके दोस्त सौदागर की बात शहर में चारों तरफ फैल चुकी थी सो बच्चों ने वही खेल खेलने का तय किया। उन्होंने तुरन्त ही सबको उनके उनके पार्ट करने के लिये दे दिये और खेल शुरू हो गया।

जो बच्चा जज बना था उसने अली कोजिया बने बच्चे से अपनी बात कहने लिये कहा। अली कोजिया बने बच्चे ने जज को नीचे तक सिर झुकाया और अपनी सारी कहानी सुनायी ताकि वह इतना सारा पैसा न खो सके।

उसकी बात सुनने के बाद जज ने सौदागर से पूछा कि वह उसका पैसा वापस क्यों नहीं दे रहा। सौदागर बने बच्चे ने वही सब उसको कह दिया जो असली सौदागर ने असली अली कोजिया से कहा था। फिर उसने कसम भी खायी कि वह जो कुछ कह रहा था सच कह रहा था।

जज बना बच्चा बोला — "इतनी जल्दी नहीं अभी रुको। इससे पहले कि तुम कसम खाओ मैं वह वह औलिव वाला बर्तन देखना चाहूँगा।"

अली कोजिया बना बच्चा उस जज के सामने फिर से काफी नीचे तक झुका और वहाँ से चला गया। जल्दी ही वह एक बर्तन जज के सामने ले आया। जज बने बच्चे ने सौदागर बने बच्चे से पूछा कि क्या वह वही बर्तन था जो अली कोजिया उसके भंडारघर में रख कर गया था।

उसने कहा — "जी हाँ।"

फिर जज ने अली कोजिया से कहा कि वह उस बर्तन का ढकना हटाये। जज ने उसके अन्दर देखा तो बोला — "ये तो बढ़िया औलिव हैं। ज़रा मैं भी तो चख कर देखूँ।"

उसने उनको खाने का बहाना किया और कहा — "ये तो बहुत ही बढ़िया हैं पर मुझे लगता नहीं कि औलिव सात साल तक इतने बढ़िया रखे रह सकते हैं।

इसलिये हमको औलिव के कुछ सौदागरों को बुलवाना चाहिये और उनकी सलाह लेनी चाहिये कि वे क्या कहते हैं।"

दो लड़के औलिव के सौदागर बन कर आये। जज ने उनसे पूछा — "औलिव कितने दिनों तक खाने लायक रखे रह सकते हैं?"

दोनों बच्चों ने जवाब दिया — "आप कितने भी अच्छे तरीके से इनको रखें ये तीसरे साल में खराब हो जाते हैं। उसके बाद न तो इनमें स्वाद रहता है और न रंग।"

जज बोला — "इस बर्तन के अन्दर देखो और मुझे देख कर बताओ कि ये औलिव इस बर्तन में कब रखे गये थे।"

दोनों सौदागर बच्चों ने उन औलिव को देखने का बहाना किया और बोले — "जनाब हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ये औलिव इसी साल के हैं इससे ज़्यादा पुराने नहीं हैं। और हम बगदाद के किसी भी औलिव के सौदागर के सामने भी यही कहते रहेंगे ।"

जज ने सौदागर दोस्त से कहा — "तुम तो बहुत ही झूठे हो। तुम कहते हो कि तुमने तो यह बर्तन सात साल से छुआ ही नहीं और इसके औलिव तो इसी साल के हैं। तुमको तो सजा मिलनी चाहिये।"

उसके बाद बच्चों ने खुशी से तालियॉ बजायीं। सौदागर को अपराधी ठहराया गया और उसको जेल की तरफ ले जा कर उस नाटक का अन्त किया।

खलीफा ने उस जज बने बच्चे की कितनी तारीफ की इसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उसने अपने वजीर से कहा इस घर को ठीक से देख लो और कल इस बच्चे को मेरे दरबार में ले कर आना वह बच्चा मेरे साथ बैठ कर इस मामले को खुद सुलझायेगा।

उसने आगे कहा — "और हॉ असली अली कोजिया को भी उसके औलिव के बर्तन के साथ बुलाना मत भूलना।"

अगले दिन अली कोजिया और सौदागर महल में एक के बाद एक उस लड़के के सामने हाजिर हुए।

यह लड़का वही लड़का था जिसको खलीफा ने पिछली रात को जज बना देखा था और अपने वजीर से इस मामले को सिलटाने के लिये अपने महल में बुला भेजा था। इस समय वह खलीफा के साथ उस मुकदमे का फैसला करने के लिये उसके सिंहासन पर बैठा हुआ था।

जब सौदागर ने पहले की तरह से यह कहा कि वह कसम खाने को तैयार है तो बच्चे ने कहा — "कसम खाने के लिये अभी जल्दी है पहले हम औलिव का बर्तन देख लें बाद में तुम कसम खाना। अली कोजिया तुम अपना वह बर्तन दिखाओ जो तुम इस सौदागर के घर रख कर गये थे।"

अली कोजिया ने अपना वह बर्तन खलीफा के पैरों में रख दिया। बच्चे ने सौदागर से पूछा कि क्या यह वही बर्तन था जो उसके भंडारघर में सात साल रखा रहा।

सौदागर ने कहा "जी हॉ। यह वही बर्तन है।"

बच्चे ने वह बर्तन खोला। खलीफा ने उन औलिव को देखा और उनमें से एक औलिव उठा कर खुद चखा और दूसरा बच्चे को दिया।

उसके बाद औलिव के दो सौदागर बुलवाये गये। उन्होंने भी औलिव को देखा और जॉच कर बोले कि वे औलिव बढ़िया थे और उसी साल के थे। वे किसी भी हाल में सात साल पुराने नहीं हो सकते थे।

बच्चे ने उनको बताया कि अली कोजिया का कहना था कि वह वह औलिव का बर्तन उस सौदागर के पास सात साल पहले रख कर गया था। इसका मतलब यह है कि वह बर्तन इस बीच छेड़ा गया है।

सौदागर ने देखा कि औलिव के सौदागरों का यह फैसला तो उसको सजा करवा देगा सो उसने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और बता दिया कि उसने वे एक हजार सोने के सिक्के कहॉ छिपाये थे। वे सोने के सिक्के तुरन्त ही वहॉ से मॅगवा कर अली कोजिया को दे दिये गये।

खलीफा ने गुस्सा हो कर सौदागर दोस्त से कहा — "यह अच्छा हुआ कि तुमने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और सोना वापस कर दिया नहीं तो तुमको **10** साल की जेल के साथ साथ **100** कोड़े भी पड़ते।"

फिर खलीफा ने उस पुराने जज से जिसने कसम खिलवा कर सौदागर को छोड़ दिया था कहा कि वह इस बच्चे से कुछ सबक सीखे ताकि भविष्य में वह अपना काम ठीक से कर सके।

उसके बाद खलीफा ने उस बच्चे को गले लगाया और उसको 100 सोने के सिक्के दे कर उसके घर भेज दिया।

7 ह्वान और डॉग[18]

बहुत समय पुरानी बात है कि कोरिया देश में दो भाई रहते थे। उनमें से एक बहुत अमीर था, उसका नाम था डॉग। जबकि दूसरा भाई बहुत गरीब था, उसका नाम था ह्वान।

डॉग के कोई बच्चा नहीं था जबकि ह्वान के कई बच्चे थे जिनको वह ठीक से खाना भी नहीं खिला पाता था। पर गरीब होने पर भी वह और उसकी पत्नी दोनों ही बहुत ही दयालु थे। यहॉ तक कि उसके बच्चे भी हर एक की भरसक सहायता करते थे।

डॉग का एक बहुत बड़ा शानदार मकान था जिसमें एक चौकोर ऑगन था, कई अस्तबल थे, गायों के रखने के कई घर थे और उसके घर के चारों ओर एक ऊॅची दीवार भी थी।

जबकि उसका छोटा भाई ह्वान एक छोटी सी गोल झोंपड़ी में रहता था जिसमें नारियल की सींकों की छत थी और जाड़े में ठंड से बचने का भी कोई साधन नहीं था। उसमें केवल एक ही कमरा था जहॉ ह्वान अगर पैर पसार कर सोता तो उसके पैर दरवाजे से बाहर निकल जाते। मगर उसकी पत्नी और बच्चे भूखे रहने पर भी सन्तुष्ट रहते।

[18] Hwan and Dang – a folktale from Korea, Asia.

हालॉकि ह्वान हर वह काम करता जो उसे मिल जाता और उसकी पत्नी सिलाई करती और जूते बनाती फिर भी कई बार ऐसा होता कि दोनों को कोई काम नहीं मिलता और वे ज़्यादा जूते बनाने के लिये पैसे नहीं जोड़ पाते। बच्चे भूखे रोते और मॉ का दिल दुखता।

एक दिन ह्वान काम की तलाश में बाहर गया हुआ था और घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था तो मॉ ने सोचा कि क्यों न ह्वान के अमीर भाई डॉग से कुछ चावल उधार ले लिया जाये। सो उसने अपने सबसे बड़े बेटे को उसके ताऊ के घर भेजा।

जब वह ताऊ के बड़े ऑगन में था तो उसने गाय के घर में अन्दर झॉका। उसमें उनकी खूब मोटी ताजी गायें बॅधी थीं। सूअर भी खूब स्वस्थ थे और स्वस्थ मुर्गे मुर्गियॉ दाना चुगते हुए इधर से उधर घूम रहे थे।

कुछ कुत्तों की निगाह उस बेचारे गरीब लड़के पर गयी तो वे भौंकते हुए उसकी ओर दौड़े। उन्होंने उसके कपड़े फाड़ दिये तो वह उनसे बहुत डर गया।

पर फिर वह हिम्मत कर के उनसे पुचकार कर बोला तो उन्होंने भौंकना बन्द कर दिया यहॉ तक कि फिर एक कुत्ते ने उसके हाथ भी चाटे जैसे वह अपने साथियों की करतूत पर शर्मिन्दा हो।

इस शोर को सुन कर अन्दर से कई नौकर चाकर आ गये और उन्होंने उस लड़के से वहॉ से भाग जाने को कहा तो वह लड़का

बोला — "मैं तुम्हारे मालिक का भतीजा हूँ, मुझे अन्दर जाने दो।" उन्होंने उसे इस बात पर तीखी नजरों से देखा पर फिर उसको उसके ताऊ के पास ले गये। उसके ताऊ बरामदे में बैठे लम्बा पाइप पी रहे थे।

डॉग ने पूछा — "तुम कौन हो?"

लड़के ने उनको इज़्ज़त से झुक कर जवाब दिया — "मैं आपका भतीजा हूँ। मुझे यहाँ मेरी माँ ने भेजा है। हमारे घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है और हम लोग तीन दिन से भूखे हैं।

पिता जी काम की खोज में बाहर गये हैं। अगर आप हमें थोड़ा सा चावल उधार दे देते तो... । हम आपको आपका चावल बाद में वापस कर देंगे।"

डॉग बड़ा पत्थर दिल था। पहले तो वह बैठा बैठा पाइप पीता रहा फिर कुछ देर बाद बोला — "मेरा चावल तो ताले में बन्द है और मेरा यह हुक्म है कि मेरे हुक्म के बिना भंडार न खोले जायें।

आटे के भंडार में भी ताला लगा है। अगर मैं तुम्हें घर में से कुछ दूँगा तो मेरे कुत्ते तुमसे उसे छीन लेंगे। इसलिये मैं तुम्हें कुछ दे ही नहीं सकता। तुम यहाँ से चले जाओ।"

लड़का बेचारा अपने घर वापस लौट गया जहाँ उसकी माँ अपने छोटे छोटे रोते हुए बच्चों को चुप करा रही थी। गरीब औरत बेचारी क्या करे। लड़का खाली हाथ वापस लौट आया था।

उसको अपने उन जूतों का ख्याल आया जो उसने ज़्यादा बार नहीं पहने थे। सो उसने उन जूतों को ले कर अपने लड़के को बाजार भेजा। किसी तरह वह उन जूतों को बेच सका जिससे उसने उस दिन के लिये कुछ चावल, मुट्ठी भर दाल और कुछ तरकारी खरीदी।

अगले दिन ह्वान पहाड़ों से इकट्ठी की हुई लकड़ी ले कर घर लौटा। इसके बाद वे लोग जाड़े भर बस थोड़े बहुत खाने पर ही ज़िन्दा रहे।

वसन्त आने पर दक्षिण दिशा से चिड़ियों के झुंड वापस आने लगे। वे सभी ह्वान की झोंपड़ी के पास रहना चाहते थे। कुछ चिड़ियों ने तो उसकी झोंपड़ी के अन्दर ही घोंसला बना लिया था।

ह्वान ने उन्हें देखा तो पत्नी से बोला — "मुझे डर लगता है। इन चिड़ियों ने यहाँ अपना घर बना रखा है। हमारी झोंपड़ी इतनी कमजोर है कि हवा के एक ही झोंके से गिर सकती है। फिर बेचारी ये चिड़ियाँ क्या करेंगी।"

कुछ चिड़ियों ने झोंपड़ी के पीछे की झाड़ियों में अपना घोंसला बना रखा था। बेचारे बच्चे और ह्वान उन घोंसलों को कभी कभी जा कर देख आते थे।

जब अंडों में से बच्चे निकल आये तो ह्वान के बच्चे भी अपने खाने में से ज़रा सा खाना उनके घोंसलों में रख आते। धीरे धीरे वे चिड़िया के बच्चे उनके पालतू से हो गये।

एक दिन वे चिड़ियों के बच्चे उड़ना सीख रहे थे कि उनमें से एक बच्चा ह्वान की झोंपड़ी के ऊपर बने घोंसलों के पास आ बैठा।

सबसे बड़े लड़के ने देखा कि एक सॉप उसी बच्चे के पास से रेंग रहा था। चिड़िया के बच्चे ने भी उसे देखा और उससे बच कर भागने की कोशिश में उड़ा लेकिन उड़ नहीं पाया और नीचे गिर गया।

गिरते समय उसके दोनों पैर एक पुरानी डाली में उलझ गये। सॉप उसकी ओर अभी भी बढ़ रहा था।

वह लड़का उसकी कोई सहायता नहीं कर पा रहा था क्योंकि वह सॉप बहुत ऊॅचाई पर था और वह अभी बहुत छोटा था।

उसने अपने पिता को पुकारा। उसका पिता तुरन्त ही वहॉ आ गया और आ कर उस चिड़िया के बच्चे को बचा लिया। लेकिन बेचारे चिड़िया के बच्चे के पैरों को काफी चोट आ गयी थी। अपनी पत्नी की सहायता से ह्वान ने उसके पैरों में मरहम लगाया और उसको एक गर्म जगह पर बिठा दिया।

धीरे धीरे उस बच्चे की चोट ठीक होने लगी। एक दो दिन में ही वह चिड़िया अपना खाना फुदक फुदक कर खाने लगी और दो चार दिन में तो वह अपने साथियों के साथ उड़ने भी लगी।

फिर पतझड़ आया और अब उसके बाद जाड़ा आने वाला था। एक शाम को ह्वान और उसका परिवार अपनी झोंपड़ी के

बाहर बैठा था कि उन्होंने एक टेढ़ी टॉग की चिड़िया कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी गाती देखी।

एक बच्चा बोला — "ऐसा लगता है कि वह हमें धन्यवाद दे रही है और हमसे विदा ले रही है क्योंकि अब सब चिड़ियॉ ठंड की वजह से दक्षिण दिशा को जा रही हैं।"

यह उनके लिये ठीक भी था क्योंकि वे अब उस जगह जा रहीं थीं जहॉ कभी कोहरा नहीं पड़ता और जहॉ चिड़ियों के राजा का दरबार लगता था। वहॉ वह उन सबका स्वागत करेगा और उनकी बहादुरी की कहानियॉ सुनेगा।

जब चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को देखा जिसकी टॉगें टूटी हुई थीं तो उसने उससे पूछा कि उसे क्या हुआ था।

चिड़िया ने उसको अपना पूरा हाल बताया किस तरह वह एक गरीब परिवार की वजह से सॉप की पकड़ में आते आते बची। उसी परिवार ने उसकी देखभाल की और उसी ने उसे खाना खिलाया।

चिड़ियों का राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "अगले वसन्त में वापस जाते समय तुम फिर मेरे पास आना मैं उस भले परिवार के लिये तुम्हें कुछ दूँगा।"

फिर वसन्त आया और सब चिड़ियॉ जाने के लिये तैयार हुई तो चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को बुलाया और उसे एक बीज दे कर कहा — "यह बीज उस भले परिवार को दे देना।"

बेचारे ह्वान और उसके परिवार के लिये यह ठंड बडी भयानक थी। फिर एक दिन वसन्त में उसके सबसे छोटे बच्चे ने देखा कि एक टूटी टॉग वाली चिड़िया उनके कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी हुई है मगर आज वह गाना नहीं गा रही है।

बच्चे ने घर के और लोगों को बुला कर उस चिड़िया को उनको दिखाया तो उन्होंने देखा कि उस चिड़िया की चोंच में एक दाना दबा है।

जब चिड़िया ने देखा कि उस परिवार के लोग उसे देख रहे हैं तो उसने वह बीज नीचे गिरा दिया और गाना शुरू कर दिया मानो वह कुछ कहना चाह रही हो। फिर वह उड़ गयी।

ह्वान देखने गया कि चिड़िया ने क्या गिराया तो उसने देखा कि वह एक तरबूज के बीज जितना बड़ा एक बीज था। उसके एक तरफ कोरियन भाषा में लिखा था "बड़ा गूदेदार फल" और दूसरी तरफ बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखा था "मुझे मुलायम जमीन में बो दो और खूब सींचो"।

ह्वान ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस पर लिखा था। वह जानता था कि उस गूदेदार फल की बेल खूब बड़ी होती है इसलिये उसने वह बीज अपनी झोंपड़ी के पास ही बो दिया। चार दिन बाद ही उसमें से दो छोटी छोटी पत्तियॉ निकल आयीं।

पूरा परिवार उसको देखने के लिये बाहर आता था कि वह बेल कितनी जल्दी बढ़ती है। पर वह तो वाकई जल्दी जल्दी बढ़ रही थी। जल्दी ही उस फल की बेल उसकी झोंपड़ी पर फैल गयी।

कुछ दिनों बाद वह बेल फूलने लगी और फिर बहुत जल्दी ही उसमें तीन फल लगे। वे फल भी बहुत जल्दी ही बढ़ गये। अब ह्वान उनको काटने की सोच रहा था क्योंकि वे फल तो कच्चे भी बहुत स्वाद होते थे।

परन्तु उसकी पत्नी ने कहा — "ज़रा पक जाने तक इन्तजार करो। कोहरे से जब उनका छिलका थोड़ा सख्त हो जायेगा तब उसे काटेंगे। उसके अन्दर का गूदा हम लोग खा लेंगे और उसके खोल के प्याले बना लेंगे।"

ह्वान को अपनी पत्नी की सलाह अच्छी लगी सो उसने कुछ दिन और इन्तजार किया। कुछ दिन में वे फल पक गये और बेल में कुछ डंठलों के सिवा और कुछ भी नहीं बचा। तीनों बड़े फल ह्वान की झोंपड़ी की छत पर रखे थे। वह उन्हें तोड़ कर नीचे ले आया।

क्योंकि उन फलों का छिलका बहुत सख्त था इसलिये उन फलों को काटने के लिये उसको एक आरी लानी पड़ी। उसने पहला फल काटा तो वह बेहोश होने से बचा क्योंकि उसमें दो सुन्दर लड़के थे जो मेज पर बैठे थे। उनके हाथों में शराब की बोतलें थीं, मेज पर प्याले थे और एक बक्सा था।

यह सब देख कर ह्वान की पत्नी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। तभी उनमें से एक लड़का बोला — "डरो नहीं, यह भेंट आपको चिड़ियों के राजा ने भेजी है क्योंकि आपने उनकी चिड़िया की सहायता की थी।"

दूसरे लड़के ने बताया कि उन बोतलों में ऐसी शराब थी जो मुर्दा आदमी में भी जान डाल सकती थी और अन्धे को देखने की ताकत दे सकती थी और छोटे बक्से में तम्बाकू था।

अगर कोई गूँगा उस तम्बाकू को पिये तो वह फिर से बोल सकता था। और उस छोटी सुनहरी बोतल में एक ऐसी शराब थी जो बुढ़ापे पर रोक लगा कर रखती थी।"

यह सब कहने के बाद वे गायब हो गये। अब तुम सोच सकते हो कि ह्वान और उसकी पत्नी उन सबको देख कर कितने खुश हुए होंगे। सो वह सब तो उन्होंने उठा कर रख लिया और अब उनको दूसरे दो फल काटने की उत्सुकता होने लगी।

सो उन दोनों ने दूसरे फल को काटना शुरू किया। इस फल को भी काटना बहुत कठिन था। मगर इसको काटने पर भी उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

उस फल में हर तरीके की पोशाकें और बढ़िया सिल्क व साटन के हर रंग के थान निकल पड़े। फिर लिनन और सूती कपड़ा निकला। वह सब उस फल के अन्दर कैसे समाया हुआ था यह सब देखने में बड़ा आश्चर्यजनक था।

लेकिन जैसा कि तुमको मालूम है कि उनके पास खाने को कुछ नहीं था इसलिये वे लोग अब यह आशा करने लगे कि शायद तीसरे फल में कुछ खाने के लिये हो।

सो उन्होंने वह सब सामान तो सँभाल कर रख दिया और तीसरा फल काटने की कोशिश करने लगे।

लेकिन तीसरे फल को काटने पर उसमें से छह बढ़ई अपने औजारों के साथ निकले। वे बोले तो कुछ नहीं पर उन्होंने तुरन्त ही एक मकान बनाना शुरू कर दिया, बड़ी शान्ति से और बड़ी जल्दी से।

कुछ ही देर में एक बहुत बड़ा मकान बन कर तैयार हो गया जिसमें एक गोल ऑगन था। गायों, सूअरों और घोड़ों को रखने की खूब जगह थी।

उस जगह के बनते ही खूब सारे बैल और टट्टू उस मकान के दरवाजे से घुसना शुरू हो गये जिन पर चावल तथा दूसरा खाने का सामान लदा हुआ था।

उसके बाद काफी सारे आदमी तथा स्त्रियॉ आये जो लाइन बना कर खड़े हो गये और ह्वान के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

अब तो ह्वान और उसके परिवार को विश्वास हो गया कि वे सभी सपना देख रहे थे। लेकिन सपना ही सही यह सब कुछ उनके लिये अच्छा ही हो रहा था।

उन्होंने नौकरों से कहा कि वे सब कुछ ठीक से और सफाई से रखें। फिर कुछ नौकरों को उन्होंने खाना बनाने के लिये कहा और कुछ को नहाने की तैयारी करने को कहा।

वे सब वस्तुओं को जल्दी ही इस्तेमाल कर लेना चाहते थे ताकि सपना खतम होने पर वे दुखी न हों। पर वह तो सब सच था। उन सबने गर्म पानी से नहा धो कर बढ़िया बढ़िया कपड़े पहने और फिर खूब अच्छा खाना खाया। तुम सोच सकते हो कि वह सब उनको कितना अच्छा लग रहा होगा।

अगले दिन यह सब पड़ोसियों ने देखा तो वह सब ह्वान से मिलने के लिये आये।

उड़ते उड़ते यह खबर उसके भाई डॉग के पास भी पहुँची। सारे पड़ोसी तो ह्वान के भाग्य पर खुश थे परन्तु डॉग उससे ईर्ष्या करने लगा और उसे चोर कहने लगा।

उसने उससे कहा — "ओ बदज़ात कमीने, तुम पूरा का पूरा घर, नौकर और जानवर किस तरह चुरा सके? मुझे सब बताओ वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

ह्वान का मन बहुत साफ था सो उसने शुरू से आखीर तक सारा किस्सा डॉग को बता दिया और डॉग सोचता रहा कि अगर उसका भाई यह सब कर सकता है तो वह क्यों नहीं कर सकता। बस बिना कुछ कहे सुने वह तुरन्त ही घर चला गया।

बच्चो, क्या तुम बता सकते हो कि घर जा कर उसने क्या किया होगा?

घर जा कर उसने खुद तो सारी चिड़ियों को मारना शुरू कर ही दिया और साथ में अपने नौकरों को भी ऐसा ही करने को कहा।

इस तरह बहुत सारी चिड़ियॉ मर गयीं और काफी देर बाद डॉग केवल एक चिड़िया ज़िन्दा पकड़ सका। उसने पहले उसे लॅगड़ा किया फिर उस टॉग पर मरहम लगाया और एक गर्म जगह पर बिठा दिया और उसको खाना देने लगा।

इस तरह उसने सब कुछ वैसा ही किया जैसा कि उसके भाई ने किया था। वह चिड़िया जल्दी ही ठीक हो गयी और उड़ गयी। साथ में जो उसके पट्टियॉ बॅधी थीं वह उसके पैरों में बॅधी की बॅधी रह गयीं क्योंकि डॉग इतनी जल्दी में था कि वह उनको खोलना ही भूल गया था।

पतझड़ में जब वह चिड़िया दक्षिण गयी तो चिड़िया के राजा ने उससे पूछा — "अरे, तुम्हें क्या हुआ?"

उस चिड़िया ने राजा को सब बताया कि किस तरह एक बेरहम आदमी ने बहुत सारी चिड़ियों को मारा और उसकी टॉग तोड़ दी।

राजा ने सिर हिलाया — "अच्छा, अच्छा।"

अगले वसन्त में जब सब चिड़ियॉ कोरिया वापस जाने लगीं तो चिड़ियों के राजा ने उस टूटी टॉग वाली चिड़िया को एक बीज दिया और उसे उस धनी डॉग को दे देने के लिये कहा।

एक दिन डॉग अपने बरामदे में बैठा बैठा पाइप पी रहा था। धूप खिल रही थी कि एक चिड़िया गाती हुई वहॉ आयी। यही वह आशा कर रहा था सो उस चिड़िया को देखते ही उसने अपना पाइप पीना छोड़ दिया और उसकी चोंच की ओर देखने लगा।

चिड़िया की चोंच में एक बीज था। यह देख कर वह सब कुछ भूल कर उस चिड़िया की ओर भागा। चिड़िया बेचारी डर गयी और वह बीज वहीं छोड़ कर उड़ गयी।

डॉग ने वह बीज खुद उठाया, अपने नौकरों को छूने भी नहीं दिया, जा कर खुद बोया, इस आशा में कि वह बहुत धनी हो जायेगा। वह खुद ही उस बीज को देखता भालता रहा और उसकी रखवाली करता रहा।

इस बीज की बेल ह्वान की बेल के मुकाबले में बहुत ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी और जल्दी ही वह भी डॉग के बड़े से घर पर चारों ओर छा गयी। फिर भी वह बढ़ती रही, बढ़ती रही और डॉग के अस्तबल, गायों के घर और सूअरों के घर पर भी छा गयी।

इस बेल में तीन फल की बजाय छह फल लगे और ये इतने बड़े और भारी थे कि लगता था कि इनके बोझ से डॉग के घर की छत ही गिर जायेगी।

डॉग ने कई बढ़ई छत के लिये, कई बढ़ई फलों को काटने के लिये बुलाये।

उसने सोचा कि अच्छा हो अगर वह पहले से ही कुछ आदमियों को फलों की रखवाली के लिये नौकर रख ले क्योंकि सभी जानते थे कि ये फल खजानों का घर हैं इसलिये सभी उनकी ताक में लगे थे।

सभी बढ़इयों और नौकरों को पैसा देना बहुत खर्चीला था। दूसरे बारिश की वजह से उसके मकान की छतें भी टूटने लगीं थीं। उनका प्लास्टर उखड़ने लगा था। बारिश का पानी लगभग सभी कमरों में टपक रहा था।

डॉग की पत्नी रोज शिकायत करती थी और डॉग रोज उसको दिलासा देता — "सब ठीक हो जायेगा तुम फिक्र न करो। हमें जो धन मिलेगा उसको पाने के लिये अगर कुछ और कष्ट भी सहना पड़े तो हमें सह लेना चाहिये।"

आखिर समय आया। डॉग ने कई बढ़इयों को किराये पर रखा। लट्ठे, पहिये, रस्सियों का प्रबन्ध कर के उन फलों को ठीक से नीचे उतार लिया।

अब वे फल उसकी ऊँची दीवार के पीछे बिल्कुल सुरक्षित थे। डॉग ने अपने घर के सभी दरवाजे बन्द कर दिये। सभी नौकरों को बाहर भेज दिया। अब ऑगन में केवल चार लोग थे — डॉग, उसकी पत्नी, एक बढ़ई और उसका एक सहायक।

डॉग ने बढ़ई से कहा कि वह फल काटना शुरू करे पर इस समय बढ़ई सौदेबाजी करने लगा।

डॉग को इस बात पर बहुत गुस्सा आया। वह किसी और को अब अन्दर लाना नहीं चाहता था इसलिये वह बढ़ई को मॉगे हुए पैसों पर ही राजी हो गया।

अब दोनों आदमियों ने आरी से उस फल को काटना शुरू किया। काफी कठिनाई के बाद में जब वह फल कटा तो उसमें से गाने वालों, नाचने वालों और नटों का एक झुंड निकला मानो वह डॉग के घर का ऑगन न हो कर कोई मेले की जगह हो।

डॉग को यह सब बिल्कुल पसन्द नहीं आया। उसको यह सब कुछ गलत सा लगा। उन सबने बाहर निकलते ही गाना बजाना और नाचना शुरू कर दिया जैसे वे किसी भीड़ के सामने नाच गा रहे हों।

डॉग की पत्नी ने सोचा कि यह सब ठीक ही हो रहा था। ये सभी लोग उसके सौभाग्य के सूचक हैं और आने वाले धन की खुशी मनाने आये हैं। परन्तु डॉग तो बस केवल धनी होना चाहता था।

नट लोग ऑगन में रस्सी पर नाचने के लिये डंडे गाड़ रहे थे कि डॉग ने उनको वहॉ से जाने के लिये कहा।

पर आश्चर्य वे वहॉ से नहीं गये और बोले — "तुमने हमें बुलाया सो हम आ गये। अब हमें पॉच हजार नकद दो तभी हम यहॉ से जायंगे। अगर तुम नहीं दोगे तो हम यहीं तुम्हारे पास रहेंगे और तब तक नहीं जायेंगे जब तक तुम हमें पैसे नहीं दोगे।"

अब डॉग के पास उनको पैसे देने के सिवा और कोई चारा नहीं था तो उसने उनको पैसे दिये और उनको ऑगन से बाहर निकाल कर ही दम लिया।

फिर वह गुस्से से बढ़ई की ओर पलटा और बोला — "यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। जब तक तुम अपना यह बदसूरत और बदशगुनी चेहरा ले कर यहॉ नहीं आये थे तब तक ये फल सोने से भरे हुए थे।"

बढ़ई कुछ नहीं बोला पर वह अपने ऊपर लगाये गये इस इलजाम से बिल्कुल खुश नहीं था क्योंकि वह नहीं सोचता था कि इसमें उसका कोई हाथ था और सौदा तो फिर सौदा था।

उन्होंने एक फल खोल दिया था और अभी पॉच फल बाकी थे सो एक बार उन्होंने फिर फल काटना शुरू किया।

दूसरे फल में से क्या निकला? उसमें से निकला बौद्ध साधुओं का एक झुंड जो गंजे सिर था और केसरिया कपड़े पहने था। उन्होंने डॉग से मन्दिर के लिये चन्दा मॉगा। डॉग उनकी इस बात से बहुत परेशान हुआ।

पर अभी भी उसका उन फलों में पूरा विश्वास था और वह नहीं चाहता था कि ये साधु लोग उसका खजाना देखें और फिर और अधिक धन की मॉग करें इसलिये उसने उनको भी पॉच हजार नकद चन्दा दिया और दरवाजे से बाहर कर दिया।

अब तीसरा फल काटा गया। उसमें से बहुत सारे दुखी आदमी निकले और उनके पीछे चार आदमी एक लाश को अरथी पर लिये थे। वे दुखी आदमी फल से बाहर निकलते ही खूब ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

उनके रोने की आवाज से तो ह्वान का सारा ऑगन गूँज उठा। उसने जब उनको जाने को कहा तो वे बोले — "हमें कुछ पैसे दो ताकि हम इस लाश का अन्तिम संस्कार कर सकें।"

बहुत दुखी हो कर डॉग ने उनको भी पॉच हजार नकद दिया और उनसे किसी तरह छुटकारा पाया।।

अब डॉग की पत्नी को लगने लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है सो उसने भी बढ़ई को डॉटा कि उसी की वजह से यह सब हो रहा है।

बढ़ई ने जवाब दिया — "अगर ऐसा है तो मेरी मजदूरी मुझे दे दीजिये मैं चला जाता हूँ।"

डॉग और उसकी पत्नी ने सोचा कि अब इस समय यह बढ़ई गया तो नया बढ़ई खोजना कठिन होगा और अभी तो तीन फल और थे तोड़ने के लिये इसलिये डॉग उसको किये हुए काम के पैसे देने को राजी हो गया और बाकी काम के पैसे भी उसने उसको पहले ही दे दिये।

और अब वह बढ़ई चौथा फल काटने लगा। अब डॉग और उसकी पत्नी उस फल को चिन्ता भरी नजर से देखने लगे कि न जाने उसमें से क्या निकलेगा।

पर इस बार पहले से कुछ अच्छा था। उसमें से कोरिया के प्रान्तों के गाने और नाचने वाली लड़कियों के समूह निकल रहे थे। हर समूह ने अपने प्रान्त का गाना गाया और नाच किया और वे सब मिल कर इतना गाये नाचे कि डॉग करीब करीब पागल सा हो गया।

एक ने हवा के देवता के बारे में गाया तो दूसरे ने कोयल के बारे में ओर तीसरे ने एक पुराने पेड़ के बारे में। चौथे समूह ने एक इतना लम्बा गीत गाया कि लगता था कि वह कभी खत्म ही नहीं होगा। वह गीत घन्टों, सप्ताहों, महीनों और वर्षों के बारे में था।

यह सब कुछ बहुत सुन्दर था क्योंकि उनकी पोशाकें बहुत सुन्दर, चमकीली और भड़कीली थीं। उनका गला बहुत ही मीठा सुरीला था। लेकिन बुरी बात यह हुई कि यह सब करने के बाद उन्होंने भी पॉच हजार नकद मॉग लिये। डॉग को उनको भी पॉच हजार नकद देने पड़े।

जब वे सब लड़कियॉ चलीं गयीं तो डॉग की पत्नी अपने पति से बोली — "स्वामी, अब और फल न खोलिये।"

मगर वह बढ़ई बीच में ही बोला कि उसने जिस काम के पैसे लिये हैं वह उस काम को पूरा किये बिना वहॉ से नहीं जायेगा।

मगर सच तो यह था कि उसको यह सब देखने में बड़ा आनन्द आ रहा था। डॉग और उसकी पत्नी का व्यवहार उसके संग अच्छा नहीं था इसलिये वह उनको परेशान होते देख कर भी खुश हो रहा था। इसलिये उसने जल्दी से पॉचवॉ फल भी काट दिया।

पहले तो उसमें कुछ पीले रंग की चीज़ दिखायी दी मगर वह सोना नहीं था। उसमें से सिपाहियों की सेना, फिर कुछ पुलिस के आदमी और उनके बाद डरावने रूप का एक मजिस्ट्रेट निकला।

डॉग उन सबको देख कर इतना डर गया कि भागने की कोशिश करने लगा मगर उनके रक्षकों ने उसे पकड़ लिया। मजिस्ट्रेट ने एक सिपाही से कहा "मेरा वह लाल बक्सा लाओ।"

डॉग डरा हुआ कॉपता हुआ सा खड़ा देखता रहा। मजिस्ट्रेट ने उस बक्से में से एक लम्बा सा कागज निकाला जिसमें लाल रंग की एक सील लगी थी।

सील तोड़ कर उसने उसे पढ़ा — "आज से डॉग फलॉ आदमी का नौकर है इसलिये उसे उस आदमी को हर साल टैक्स देना चाहिये।"

यह सुन कर डॉग रो पड़ा और बोला — "मगर मेरे पास अब पैसे है कहॉ जो मैं टैक्स दे सकूँ?"

मजिस्ट्रेट शान्तिपूर्वक बोला — "कोई बात नहीं। हमें जो भी कुछ इस घर में मिलेगा हम वही ले लेंगे।" और घर छोड़ने से पहले उन्होंने उसकी सारी कीमती चीज़ें अपने साथ ले लीं।

पर अभी तो छठा फल बाकी था। उसमें से क्या निकला?

बच्चो, उसमें से निकला एक मदारी। निराश डॉग ने देखा कि इस बार वह केवल एक छोटा सा आदमी था सो वह उसका गला पकड़ कर उसे बाहर निकालने जा ही रहा था कि उस मदारी ने जूडो का एक दॉव मारा और डॉग उसके पैरों में आ गिरा।

मदारी ने अब उसके कपड़े फाड़ने शुरू कर दिये और उसके कपड़ों की पट्टियों से उसके हाथ पैर बॉध दिये और फिर वह हॅसते हुए उसके ऊपर से कूद गया।

डॉग की पत्नी ने जो गहने किसी तरह सिपाहियों से बचा लिये थे उसने वे सब उस मदारी को दे दिये और उससे वहॉ से जाने को कहा।

बढ़ई भी अपने साथी और उस मदारी के साथ हाथ में हाथ डाल कर चलता बना। डॉग और उसकी पत्नी निराशा से अपना घर देख रहे थे। उनका पूरा घर बरबाद हो चुका था और जो कुछ बच भी गया था लोग उसे लूट कर ले गये।

उस दिन के बाद से उन्हें अपने छोटे भाई ह्वान की दया पर ही जीना पड़ा। ह्वान क्योंकि दयावान था इसलिये उसने अपने भाई की सब बुराइयों को भूल कर सहायता की।

8 काशीफल के बीज[19]

एक बार की बात है कि कोरिया देश में दो भाई रहते थे। उनमें से छोटा भाई बहुत गरीब था और उसको अपना पेट पालने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

वह एक बहुत छोटे से घर में रहता था और उसके पास कोई सामान भी नहीं था। पर वह आदमियों और जानवरों सब पर दया बहुत करता था।

जबकि उसका बड़ा भाई काफी अमीर था। अमीर होने की वजह से उसके सब काम बड़ी आसानी से हो जाते थे। उसके पास काम करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर थे। वह एक बहुत बड़े मकान में रहता था और उसके पास उसकी अपनी जरूरत से भी बहुत ज़्यादा सामान था।

पर इस सबके बावजूद वह बहुत लालची और कंजूस था और हर चीज़ के लिये शिकायत करता रहता था। उसका आदमियों और जानवरों किसी से भी अच्छा बरताव नहीं था।

---

[19] The Pumpkin Seeds – a folktale from Korea, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=54
Retold and written by Mike Lockett.
--Mike has adapted this story from a Collection of Korean Folktales first brought to the attention of the western world by Korean writer Kim So-Un – "The Story Bag: a collection of Korean folktales". 1989. 240 p. Readers who wish to re-tell this story are asked to please honor this individual by reminding their audience who preserved this marvelous story.
--It is like the story of "Hwan and Dang" given just before this story with only a little difference.

एक साल कुछ चिड़ियें बहुत दूर दक्षिण से वहॉ आयीं। उनमें से कुछ चिड़ियों ने छोटे भाई के घर की छत पर अपना घोंसला बना लिया। उसको उन चिड़ियों का आना बहुत अच्छा लगा।

पहली बात तो यह कि उनका आना उसको इसलिये अच्छा लगा क्योंकि वह एक पहाड़ के एक किनारे की तरफ रहता था तो वहॉ उसका कोई पड़ोसी नहीं था। दूसरे खेती करने के लिये वहॉ की जमीन भी सख्त थी इसलिये भी वहॉ कोई नहीं रहता था।

इसलिये जब वह गरीब भाई वहॉ थोड़ी बहुत खेती करता या घाटी में बहती नदी से पानी भर कर लाता तो उसे इन चिड़ियों और दूसरे जानवरों का साथ रहना बहुत अच्छा लगता था।

अमीर भाई मैदानों में रहता था और उसके आस पास बहुत सारे लोग रहते थे जिनको वह अक्सर बुरा भला कहता रहता।

जबकि छोटे भाई को अपने खेत अपने आप ही जोतने और बोने पड़ते थे बड़े भाई के पास यह सब करने के लिये बहुत सारे नौकर थे।

उसके पास चावल बोने के लिये बहुत सारी औरतें थीं। उसकी फसल काट कर लाने के लिये उसके पास बहुत सारे आदमी थे। उसके खेतों में बहुत सारी फसल होती था पर वह भी उस लालची को खुश करने के लिये काफी नहीं थी।

हालॉकि छोटे भाई के खेतों में फसल बहुत नहीं होती थी क्योंकि उसको अपने खेत को पानी देने के लिये पानी बहुत दूर से

लाना पड़ता था पर फिर भी वह चावल के कुछ दाने उन चिड़ियों के लिये उस कच्चे रास्ते पर डाल ही देता था जिस पर वह चलता था।

वह उन चिड़ियों को हमेशा ही ध्यान से देखता रहता था कि वे ठीक से रह रही हैं या नहीं। जब उसने उनके घोंसले में उनके अंडे देखे तो वह बहुत खुश हुआ।

क्योंकि वहॉ अंडे देने का मतलब था कि वे चिड़ियॉ अब वहॉ कम से कम तब तक तो रहेंगी ही जब तक उन अंडों में से बच्चे निकलेंगे। और वे बच्चे भी वहॉ तब तक रहेंगे जब तक इतने बड़े न हो जायें जब तक कि वे उड़ने के लायक न हो जायें।

जब तक चावल के छोटे पौधे दोबारा लगाने लायक हुए तब तक उन अंडों में से बच्चे भी निकल आये। छोटे छोटे भूखे बच्चे अपने घोंसले के ऊपर झॉकने लगे और चीं चीं करने लगे।

उस भले आदमी ने उस घोंसले के नीचे एक चौड़ा तख्ता रख दिया ताकि अगर कहीं वे बच्चे गिरें तो उस तख्ते के ऊपर ही रहें नीचे न गिरें। उन बच्चों के मॉ बाप उन बच्चों को खाना खिलाते रहे और बच्चे भी दिन पर दिन बड़े होते रहे।

एक दिन वह छोटा भाई दो बालटी पानी ले कर अपने चावल के खेत में पानी देने जा रहा था कि उसने देखा कि उस घोंसले में से उन बच्चों के मॉ बाप उड़ कर चले गये हैं।

कुछ पल बाद ही उस घोंसले में से बच्चों की डर की चीखों की आवाज आने लगी। उसने तुरन्त ही अपनी पानी की बालटियॉ वहीं छोड़ीं और बच्चों के घोंसलों की तरफ भागा।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक हरा सॉप पेड़ की शाख से लटक कर छत पर नीचे गिर पड़ा है। सॉप ने अपना मुँह खोल रखा था और चिड़िया के बच्चे डर के मारे चिल्ला रहे थे। वे अपने पंख फड़फड़ा रहे थे और घोंसले से बाहर उड़ने की कोशिश कर रहे थे।

पर उन बच्चों के पंख अभी इतने मजबूत नहीं थे कि वे उड़ सकें सो वे उड़ नहीं पा रहे थे सिवाय एक बच्चे के। वह एक बच्चा उड़ा पर वह भी ठीक से उड़ न पाने की वजह से घोंसले के बाहर ही गिर गया जिससे उसकी टॉग टूट गयी।

उसने उस बच्चे को उठा लिया और उसकी टॉग की मरहम पट्टी की। कुछ दिन में उसकी टॉग ठीक हो गयी और बहुत जल्दी ही वह चिड़िया अपने दूसरे भाई बहिनों के साथ उड़ने लगी।

गर्मी चली गयी और पतझड़ आ गया। वे चिड़ियॉ वहॉ से उड़ कर ठंड बिताने के लिये दक्षिण की तरफ चली गयीं। उन चिड़ियों के चले जाने के बाद वह छोटा भाई फिर अकेला रह गया।

अगले साल वसन्त में वे चिड़ियॉ फिर लौटीं। वे पहाड़ों के ऊपर से, झीलों के ऊपर से लम्बा रास्ता पार कर के उड़ती हुई वहॉ तक आयी थीं।

उस छोटे भाई को यह देख कर बहुत अच्छा लगा कि चिड़ियों के पिछले वाले माता पिता ने फिर से उसके घर में घोंसला बनाया। पिछले साल जो चिड़िया घायल हो गयी थी वह भी उन्हीं के साथ थी।

ऐसा लग रहा था जैसे वह घायल चिड़िया अपनी जान बचाने के लिये उस भाई को कुछ इनाम देना चाह रही हो सो उसने उसके चारों तरफ **2–3** चक्कर लगाये और काशीफल का एक बीज उसकी गोद में डाल दिया। इसके बाद वह वहॉ से उड़ कर अपने घोंसले में चली गयी।

छोटे भाई ने काशीफल के उस बीज को अपने घर के ऑगन के एक कोने में बो दिया। तुरन्त ही उसमें से कल्ला[20] फूट गया और उसमें से उसकी बेल निकल कर बड़ी हो कर उसकी झोंपड़ी के ऊपर फैलने लगी।

[20] Translated for the word “Sprout” – when the first two leaves come out of the seed, it is called sprouting.

कुछ ही दिनों में उसमें तीन पीले फूल भी आ गये और फिर उनमें छोटे छोटे काशीफल भी दिखायी देने लगे। पतझड़ आने तक तो वे तीनों छोटे छोटे काशीफल खूब बड़े बड़े हो गये और उसके घर की छत से नीचे लटकने लगे।

एक छोटे से काशीफल के बीज से इतने सारे काशीफल हो गये कि उसका घर एक तरफ को झुकने लगा और वे काशीफल जमीन को छूने लगे।

जब काशीफल पक गये तो उसने उनमें से एक काशीफल तोड़ लिया। वह काशीफल इतना बड़ा था कि उसको तो घाटी में बसे सारे गॉव को खिलाया जा सकता था।

सो उसने भी सोच लिया कि वह यह काशीफल सबके साथ बॉट कर खायेगा। उसने उस काशीफल को दो हिस्सों में काटना शुरू किया।

जैसे ही वह काशीफल कटा तो बजाय उसमें से सब्जी निकलने के उसमें से कुछ बढ़ई बाहर निकल आये। किसी के हाथ में हथौड़ा था तो किसी के हाथ में कीलें। किसी के हाथ में आरी थी तो किसी के हाथ में पेन्ट करने का ब्रश।

उनके साथ घर बनाने का सामान भी था – खिड़कियॉ, दरवाजे, तख्ते आदि आदि। कुछ ही पलों में उन बढ़इयों ने उस भाई के लिये एक बहुत ही बड़ा मकान बना दिया।

यह सब देख कर वह भाई तो बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। और यह देख कर तो वह यह भी सोचने लगा कि पता नहीं दूसरे दोनों काशीफलों में से क्या निकलेगा।

वह बहुत उत्सुक हो गया और उसने दूसरा काशीफल भी बेल से तोड़ लिया। जब उसने उसको दो हिस्सों में काटा तो उसमें से बहुत सारे नौकर निकल पड़े और नौकरों के बाद फिर खेत पर काम करने वाले लोग।

उन खेत पर काम करने वालों के हाथों में उसके चावल के खेतों के लिये हल आदि और उनकी सिंचाई के लिये नहर आदि बनाने के लिये बहुत सारे औजार थे ताकि वह अपने खेतों से बहुत सारा चावल उगा सके।

उन नौकरों में कुछ रसोइये थे जिनके हाथों में खाने के सामान के बहुत सारे डिब्बे थे। वे उनको ले कर उसके मकान में गये और वहॉ जा कर उसके लिये बहुत अच्छा अच्छा खाना बनाने लगे।

उनमें से कुछ दरजी थे जो सुई, धागा और कपड़े ले कर निकले थे उन्होंने उस भाई के लिये बहुत बढ़िया बढ़िया कपड़े सिलने शुरू कर दिये। बाकी के नौकर उस भाई के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गये — "हम सब आपकी सेवा करने के लिये हैं।"

अब उसने बेल से तीसरा काशीफल तोड़ा और उसको काटा तो उसमें से बहुत सारा खजाना निकला – सोना, चॉदी, सिक्के आदि।

वह सब तो इतना था कि वह भाई उसको सारी ज़िन्दगी खर्च नहीं कर सकता था।

तीसरे काशीफल से निकले उस पैसे से उसने बहुत सारी जमीन खरीद ली और इस तरह वह गरीब भाई रात भर में बहुत बड़ी जमीन का मालिक बन गया।

जैसा कि वह पहले भी करता था उसके पास जो कुछ भी था उसमें से उसने कुछ दूसरों को भी दे दिया जो वहॉ उसके आस पास की जमीन पर रहते थे।

छोटे भाई की यह सारी धन दौलत उसके बड़े भाई की निगाहों से छिपी नहीं रही। वह लालची भाई तो उससे जल रहा था कि उसके छोटे भाई के पास उससे ज़्यादा दौलत कैसे आयी और कहॉ से आयी।

वह अपने भाई के पास इस सबके बारे में पूछने गया और जब उसने अपने भाई की कहानी सुनी तो वह तो बहुत खुश हो गया। वह अपने घर के पास के पहाड़ों पर उन चिड़ियों के घोंसले ढूँढने चला गया।

उसने एक बच्चा चिड़िया उसके घोंसले में से उठायी और उस की टॉग तोड़ दी। फिर उसने उसकी मरहम पट्टी भी कर दी।

पतझड़ आने तक वह ठीक हो गयी और अपने साथियों के साथ उड़ गयी। और जैसा कि वह उम्मीद कर रहा था वह चिड़िया वसन्त आने पर फिर वहॉ आयी।

जैसे वह पहली वाली चिड़िया काशीफल का एक बीज ले कर आयी थी उसी तरह से यह चिड़िया भी अपनी चोंच में काशीफल का एक बीज दबा कर लायी और जैसे उस चिड़िया ने वह बीज उस छोटे भाई की गोद में डाला दिया था उसी तरह से इस चिड़िया ने भी वह काशीफल का बीज उस बड़े भाई के **2–3** बार चक्कर काट कर उसकी गोद में डाल दिया।

उस लालची भाई से उस बीज में से काशीफल निकलने का इन्तजार बहुत मुश्किल से हो रहा था सो उसने तुरन्त ही अपने एक नौकर को बुलाया और उसको वह बीज अपने ऑगन में बोने के लिये दे दिया और दूसरे नौकर को उसको पानी और खाद देने के लिये बोल दिया।

पिछले वाले बीज की तरह यह बीज भी बहुत जल्दी उग आया और इसकी बेल भी जल्दी जल्दी बढ़ने लगी। और यह बेल भी उस के मकान की छत पर चढ़ गयी।

जैसे जैसे समय बीता इस बेल में भी तीन काशीफल लगे और उसके घर से नीचे की तरफ लटकने लगे। हर दूसरा काशीफल पहले काशीफल से बड़ा था और ये सारे काशीफल उसके छोटे भाई के काशीफलों से भी बड़े थे।

यह देख कर बड़ा भाई बहुत खुश हुआ और सोचने लगा कि मैं अब अपने छोटे भाई से ज़्यादा अमीर हो जाऊॅगा क्योंकि मेरे काशीफल मेरे भाई के काशीफलों से ज़्यादा बड़े हैं।

पतझड़ आया तो उन काशीफलों को तोड़ने का समय भी आ गया। उस समय उसने अपने सब नौकरों को छुट्टी दे दी ताकि कोई यह न जान सके कि उसके पास कितनी दौलत आयी।

वह जब उन काशीफलों को काट रहा था तो खुशी से नाच रहा था। उसने अपना चाकू उठाया और काशीफल काटने के लिये उसमें घुसा दिया। उसने अपना काशीफल दो हिस्सों में काट दिया पर उसमें से तो उसका मकान बड़ा करने के लिये कोई बढ़ई आदि नहीं निकले।

बल्कि उसमें से तो निकला राक्षसों का एक जत्था जो बड़े बड़े डंडे लिये हुए था। बाहर आते ही उन्होंने उस बड़े भाई को उन डंडों से पीटना शुरू कर दिया।

वे बोले — "यह तुमको सिखायेगा कि लालची होने और दूसरों के साथ चीज़ों को न बॉटने का क्या नतीजा होता है।" जब तक वे उस भाई को मार पीट कर वहॉ से गये उसका सारा शरीर डंडों की मार से नीला पड़ गया था।

पर इस बात से भी बड़े भाई ने कोई सबक नहीं सीखा और धन दौलत पाने की उम्मीद में उसने दूसरा काशीफल भी काट दिया। अबकी बार उसमें से धन दौलत निकलने की बजाय कर्जे के पैसे वसूल करने वाले निकल आये।

निकलते ही उन्होंने उससे पैसे मॉगने शुरू कर दिये — "अपना कर्जा चुकाओ, अपना कर्जा चुकाओ।" पर वह उनको अपना पैसा

देने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था सो उन लोगों ने उसका जितना भी सामान – कपड़े, फर्नीचर आदि, ले जा सकते थे वहॉ से लिया और ले कर चले गये।

बेचारा बड़ा भाई वहीं रोता बैठा रह गया। पर अभी भी उस को अपने तीसरे काशीफल से धन की आस लगी थी सो उसने तीसरा काशीफल भी बेल से तोड़ लिया और उसको भी काट दिया।

जैसे ही वह काशीफल खुला उसमें से पीले रंग का कीचड़ वाला पानी बह निकला। उस पानी ने उसके खेतों और फसल को पीली मिट्टी से ढक दिया। उससे उसकी चावल की और दूसरी फसलें सब बेकार हो गयीं।

कुछ पलों में ही वह सबसे ज़्यादा अमीर आदमी से सबसे ज़्यादा गरीब आदमी में बदल गया। वह अपने नुकसान पर बहुत रोया। अब उसके पास अपने छोटे भाई के पास सहायता मॉगने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

वह उसके पास सहायता मॉगने के लिये गया और हमेशा की तरह से उसने अपने बड़े भाई का अपने घर में स्वागत किया।

उसने अपनी सारी चीज़ें, जितनी भी उसके पास थीं, आधी आधी बॉटीं और एक आधा हिस्सा उसको दे दिया – आधी जायदाद, आधा पैसा, आधे नौकर।

इस घटना के बाद बड़ा भाई अब बहुत नम्र हो गया था। अब उसने अपने आस पास रहने वाले आदमियों और जानवरों से प्रेम करना सीख लिया था।

9 जादुई बटुआ[21]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के कोरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत साल पहले की बात है कि एक आदमी अपनी पत्नी के साथ एक बहुत ही छोटी सी जमीन पर एक खपरैल की छत वाली झोंपड़ी में रहता था। वे लोग बहुत गरीब थे और उनके पास रहने सहने के लिये भी बहुत ही कम था।

वे लोग रोज लकड़ी काटने के लिये जंगल जाते थे और वहॉ से दो गट्ठर लकड़ी ले आते थे। एक गट्ठर की लकड़ी से वे खाना बनाते थे और अपना घर गर्म रखते थे और दूसरे गट्ठर की लकड़ी को बाजार में ले जा कर बेच देते थे। उससे जो पैसे उनको मिलते थे उनसे वे अपनी जरूरत की चीज़ें खरीद लेते थे।

एक दिन जब वे रोज की तरह जंगल से लकड़ी काट कर घर लौटे तो रोज की तरह उन्होंने एक गट्ठर तो बेचने के लिये बाहर ही छोड़ दिया और दूसरा गट्ठर खाना बनाने के लिये अपनी रसोई में रख दिया।

पर अगली सुबह जब वे बाहर वाले गट्ठर को उठाने गये तो उन्होंने देखा कि उनका वह गट्ठर तो वहॉ था ही नहीं। सो उनको

[21] The Magic Moneybag – a folktale from Korea, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=113
Retold and written by Mike Lockett.

अपना रसोई में रखा गट्ठर जो उन्होंने अपना खाना बनाने के लिये रखा था उसी को बेचना पड़ा।

इसका मतलब यह था कि उस रात न तो घर गर्म करने के लिये लकड़ी थी और न ही खाना पकाने के लिये कोई आग थी।

अगले दिन उन्होंने फिर से दो गट्ठर लकड़ी काटी और रोज की तरह एक गट्ठर बाहर रख दिया और एक गट्ठर रसोई में रख दिया। पर उसके अगले दिन सुबह फिर से वह बाहर वाला लकड़ी का गट्ठर गायब था।

ऐसा चार दिन तक लगातार होता रहा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनका वह लकड़ी का गट्ठर जाता कहॉ है और उसे कौन ले जाता है।

पति को एक विचार आया। पॉचवें दिन उसने इस गट्ठर के बीच में एक जगह की और उसमें छिप कर बैठ गया। उसने यह सोच रखा था कि आज वह यह पता लगा कर ही रहेगा कि उसकी लकड़ियों का गट्ठर कौन ले जाता है।

आधी रात के समय एक रस्सी ऊपर आसमान से नीचे गिरी, उसने अपने आपको उस गट्ठर से बॉधा और उस गट्ठर को आसमान में खींच लिया। वह आदमी अभी भी उस गट्ठर के अन्दर था सो वह भी उस गट्ठर के साथ साथ ऊपर चला गया।

जब लकड़ी के गट्ठर ने हिलना बन्द कर दिया तो उस लकड़हारे ने उस गट्ठर के बाहर झॉक कर देखा तो उसने देखा कि वह तो

बादलों में था। उसने वहॉ एक सफेद बालों वाला आदमी उस गट्ठर की तरफ आता हुआ देखा।

उस सफेद बालों वाले आदमी ने उस गट्ठर को खोला तो उसमें एक आदमी को देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उस आदमी से पूछा — "सारे लोग केवल एक गट्ठर लकड़ी काट कर ले जाते हैं और तुम दो गट्ठर लकड़ी काट कर लाते हो, क्यों?"

लकड़हारा बोला — "हम लोग बहुत गरीब हैं। हम एक गट्ठर लकड़ी अपना घर गर्म रखने के और अपना खाना पकाने के लिये इस्तेमाल करते हैं और दूसरा गट्ठर लकड़ी बाजार में बेच देते हैं जिससे मिले पैसों से हम अपनी जरूरत का सामान खरीदते हैं।"

वह बूढ़ा हॅसा और बोला — "मुझे तुम्हारा जवाब पहले से ही पता था। मैं तो तुमको यहॉ बादलों में से बहुत दिनों से देख रहा हूॅ। तुम आदमियों और जानवरों पर दया करते हो। तुम हर एक के साथ दया और प्यार से बर्ताव करते हो।

तुम अपनी ज़िन्दगी बिताने के लिये बहुत मेहनत करते हो। क्योंकि तुम दोनों बहुत ही अच्छे हो, इसलिये मैं तुमको एक बहुत ही खास खजाना देता हूॅ – एक जादुई बटुआ।"

इतना कह कर उस बूढ़े ने एक थैला निकाला और उस थैले को उस आदमी को देते हुए कहा — "इस थैले में से तुम एक चॉदी का सिक्का रोज निकाल सकते हो।

वह सिक्का केवल तुम्हारी रोज की जरूरतों को पूरा करने के लिये ही काफी नहीं होगा बल्कि अपनी दूसरी जरूरतों को पूरा करने के बाद भी तुम्हारे पास उस सिक्के में से कुछ बच जायेगा जिसको बाद में तुम कोई बड़ी चीज़ खरीदने के लिये काम में ला सकते हो।

पर हॉ तुम इसमें से रोज एक सिक्के से ज़्यादा मत निकालना। इस तरह तुम इस थैले को बहुत सालों तक इस्तेमाल करते रहोगे।"

लकड़हारे ने उस बूढ़े के हाथ से वह थैला ले लिया और तुरन्त ही उलट दिया पर उसके अन्दर तो कोई पैसा नहीं था। फिर भी उसने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसी रस्सी के सहारे बादलों में से नीचे उतर आया जो उसको बादलों तक ले गयी थी।

घर आ कर वह थैला उसने अपनी पत्नी को दे दिया और उसको उस थैला मिलने की सारी कहानी सुना दी।

थैला पा कर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही उस थैले में अपना हाथ डाला तो उसके हाथ में चॉदी का एक चमचमाता सिक्का आ गया।

वह सिक्का उनकी जरूरत का सामान खरीदने के लिये काफी था बल्कि खरीदारी करने के बाद भी उसमें से कुछ पैसा बच गया था जैसा कि उस बूढ़े ने उस आदमी से कहा था।

सो थैले के सिक्के और लकड़ी काटने से मिले पैसे से उन्होंने अब कुछ पैसे बचाने शुरू कर दिये और यह सोचना शुरू कर दिया कि वे उसका क्या खरीदेंगे।

दिन पर दिन गुजरते गये और उन दोनों की बचत बढ़ती गयी। पति रोज अपनी पत्नी से कहता — "चलो अब हम इसका एक बैल खरीद लेते हैं।" पर पत्नी उसकी इस बात पर राजी नहीं होती।

कुछ दिन बाद पति बोला — "क्या हो अगर हम कुछ एकड़ जमीन खरीद लें?" पर उसकी पत्नी इस बात पर भी राजी नहीं थी।

कुछ दिन बाद पति बोला — "अब हम नया मकान बना लें?" असल में पत्नी कोई नयी चीज़ खरीदने से पहले कुछ दिन और पैसे बचाना चाहती थी पर बाद में वह नया घर बनाने पर राजी हो गयी।

यह नया घर कोई बहुत बड़ा महल नहीं था बल्कि जिस झोंपड़ी में वे अभी रहते थे उससे कुछ ही बड़ा घर था। पर पति ने जिद की कि उनको अबकी बार ईंटों का मकान बनाना चाहिये।

वह बचाया हुआ सारा पैसा उस मकान पर खर्च करने की सोच रहा था क्योंकि वह सोचता था कि आगे तो और भी पैसा बच जायेगा।

पत्नी ने अपने पति को लाख समझाने की कोशिश की पर फिर भी वह अपने पति को यह नहीं समझा सकी कि उसको आगे के लिये कुछ बचा कर रखना चाहिये सो उसको भी ईंटों का मकान बनवाने पर राजी हो जाना पड़ा।

पति ने काफी पैसा ईंटों, लकड़ी और टाइल का फर्श खरीदने पर खर्च किया। फिर उसने मजदूर बुलवाये और घर बनवाने का काम घर पर रह कर ही देखने का निश्चय किया।

इससे वह जंगल लकड़ी काटने नहीं जा सका और जब वह लकड़ी नहीं ला सका तो बेचता क्या? ईंटों का मकान बनवाना मॅहगा था और काम धीरे धीरे चल रहा था। उसकी बचत जल्दी जल्दी खत्म होने लगी। पति हर काम अभी अभी चाहता था, बाद में नहीं।

उसकी यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उस थैले में से एक दिन में केवल एक ही सिक्का क्यों निकाल सकता था।

एक दिन बिना अपनी पत्नी को बताये हुए उसने थैले में हाथ डाला। उसने दूसरा सिक्का निकाला, फिर तीसरा, फिर चौथा।

उसने उस बूढ़े की सलाह बिल्कुल भी नहीं मानी और फिर जब पॉचवीं बार उसने उस थैले में हाथ डाला तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। उसका हाथ खाली था।

इतना ही नहीं उसके पहले निकाले हुए चार सिक्के भी गायब हो गये थे। अब इससे ज़्यादा बुरा उसके लिये और क्या हो सकता था कि उसका ईंटों का मकान भी गायब हो गया था।

और अब वह अपनी पुरानी खपरैल की छत वाली झोंपड़ी में खड़ा था। उसके लालच ने उसका सब कुछ खो दिया था।

पति को बहुत दुख हुआ खास कर के जब जबकि उसको अपनी पत्नी को यह बताना पड़ा कि क्या हुआ था।

पर उसकी पत्नी अभी भी अपने पति को बहुत प्यार करती थी। उसने अपने पति को सलाह दी कि अब उनको फिर से पहाड़ पर लकड़ी काटने जाना चाहिये जैसे कि वे पहले जाया करते थे।

लोगों को या तो अपनी कड़ी मेहनत पर भरोसा करना चाहिये या फिर दूसरों की बात माननी चाहिये।

10 जो बोओगे वही खाओगे[22]

यह लोक कथा भी एशिया के महाद्वीप के कोरिया देश की ही है। यह कई महीनों पुरानी बात है कि कोरिया देश में दो भाई अपने पिता के साथ रहते थे। छोटा भाई बहुत ही मेहनती था और वह जिससे भी मिलता था उसी से दया का बर्ताव करता था।

जबकि बड़ा भाई यह जानता था कि उसको अपने पिता की सारी जायदाद, चावल के खेत और पैसा मिलेगा सो वह बहुत ही घमंडी और अकड़ू था।

हर रात खाना खाने के बाद उनका पिता कहता — "मेरे बेटों, याद रखो तुम जो कुछ भी बोओगे वही खाओगे।"

यह सुन कर छोटा भाई तो नम्रता से हॉ में सिर हिला देता क्योंकि वह अपने माता पिता को बहुत प्यार करता था और उनकी बहुत इज़्ज़त करता था पर बड़ा भाई जॅभाई लेता और उठ कर सोने चला जाता। पिता उसको इस तरह जाते देख कर बहुत दुखी होता।

और फिर एक दिन ऐसा आया जब उनके पिता का मरने का समय आ गया तो उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और कहा —

[22] What We Will Plant We Will Eat – a folktale from Korea, Asia. Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2013/03/what_we_plant_we_will_eat.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

"याद रखो बेटे, परिवार से ज़्यादा बड़ी कोई चीज़ नहीं है। इसलिये इस जायदाद को आपस में बॉट लेना और साथ साथ काम करना। मैं यह जमीन तुम दोनों के लिये छोड़े जा रहा हूँ।" इतना कह कर वह मर गया।

बड़ा भाई इस बॅटवारे से बहुत नाराज था। जमीन का कानून यह कहता था कि परिवार के बड़े बेटे को ही सब कुछ मिलता था पर यहॉ तो उसका पिता उसके हिस्से का बॅटवारा कर गया था।

जैसे ही पिता की आखिरी रस्में पूरी हो गयीं बड़े बेटे ने अपने पिता के आखिरी शब्दों पर कोई ध्यान न देते हुए अपने छोटे भाई को घर से निकाल दिया और पिता की सारी जायदाद का मालिक बन बैठा।

छोटे भाई का दिल टूट गया और वह मीलों तक चलता हुआ अपने घर और गॉव से बहुत दूर एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ उस जमीन का कोई पूछने वाला नहीं था।

उसने उस जमीन को अच्छी तरह से जोता और एक छोटी सी चावल की फसल उगायी। वहीं पर उसने अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी भी बना ली। आती जाती खेत की गाड़ियों से जो गन्दा भूसा गिर जाता था उसी से उसने अपनी उस झोंपड़ी की छत बना ली।

धीरे धीरे उसने बचत कर के फिर एक छोटा सा मकान भी बना लिया। कुछ उसके पास पैसे भी बच गये सो उसने शादी भी कर ली और अपना परिवार बसा लिया।

फिर एक साल वहॉ अकाल पड़ा और छोटे भाई की चावल की फसल नहीं उगी। बिना खाने के उसका परिवार भूखा रहने लगा। भूख से उसकी पत्नी और बच्चे जब सिसकते थे तो उसका दिल टूटने लगता था।

सो वह अपने अमीर बड़े भाई के पास उस जमीन पर उगाया गया कुछ चावल मॉगने के लिये गया जो उसके पिता उन दोनों के नाम छोड़ गये थे।

पर बड़ा भाई एक बेरहम हॅसी हॅसते हुए चिल्लाया — "तुम्हारा इस फसल में अब क्या है। यहॉ तुम्हारा कुछ भी नहीं है। अब यह सारी फसल मेरी है। चले जाओ यहॉ से।" ऐसा कहते हुए उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसमें ताला लगा दिया।

छोटा भाई बेचारा बड़ा परेशान सा वापस लौट पड़ा। जैसे ही वह अपने गॉव से बाहर निकला उसने एक पेड़ के ऊपर से एक तेज़ चीख सुनी। एक सॉप एक चिड़िया के बच्चे के ऊपर हमला कर रहा था।

उस चिड़िया के छोटे बच्चे ने अपने पंख फड़फड़ाते हुए उस सॉप से बचने की कोशिश तो की पर वह उड़ने के लिये बहुत छोटा था सो बजाय उड़ने के वह जमीन पर गिर पड़ा।

छोटे भाई ने उस बेसहारा बच्चे को अपने हाथों में उठा लिया और उसको आराम देने की कोशिश करने लगा। जमीन पर गिरने से उस चिड़िया के बच्चे की टॉग टूट गयी थी।

उसने अपनी कमीज से कपड़े की एक पट्टी फाड़ी और उसकी टूटी टॉग पर बॉध दी। कुछ देर में सॉप जब वहॉ से चला गया तो उसने उस बच्चे को फिर से उसके घोंसले में रख दिया और अपनी भूखे परिवार के पास चला गया।

अगले कुछ हफ्ते बहुत मुश्किल से गुजरे। उसने थोड़ा थोड़ा अन्न कर के अपने छोटे छोटे भूखे बच्चों को खिलाया जिनकी पसलियॉ तक गिनी जा सकती थीं। उसकी पत्नी बेचारी खेत खेत जा कर खाने लायक पौधे बीन बीन कर लाती पर उसके अपने खेत की फसल बहुत कम थी।

एक दिन एक चिड़िया उड़ कर उस छोटे भाई के घर की छत पर आ बैठी। यह चिड़िया उसी चिड़िया का बच्चा था जिसकी सहायता उसने कुछ दिन पहले की थी। उसकी टॉग अब ठीक हो गयी थी और वह अब उड़ सकती थी।

वह चिड़िया उसकी छत पर बैठी उसको धन्यवाद देती हुई कोई मीठा गाना गा रही थी। फिर उसने उसके घर के तीन चक्कर लगाये और एक बड़ा सा बीज नम जमीन के टुकड़े पर डाल दिया।

परिवार ने उस बीज को देखा। उसकी सबसे छोटी लड़की उसको छूना चाहती थी पर उसके पिता ने उसका हाथ पकड़ कर

उसको ऐसा करने से रोक लिया। देखते देखते ही उस बीज में से जड़ें निकल कर जमीन में घुसने लगीं और उसमें से पेड़ निकल कर ऊपर की तरफ बढ़ने लगा।

वह भूखा परिवार उस बीज की तरफ आश्चर्य से देखता रहा कि वह छोटा सा बीज किस तरह एक बेल की शक्ल में बदलता जा रहा था। और वह बेल अभी भी बढ़ती जा रही थी।

मिनटों के अन्दर उस पर कई तरबूज लगने लगे। और एक घंटे के अन्दर तो वे पक कर तोड़ने लायक भी हो गये थे।

उनको देख कर वे भूखे बच्चे चिल्लाये — "पिता जी, क्या हम ये जादुई तरबूज खा सकते हैं?"

खुशी से हॅसते हुए उस छोटे भाई ने उस बेल से एक तरबूज तोड़ लिया और उसे काटा। उसके पास ही उसकी पत्नी भी बैठी थी। जैसे ही उस छोटे भाई ने उस तरबूज को काटा तो दोनों का मुॅह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

वह तरबूज तो सोने के सिक्कों से भरा हुआ था। काटते ही वे सोने के सिक्के उन सबके पैरों के पास बिखर गये। हर तरबूज सोने के सिक्कों से भरा हुआ था।

छोटे भाई का गरीब परिवार तो बहुत अमीर हो गया था। अब उनके पास बहुत सारा खाना था। उन्होंने अब एक बहुत बड़ा घर

खरीद लिया था जिसमें बहुत सारी जमीन थी। उनके पास अब नये नये कपड़े थे पहनने के लिये। सब कुछ कितना अच्छा था।

जब बड़े भाई ने अपने छोटे भाई की अच्छी किस्मत के बारे में सुना तो वह तो जलन से भर गया और वैसी ही एक जादू की चिड़िया को ढूँढने में लग गया जिससे वह अमीर बन जाता।

वह ज़्यादा ताकत, ज़्यादा पैसे और ज़्यादा जमीन के लालच में कई दिनों तक उस जादुई चिड़िया की खोज में इधर उधर घूमता रहा। आखिर उसको एक छोटी सी चिड़िया मिली जिसकी टॉग टूट गयी थी।

उसने उसको यह कहते हुए उठा लिया — "मैं तुम्हारी सहायता करूँगा अगर तुम मेरी सहायता करो तो।"

उस छोटी सी चिड़िया ने उसे अपनी अक्लमन्दी भरी ऑखों से घूरा तो उसे उसकी इस झूठी दया में उसका लालची दिल दिखायी दिया।

जब चिड़िया की टॉग ठीक हो गयी तो वह उस बड़े भाई के घर की तरफ उड़ चली। वहॉ जा कर उसने बड़े भाई के सिर के तीन चक्कर काटे और एक बीज उसके नम जमीन के टुकड़े पर डाल दिया।

बड़ा भाई के चेहरे पर जीत की एक हॅसी आ गयी। बीज जमीन पर गिरते ही बढ़ने लगा और वह भी उस बीज को बेल में बड़ा होते देखता रहा।

फिर उसमें भी तरबूज लगने शुरू हुए और देखते देखते पक कर तोड़ने लायक हो गये। वे इतने बड़े हो गये थे जितना बड़ा कि कोई आदमी होता है।

जैसे जैसे उन तरबूजों का साइज बढ़ता जाता था वह बड़ा भाई और ज़्यादा खुश होता जाता था क्योंकि उसको लग रहा था कि तरबूज जितना बड़ा होगा उसके अन्दर पैसा उतना ही ज़्यादा होगा और इस तरह वह अपने छोटे भाई से और भी ज़्यादा अमीर हो जायेगा।

जब वे तरबूज तोड़ने लायक हो गये तो सबसे पहले उसने सबसे बड़ा वाला तरबूज तोड़ लिया और उसको काटा। तुरन्त ही उसमें से लड़ने वालों की एक सेना निकल पड़ी और उसके ऊपर अपने डंडे बरसाने लगी। उन्होंने उसके सारे पैसे ले लिये और उसको जमीन पर रोता हुआ छोड़ कर वहॉ से चलते बने।

बड़े भाई को यह विश्वास ही नहीं था कि सारे तरबूज ऐसे ही होंगे सो उसने दूसरा सबसे बड़ा तरबूज तोड़ा और उसको काटा। उसने सोचा शायद इसमें इतना सारा सोना चॉदी होगी जो उसकी पहले तरबूज को काटने पर मार लगी थी उसका बदला चुका सके।

पर जैसे ही उसने वह दूसरा तरबूज काटा तो उसमें से बहुत सारे सॉप फुँकार मारते हुए निकल पड़े और सीधे उसके घर में जा कर घुस गये।

फिर उसने तीसरा तरबूज काटा तो उसमें से बहुत सारे चूहे निकल पड़े जो उसके पास से हो कर निकल गये।

अब तक और तरबूज ज़्यादा पक गये थे सो वे सब अपने आप ही फूटने लगे। उनमें से बहुत तरह के कीड़े मकोड़े, मकड़े, चींटियॉ और बहुत तरह के काटने वाले और रेंगने वाले जानवर निकल पड़े और उसके सारे घर में फैल गये।

उन सबने मिल कर उसका सारा घर नष्ट कर दिया। वह बेचारा बड़ा भाई अपना घर और जमीन छोड़ कर वहॉ से भाग लिया। आज वह अपने छोटे भाई से उस समय से भी गरीब था जब वह पहले कभी गरीब हुआ करता था।

अब वह गॉव गॉव भीख मॉगता हुआ घूम रहा था तो एक दिन उसने भीख मॉगते हुए ऊपर देखा तो देखा कि उसका छोटा भाई पास ही हल लिये खड़ा था।

बड़े भाई की निगाहें शर्म से नीचे झुक गयीं और जब तक नीचे झुकती चली गयीं जब तक कि वे उस हल के फल तक नहीं पहुँच गयीं।

वह उस फल की तरफ देखते हुए बोला — "मेरा सब कुछ बरबाद हो गया मेरे भाई। मेरे पास अब कोई जगह नहीं है जहॉ मैं रह सकूँ। मेरे पास खाना भी नहीं है। मैं तुमको बिल्कुल दोष नहीं दूँगा अगर तुम भी मुझको निकाल दोगे।"

तभी उसने अपने कंधे पर एक कोमल हाथ का हल्का सा दबाव महसूस किया। उसने सुना उसका छोटा भाई कह रहा था — "आओ भाई आओ। आओ हम एक नयी फसल बोयें। क्योंकि जो हम बोयेंगे वही हम खायेंगे।"

बड़े भाई की ऑखों में ऑसू आ गये और उसने छोटे भाई के हाथों से हल ले लिया और उसके साथ मिल कर खेती करने लगा।

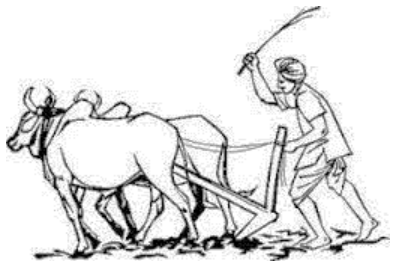

11 एक राजा जो बूढ़ों से नफरत करता था[23]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के लाओस देश में कही सुनी जाती है।

बहुत दिनों पहले की बात है कि दूर देश में एक बहुत ही अक्लमन्द राजा रहता था। वह अपने आस पास बहुत सारे बड़े बूढ़ों को रखता था ताकि वह अपने फैसले करने के लिये उनसे उनकी सलाह ले सके।

उसका राज्य बहुत अमीर था और उसके राज्य के सभी लोग उससे बहुत खुश थे।

उसके राज्य में सब कुछ ठीक था सिवाय एक चीज़ के। उसके अपने बेटे को अपने महल के आस पास वे बूढ़े आदमी पसन्द नहीं थे, खास कर के वे बूढ़े लोग जो उसके पिता से मिलते थे।

एक दिन उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, आप अपने पास इन सफेद बालों वाले लोगों को क्यों लगाये रखते हैं? ये लोग खुद तो बहुत पुराने ख्यालों के हैं ही और साथ ही दूसरी कोई नयी चीज़ देखना भी नहीं चाहते।"

[23] The King Who Hated Old People – a folktale from Laos, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=120
Retold and written by Mike Lockett.

सच तो यह था कि उन बूढ़े लोगों को देख कर राजकुमार को लगता था कि उसका पिता बूढ़ा हो रहा है। बूढ़े राजा ने अपने बेटे को बहुत समझाने की कोशिश की कि किस तरह से ये बूढ़े लोग अच्छे बुरे समय से गुजरने के बाद होशियार हो जाते हैं पर उसका बेटा उसकी कोई बात सुनना समझना ही नहीं चाहता था।

वह बोला — "जब मैं राजा बनूँगा तब सब कुछ बदल जायेगा।"

इस बात को सच होने में ज़्यादा समय नहीं लगा। बूढ़ा राजा एक दिन बीमार पड़ा और कुछ ही दिन में मर गया। उसके मर जाने के बाद उसके नौजवान राजकुमार बेटे को राजा बना दिया गया।

जैसे ही वह राजा बना उसने वही किया जो वह कहा करता था। उसके राज्य में बहुत सारी चीज़ें बदल गयीं। उसने सलाह लेने के लिये अपने साथ नौजवानों को रख लिया क्योंकि वह अपने पिता की तरह से बूढ़ा होना नहीं चाहता था।

राज्य के सारे बूढ़े लोगों को राजा ने राज्य छोड़ने का हुकुम दे दिया। उन लोगों ने राजा से बात करने की कोशिश भी की पर राजा ने किसी से भी बात नहीं की। वह तो नौजवान सलाहकारों से घिरा हुआ था और बूढ़े लोग उन लोगों के लिये बेकार थे।

राजा का दिमाग बदला नहीं जा सका। राज्य के सारे लोगों ने अपने अपने बूढ़े माता पिता को दूर किसी गॉव में रहने के लिये भेज दिया। कुछ बैलगाड़ी में बिठा कर अकेले छोड़ दिये गये।

कुछ को सहायता की जरूरत थी सो उनके बेटे बेटियॉ उनको उठा कर ले गये। सारे राज्य में लोग रो रहे थे – सिवाय एक नौजवान के।

राजा के नये नौजवान सलाहकारों में से एक सलाहकार ने राजा की बात नहीं मानी। उसने अपने बूढ़े पिता को राज्य से बाहर नहीं निकाला बल्कि अपने घर में ही एक गुप्त कमरे में छिपा दिया।

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, मैं आपको कहीं नहीं भेज सकता। जब तक मैं बड़ा हुआ आपने मुझे वह सब कुछ दिया जिसकी मुझे जरूरत थी अब आपकी देखभाल करने की मेरी बारी है इसलिये मैं अब आपको कहीं नहीं भेज सकता।" और उसका पिता वहीं छिपे रूप से रहता रहा।

राजा के बूढ़े लोगों को बाहर भेज देने के कुछ समय बाद ही पास के एक ताकतवर राज्य से एक दूत आया।

उसने राजा से कहा — "हमारे राजा ने आपके पास एक सन्देश भेजा है। मैं अपने हाथ में यह एक छोटे से पेड़ की डंडी पकड़े हूँ। हमारे राजा ने पूछा है कि उस डंडी का कौन सा सिरा पेड़ के ऊपर की तरफ का है और कौन सा सिरा पेड़ के नीचे की तरफ का?[24]

अगर आप इसका जवाब ठीक ठीक दे देंगे तो हम आपके राज्य को आजाद छोड़ देंगे और अगर आप इसका ठीक ठीक

[24] The same question was asked by Queen of Sheba from the King Solomon. Read this story in "Sheba kI Rani Makeda", Delhi, Prabhat Prakashan, 2019.

जवाब न दे पाये तो हम अपनी बड़ी सी सेना ला कर आपके राज्य को जीत लेंगे और आपके लोगों को अपना गुलाम बना लेंगे। आपके पास इस सवाल का जवाब देने के लिये सात दिन हैं।"

अब राजा के पास तो सब नौजवान सलाहकार थे सो वे सब इस सवाल का जवाब ढूँढने के लिये इकट्ठा हुए।

राजा बोला — "तुम सब लोग नौजवान हो, होशियार हो। तुम लोग मेरे पिता के सलाहकारों के बेटे हो। मुझे इस पहेली का जवाब ला कर दो ताकि हम लड़ाई से बच सकें और अपने लोगों को दूसरे राजा का गुलाम होने से बचा सकें।"

पर उन लोगों ने तो कभी अपने पिताओं की तरह से खेत जोते नहीं थे और न ही कभी जंगलों में काम किया था। वे उस लकड़ी के बारे में कुछ नहीं बता सकते थे सो उनके पास उस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

जवाब सोचते सोचते उन सबको छह दिन बीत गये पर किसी से कोई जवाब नहीं निकला। उस नौजवान राजा की परेशानी हर अगले दिन ज़्यादा ही बढ़ती जाती थी। वह कोई लड़ाई नहीं चाहता था लेकिन उसके पास उसको रोकने के लिये उस पहेली का कोई जवाब भी नहीं था।

वह नौजवान सलाहकार जिसने अपने पिता को छिपा कर रखा हुआ था एक दिन अपने पिता के पास आया तो बहुत परेशान था।

राज्य के अकेले बूढ़े आदमी ने पूछा — "क्या बात है बेटे, तुम इतने परेशान क्यों हो?"

बेटा बोला — "पिता जी, जल्दी ही अपने पड़ोसी देश से जो हमसे ज़्यादा ताकतवर है हमारी लड़ाई होने वाली है।"

और फिर उसने अपने पिता को उस देश के राजा के भेजे दूत और उसकी पहेली के बारे में सब कुछ बता दिया।

पिता बोला — "बेटे, जैसा मैं कहता हूँ तुम वैसा ही करो और तुम्हारी उस राज्य से कोई लड़ाई नहीं होगी। हमारा राज्य बिल्कुल सुरक्षित रहेगा।"

अगली सुबह, सातवें दिन, वह नौजवान मुस्कुराता हुआ राजा के सामने पहुँचा और बोला — "अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो मैं इस पहेली को हल करने की कोशिश करूँ?"

राजा बोला — "अरे यह भी कोई पूछने की बात है? जल्दी बताओ।"

"तो आप मुझे एक टब पानी मँगवा दें।"

राजा बोला — "भला इसमें ऐतराज की क्या बात है मैं अभी मँगवाये देता हूँ।" उसने तुरन्त ही अपने एक नौकर को पानी भरा टब लाने के लिये कहा और वह नौकर भी वह पानी भरा टब तुरन्त ही ले आया।

उस नौजवान सलाहकार ने उस दूत की लायी हुई वह डंडी उस पानी में डाल दी। पानी में डालते ही उस डंडी का एक सिरा पानी में डूब सा गया और दूसरा सिरा पानी से थोड़ा सा ऊपर उठ गया।

वह नौजवान बोला — "राजा साहब, डंडी का जो सिरा ऊपर की ओर उठ गया है वह सिरा पेड़ के ऊपर की तरफ का है और जो सिरा पानी में डूब गया है वह सिरा पेड़ के नीचे की तरफ का है।"

दूत ठीक जवाब सुन कर बहुत खुश हुआ और राजा को सिर झुका कर अपने राज्य जाने की इजाज़त माँगी ताकि लड़ाई शुरू होने से पहले ही खत्म की जा सके।

दूत अपने राज्य को चला गया और दरबार भी बरखास्त हो गया। तब राजा ने उस नौजवान से पूछा — "तुमको इस सवाल के जवाब का पता कैसे चला जब कि हमारा और कोई सलाहकार इस पहेली का हल पता नहीं चला सका?"

वह नौजवान बोला — "सरकार मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैं अपने पिता को बहुत प्यार करता हूँ और इसी वजह से मैंने आपका हुक्म नहीं माना और अपने पिता को राज्य से बाहर नहीं भेजा।

मैंने उनको अपने घर में छिपा कर रखा हुआ है। वह बूढ़े जरूर हैं पर आज उनकी अक्लमन्दी ने हमारे राज्य को बचा लिया।"

इतना कह कर वह राजा का हुक्म न मानने के लिये किसी भी सजा को मानने के लिये सिर झुका कर चुपचाप खड़ा हो गया। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजा ने उसको कोई सजा नहीं दी।

नौजवान राजा बोला — "इतने सालों तक मैं कितना गलत था। मैं बूढ़ों को केवल इसलिये नफरत करता था क्योंकि मैं सोचता था उनके साथ रहते रहते मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा पर ऐसा नहीं है।

अब मुझे पता चल रहा है कि अक्लमन्दी उम्र और तजुर्बे से आती है। अब मुझे बूढ़े होने और अक्लमन्द होने दोनों की कीमत का पता चल रहा है क्योंकि हम सब नौजवान हैं और कम जानकारी और कम तजुर्बे वाले हैं।"

उसी दिन राजा की तरफ से एक नया हुक्म जारी हुआ कि सारे बूढ़ों को जिनको पहले राज्य से निकाल दिया गया था वापस ले आया जाये जहाँ उनको पूरी इज़्ज़त दी जाये।

उसके बाद जो राजा बूढ़ों से नफरत करता था वह बहुत लम्बी उम्र तक जिया और उसने बहुत सालों तक अक्लमन्दी से राज किया।

12 राजकुमार और फकीर[25]

हालॉकि इस लोक कथा की कोई जगह नहीं दी गयी पर इस कहानी से ऐसा लगता है कि यह फारस देश में कही सुनी जाती होगी।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। एक बार यह राजा बाहर गया और एक चौराहे पर जा कर लेट गया जिससे जो कोई उधर से गुजरता वह उसके ऊपर पैर रख कर जाता।

आखिर एक फकीर उधर से निकला तो उसने राजा से पूछा — "ए आदमी तुम यहॉ क्यों लेटे हुए हो?"

राजा बोला — "यहॉ हजारों आदमी आये और आ कर चले गये। तुम भी आये तुम भी चले जाओ।"

फकीर फिर बोला — "मगर तुम हो कौन?"

राजा बोला — "ओ फकीर मैं एक राजा हूॅ। मेरे पास किसी भी चीज़ की सोने की चॉदी की कोई कमी नहीं है। मुझे जीते हुए भी कितने दिन बीत गये पर मेरे कोई बच्चा नहीं है। इसलिये मैं यहॉ आ गया और यहॉ आ कर लेट गया।

मेरे पाप और अपराध तो बहुत सारे हैं इसी लिये मैं यहॉ आ कर लेट गया हूॅ ताकि लोग मेरे ऊपर से हो कर जा सकें और

[25] The Prince and the Fakir – a folktale from Persia, Asia.
Taken from the Web Site :
http://www.kidsgen.com/stories/folk_tales/the_prince_and_the_fakir.htm

शायद किसी वजह से मेरे सारे पाप धुल जायें और मुझे माफी मिल जाये। भगवान मुझ पर दया करें और मेरे एक बेटा हो जाये।"

यह सुन कर फकीर बोला — "अगर तुम्हारे बेटा हो जाये तो तुम मुझे क्या दोगे?"

राजा बोला — "ओ फकीर जो तुम चाहो।"

फकीर बोला — "चीज़ें और सोना तो मेरे पास भी बहुत है पर मैं तुम्हारे लिये एक प्रार्थना करूँगा जिससे तुम्हारे दो बेटे होंगे। उनमें से एक बेटा मेरा होगा।"

राजा राजी हो गया। फकीर ने दो मिठाई निकालीं और उनको राजा को देते हुए कहा — "ये लो। इनको अपनी उन पत्नियों को दे देना जिन्हें तुम सबसे ज़्यादा प्यार करते हो।"

राजा ने वे मिठाइयॉ ले लीं और उनको अपनी जेब में रख लिया। फकीर फिर बोला — "राजन। मैं एक साल बाद लौटूँगा और जो दो बेटे तुम्हारे पैदा होंगे उन दोनों बेटों में से एक बेटा तुम्हारा होगा और एक बेटा मेरा होगा।"

राजा राजी हो गया। फकीर अपने रास्ते चला गया राजा अपने घर आ गया। राजा के दो रानियॉ थीं उसने वे दोनों मिठाइयॉ उन दोनों को दे दीं।

समय आने पर राजा के दो बेटे हुए। राजा ने उनके लिये धरती के अन्दर कमरे बनवा दिये थे सो उसने उन दोनों बेटों को

वहॉ रख दिया। कुछ समय बीत गया। एक दिन वह फकीर वापस आया और उसने आ कर उससे अपना बेटा मॉगा।

राजा अपने किसी भी बेटे को देना नहीं चाहता था सो उसने अपनी दासियों के दो बेटे ला कर उसे दे दिये। जब फकीर ऊपर बैठा हुआ था तो राजा के अपने बेटे उसके नीचे के कमरे में बैठे हुए खाना खा रहे थे।

तभी एक भूखी चींटी वहॉ आयी और एक चावल का दाना ले कर अपने बच्चों के लिये ले कर जा रही थी। तभी एक उससे ज़्यादा ताकतवर चींटी आयी और उसने उसका वह चावल का दाना लेने के लिये उस पर हमला किया।

तो पहली चींटी बोली — "तुम मेरा यह दाना मुझसे क्यों छीन रही हो। मैं तो पहले से ही लॅगड़ी हूॅ और मुझे अभी केवल यह एक दाना मिला है जिसे मैं अपने बच्चों को खिलाने के लिये ले कर जा रही हूॅ।

राजा के बेटे तो नीचे वाले कमरे में बैठे खाना खा रहे हैं। तुम वहॉ जा कर वहॉ से और चावल के दाने ला सकती हो। तुम मुझसे मेरा दाना क्यों छीनती हो?"

यह सुन कर दूसरी चींटी ने उसे छोड़ दिया और उसने उससे चावल नहीं छीना बल्कि वह राजा के बेटों के पास जहॉ वे खाना खा रहे थे चावल लाने के लिये चली गयी।

फकीर ने जब यह सुना तो राजा से कहा — "राजन ये तुम्हारे बच्चे नहीं है। जाओ और उन बच्चों को ले कर आओ जो नीचे वाले कमरे में बैठे खाना खा रहे हैं।"

यह सुन कर राजा नीचे गया और अपने बच्चों को ले कर आ गया। फकीर ने उसके बड़े बेटे को चुना और उसको ले कर चला गया। जब वह उसको ले कर घर आ गया तो उसने उसे ईंधन लाने के लिये भेजा।

सो राजा का बेटा गाय का गोबर लाने के लिये बाहर चला गया। जब उसने कुछ गोबर इकट्ठा कर लिया तो वह उसे ले कर घर वापस लौटा। फकीर ने राजा के बेटे की तरफ देखा और उसने गोबर में आग जला कर उसके ऊपर एक बड़ा सा बर्तन रख दिया।

फिर उसने उसको अपने पास बुलाया "आओ मेरे शिष्य।"

राजा का बेटा बोला — "पहले गुरू बाद में चेला।"

फकीर ने उसको एक बार फिर बुलाया दोबारा बुलाया तिबारा बुलाया पर हर बार उसने यही जवाब दिया "पहले गुरू बाद में चेला।"

इस पर फकीर उसके ऊपर दौड़ा ताकि वह उसको पकड़ कर बर्तन में डाल सके। उस बर्तन में करीब करीब सौ गैलन तेल था और उसके नीचे आग जल रही थी।

तब राजा के बेटे ने फकीर को उठाया और एक झटके से उस बर्तन में फेंक दिया। तेल के अन्दर गिरते ही वह उसमें जल कर मर गया। वह तो तला हुआ मॉस बन गया था।

तभी उसने देखा कि फकीर की एक चाभी वहॉ पड़ी हुई है। उसने उस चाभी को उठा लिया और उससे उसके घर का दरवाजा खोला। उसने देखा कि उसके घर में तो बहुत सारे आदमी कैद थे। दो घोड़े खड़े हुए थे दो सिमूर्ग[26] चिड़ियें थीं दो चीते भी थे।

राजा के बेटे ने सबको छोड़ दिया वे सब भगवान को धन्यवाद देते हुए वहॉ से चले गये। उसने जेल में बन्द सभी कैदियों को छोड़ दिया। उसने अपने साथ दो घोड़े लिये दो चीते लिये दो कुत्ते लिये दो सिमूर्ग चिड़ियें लीं और वहॉ से किसी दूसरे देश चल दिया।

जब वह सड़क पर जा रहा था तो उसने एक गंजे आदमी को अपने ऊपर देखा जो बछड़ों को घास चरा रहा था। वह उससे बोला — "क्या तुम थोड़ा सा भी लड़ सकते हो?"

राजा के बेटे ने जवाब दिया — "जब मैं बहुत छोटा था तब मैं थोड़ा बहुत लड़ सकता था पर अगर अब मुझसे कोई लड़ना चाहे तो मैं इतना भी नामर्द नहीं जो मैं पीठ फेर लूँ। आओ मैं तुमसे लड़ सकता हूँ।"

[26] Simourg bird is a mythical bird of Persia and Iran. It is sometimes equated with the mythical bird Phoenix and Huma. This bird is mentioned by King Solomon while explaining the miracle of the wooden log which helped him breaking the huge size of stones for his famous temple to the Queen of Sheba. To read this inastance read "Sheba Ki Rani Makeda" by Sushma Gupta, Delhi: Prabhat Prakashan. 2019.

वह गंजा आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हें उठा कर फेंक दूँ तो तुम मेरे नौकर हो जाना और अगर तुम मुझे उठा कर फेंक दोगे तो मैं तुम्हारा नौकर हो जाऊँगा।" इस शर्त पर दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। राजा के बेटे ने उसे उठा कर फेंक दिया।

इस पर राजा के बेटे ने कहा — "तुम हार गये इसलिये अब तुम मेरे नौकर हुए। मैं अपने जानवर यहाँ छोड़ देता हूँ – मेरी सिमूर्ग चिड़ियें मेरे चीते मेरे कुत्ते और मेरे घोड़े।

मैं तब तक शहर देख कर आता हूँ। मेरा चीता मेरे इन जानवरों की रखवाली करेगा। और क्योंकि तुम मेरे नौकर हो इसलिये तुम भी यहीं मेरी इन चीज़ों के पास ही रहो।"

राजा का बेटा शहर देखने चला गया। चलते चलते वह एक तालाब के पास आया तो उसने सोचा कि वह वहाँ रुक कर उस तालाब में नहा ले सो उसने अपने कपड़े उतारने शुरू किये।

उस समय उस देश के राजा की बेटी अपनी छत पर बैठी हुई थी। उसने उसके शाही निशान देखे तो वह बोली — "यह आदमी तो राजा है। अगर मुझे शादी करनी है तो मैं इसी से शादी करूँगी और किसी से भी नहीं।"

सो वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह शादी करना चाहती है। उसके पिता ने कहा यह तो बहुत अच्छी बात है।

तब राजा ने एक फरमान निकाला "सारे छोटे और बड़े आदमी आज मेरे दरबार में हाजिर हों क्योंकि राजा की बेटी अपना पति चुनना चाहती है।"

यह सुन कर उस देश के सारे लोग राजा के दरबार में हाजिर हुए। यह यात्री राजकुमार भी वहॉ गया। इसने एक फकीर के से कपड़े पहन रखे थे और सोचा कि यह भी इस रस्म में जरूर जायेगा सो यह भी अन्दर जा कर बैठ गया।

राजा की बेटी आयी और आ कर ऊपर के बरामदे में आ कर बैठ गयी। उसने चारों तरफ निगाह डाली तो देखा कि वह राजकुमार एक फकीर के वेश में वहॉ बैठा हुआ है।

राजकुमारी ने अपनी दासी से कहा — "ले यह मेंहदी[27] का कटोरा ले और देख उस यात्री के पास जा जो फकीर के वेश में बैठा हुआ है और इस कटोरे में से उसके ऊपर मेंहदी छिड़क दे।"

दासी ने राजकुमारी के हुक्म का पालन किया। वह वहॉ गयी और उसके ऊपर मेंहदी छिड़क आयी। लोग बोले "लगता है कि राजकुमारी की दासी से कहीं कोई गलती हो गयी है।"

यह सुन कर राजकुमारी बोली — "इसमें दासी ने कहीं कोई गलती नहीं की है। इसमें तो उसकी मालकिन ने ही गलती की है।"

यह सुन कर राजा ने उस फकीर से अपनी बेटी की शादी कर दी जो सचमुच में एक फकीर न हो कर एक राजकुमार था। जो उस

[27] Translated for the word "Henna".

देश की किस्मत में लिखा हुआ था वही हुआ। उन दोनों की शादी हो गयी।

राजा ने यह शादी कर तो दी थी पर वह मन ही मन बहुत दुखी था क्योंकि वहॉ जब इतने सारे सरदार और कुलीन लोग बैठे हुए थे तो उसकी बेटी ने उनमें से किसी एक को क्यों नहीं चुना। बल्कि उस फकीर को चुना। पर उसने अपना यह विचार अपने मन में ही रखा।

एक दिन यात्री राजकुमार ने कहा कि राजा के सब दामाद आयें और आज मेरे साथ शिकार को चलें। राजा के दामादों और दूसरे लोगों ने सोचा कि यह फकीर क्या शिकार करेगा।

खैर वह सब शिकार के लिये तैयार हुए और एक तालाब पर मिलने का प्रोग्राम बनाया। यात्री राजकुमार अपने चीतों और कुत्तों के पास गया और उनसे कई सारे हिरन और दूसरे जानवर मार लाने के लिये कहा।

फिर ये शिकार ले कर वह उसी तालाब पर आया जहॉ उनको मिलना था। और दूसरे राजकुमार और राजा के दामाद भी वहॉ आ गये पर उनके पास कोई शिकार ही नहीं था जबकि इस नये दामाद के पास बहुत सारे शिकार थे।

वहॉ से फिर वे सब अपने अपने शिकारों के साथ शहर लौटे और अपने अपने शिकार दिखाने के लिये राजा के पास गये।

राजा के कोई बेटा नहीं था। तब नये दामाद ने राजा को बताया कि वह खुद भी एक राजकुमार है। यह सुन कर राजा तो बहुत खुश हो गया और उसको हाथ पकड़ कर गले लगा लिया।

उसने उसको अपन पास बिठाया और कहा — "ओ राजकुमार मैं भगवान का धन्यवाद करता हूँ कि उसने तुम्हें यहाँ भेज दिया और तुम हमारे दामाद बने। मैं बहुत खुश हूँ और अपना राज्य तुम्हें देता हूँ।

13 अमीन और गुल[28]

एक बार की बात है कि एशिया महाद्वीप के फारस देश[29] के एक शहर में अमीन नाम का एक आदमी रहता था। एक बार वह अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये अपने शहर से बाहर निकला।

वह इतना गरीब था कि उसके पास सफर में ले जाने के लिये कुछ भी नहीं था पर वह अक्लमन्द बहुत था।

उसके घर में केवल एक कच्चा अंडा था और एक नमक का डला। सो उसने वे दोनों उठाये और अपने सफर पर निकल पड़ा। उसके पास कोई चाकू छुरी या कटार जैसा कोई हथियार भी नहीं था जिससे वह सफर में चोर लुटेरों से अपनी रक्षा कर सकता।

वह मैदानों को पार कर के आगे बढ़ता गया। चलते चलते उसे शाम हो गयी। तभी उसने देखा कि सामने से बहुत ही भयानक एक गुल[30] चला आ रहा है। वह एक बड़े पेड़ की तरह बहुत बड़ा था और अँधेरे में बहुत ही बदसूरत दिखायी दे रहा था।

उस समय अमीन के आस पास कोई ऐसा पेड़ या चट्टान भी नहीं थी जिसके पीछे छिप कर वह अपनी जान बचा लेता सो वह अपनी बहादुरी दिखाता हुआ सीधा उस गुल के सामने चल दिया।

---

[28] Amin and Gul – a folktale from Persia, Asia.

[29] Persia

[30] Gul or Ghul or Ghoul is an Arabic language word used in Arab, Iran, Iraq etc countries. It is used for a bad man who takes out the dead bodies from the graves and eats them.

गुल ने अपनी पेड़ के तने जैसी मोटी बॉह से अमीन का रास्ता रोकते हुए उससे कहा — "ए। तुम कहॉ जा रहे हो?"

अमीन निडर हो कर बोला — "देखो न। मैं कितना ताकतवर हूँ। इसलिये मैंने सोचा कि ज़रा दुनियॉ में बाहर निकल कर अपने से ज़्यादा ताकतवर गुल की तलाश की जाये।"

अमीन की यह बात सुन कर गुल हो हो कर के हॅस पड़ा। उसकी हॅसी की आवाज से चारों दिशाऐं गूॅज उठी। काफी देर हॅसने के बाद जब उसकी हॅसी रुकी तो वह बोला — "मगर तुम मुझसे तो ज़्यादा ताकतवर दिखायी नहीं देते।"

"हो सकता है पर तुम भी तो गुल जितने बड़े नहीं दिखायी पड़ते।" यह सुन कर गुल नाराज हो गया क्योंकि उसे अपने शरीर और बल दोनों के ऊपर बहुत घमंड था।

अमीन कहने लगा — "कितनी अच्छी बात है कि हम लोग आपस में मिल गये हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि अब तुम यह जरूर जानना चाहोगे कि हम लोगों में से कौन ज़्यादा ताकतवर है तुम या मैं?"

और गुल के कुछ कहने से पहले ही अमीन झुका और नीचे से अंडे के बराबर का एक सफेद पत्थर उठा लिया और उसको कान के पास हिलाने लगा।

फिर बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि इसके अन्दर कुछ पानी जैसा भरा है जो इसमें बोल रहा है। मैं उसकी आवाज बखूबी सुन

सकता हूँ। जरा तुम इसको अपने हाथ से तोड़ो तो और देख कर मुझे बताओ कि इसमें क्या है।" और यह कहते के साथ ही उसने वह पत्थर गुल के हाथों में थमा दिया।

गुल वह पत्थर अपनी मुट्ठी में दबा कर तोड़ने की कोशिश करने लगा। इतनी ही देर में चुपके से अमीन ने अपनी जेब से अंडा निकाल लिया।

काफी मेहनत के बाद भी जब गुल से वह पत्थर न टूटा तो उसका चेहरा लाल पड़ गया और वह बोला — "इसे तोड़ना तो नामुमकिन है।"

"क्या? नामुमकिन है? और तुम कहते हो कि तुम बहुत ताकतवर हो। पर यह तो बहुत आसान है। लाओ। यह पत्थर मुझे दो देखो मैं तोड़ता हूँ यह पत्थर।"

कह कर अमीन ने गुल से वह पत्थर ले लिया और दूसरे ही पल गुल ने चटकने की आवाज सुनी और गुल ने देखा कि अमीन के हाथों से गाढ़े पीले रंग का पानी निकल रहा है। गुल की समझ में कुछ नहीं आया।

"मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता पर कोई बात नहीं अगर तुम वह पत्थर नहीं तोड़ सके तो मैं तुम्हें दूसरा पत्थर देता हूँ। तुम उसको तोड़ कर देखो।" कह कर अमीन फिर नीचे झुका और अच्छी तरह से देखने का बहाना करते हुए एक और पत्थर उठा लिया।

उसको गुल को दिखाते हुए बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि यह नमक का बना पत्थर है। ज़रा इसे अपनी मुट्ठी में भींच कर तोड़ो तो।"

एक बार फिर गुल ने उस पत्थर को तोड़ने की कोशिश की और इस बीच में अमीन ने इस बार नमक का टुकड़ा अपनी जेब से निकाल लिया।

काफी समय के बाद भी जब गुल वह पत्थर न तोड़ सका तो अमीन बोला — "ओह। कितनी अजीब बात है कि न तो तुम वह पत्थर तोड़ सके और न ही यह पत्थर। लगता है कि तुम आसान काम भी नहीं कर सकते। लाओ मुझे दो वह पत्थर। मैं तोड़ता हूँ उसे।"

एक बार फिर गुल ने अमीन का पत्थर अमीन को वापस कर दिया और अमीन ने अगले ही पल उसे मुट्ठी में भींच कर तोड़ दिया।

गुल उसकी मुट्ठी में झाँकते हुए बोला — "मैं नहीं मानता कि यह नमक है।"

"चख कर देख लो न।"

गुल ने उसे चखा "हाँ स्वाद तो नमक का ही है। सचमुच तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो मगर क्योंकि अब अँधेरा हो चला है इसलिये मैं अभी तुम्हारी किसी भी बात पर विश्वास नहीं कर सकता। अब तुम मेरे घर चलो वहाँ खाना खायेंगे और आराम करेंगे

तब फिर कल सुबह देखेंगे कि हम दोनों में से कौन ज़्यादा ताकतवर है।"

जैसा कि तुम लोग सोच सकते हो अमीन गुल के हाथों में सुरक्षित नहीं था इसलिये वह उसके साथ जाना नहीं चाहता था मगर वह यह भी जानता था कि ऐसी जगह में वह गुल से बच कर कहीं भाग भी नहीं सकता था। सो वह खुशी खुशी गुल के साथ चल पड़ा।

अमीन को गुल के साथ चलने के लिये दौड़ना पड़ रहा था। आखिर वे उस मैदान के दूसरे किनारे पर पहुँच गये जहाँ एक ऊँची चट्टान खड़ी थी। यहीं एक गुफा में गुल का घर था।

अन्दर चल कर गुल ने आग जलायी और छह बैलों की खालों को सिल कर एक थैला बनाया और वह थैला अमीन को दे कर बोला — "जब तक मैं थोड़ी लकड़ी और ले कर आऊँ तब तक तुम गुफा के पीछे वाले मोड़ के पास के नाले से इस थैले में पानी भर लाओ।"

गुल तो यह कह कर चला गया और अमीन यह सोचने लगा कि यह थैला तो वह खाली भी नहीं उठा सकता था फिर वह भरा हुआ तो क्या आधा थैला पानी भी नहीं ला सकता। आखिर वह किसी तरह वह उस थैले को घसीटते हुए पानी के पास ले गया।

वहॉ उसने देखा कि पहाड़ियों से बहुत ही साफ और अच्छा पानी निकल रहा है। अमीन झुक कर गीली धरती कुरेदने लगा तभी उसने गुल के पैरों की आवाज सुनी।

गुल लकड़ी ले कर आ गया था उसने वह लकड़ी आग में डाल दी जिससे आग और तेज़ हो गयी। पर अमीन ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह अपना काम करता रहा।

गुल चिल्लाया — "तुम काम करने में कितने आलसी हो। क्या हुआ है तुमको? मैंने केवल चावल बनाने के लिये पानी लाने को कहा था तुमसे और तुम अभी तक वहीं बैठे हो। पानी ले कर जल्दी आओ न।"

अमीन बोला — "हॉ यह थैला तो मैं कभी का भर कर ले आता। मैं तो इससे दोगुना भारी बोझा भी उठा सकता हूॅ लेकिन मुझे यहॉ लाने के लिये खाना खिलाने के लिये और रात में शरण देने के लिये मैं बदले में तुम्हारे लिये कुछ करना चाहता हूॅ।"

"मगर तुम मेरे लिये अभी तक पानी तक तो लाये नहीं और वहॉ बैठे बैठे जमीन घूरे जा रहे हो। क्यों?"

अमीन ने कुछ गम्भीर हो कर कहा — "तुम हो गुल, और जैसा कि तुम जानते हो मैं हूॅ आदमी, और आदमी अपनी ताकत के साथ साथ दिमाग का भी इस्तेमाल करता है। इस समय मैं यही कर रहा हूॅ। देखो मैं तुम्हारे लिये एक नहर बना रहा हूॅ।

इस नहर से पानी तुम्हारी गुफा में अपने आप आ जायेगा। नहर बन जाने के बाद मैं इस पर एक फाटक वाला बॉध बना दूँगा जिससे जब तुम चाहो तो पानी ले सको और जब चाहो उसे बन्द कर सको। इसलिये अब तुम्हें पानी के लिये यहॉ से थैला भर कर पानी गुफा में नहीं ले जाना पड़ेगा।"

गुल बोला — "ओ बेवकूफ। यह सब बेवकूफी है और फिर इस समय तुम्हें यह काम शुरू नहीं करना चाहिये था जबकि हम लोग भूखे हैं।" गुल ने यह कह कर पानी से भरा वह थैला फूल की तरह उठाया और गुफा की ओर चल दिया।

अमीन बोला — "मगर मैं तो पहले अपनी नहर पूरी करना चाहता हूँ।"

"यह प्यारा काम तुम सुबह करना। अभी तो मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है सो पहले खाना, फिर सोना और फिर कुछ और काम।"

जब वे खाना खा रहे थे तो अमीन ने अपनी शान में लम्बी चौड़ी कहानियॉ सुनायीं कि वह कितना ताकतवर था। गुल यह सब सुनता तो रहा मगर यह न सोच सका कि वह इन कहानियों पर विश्वास करे या नहीं। मगर यह वह निश्चय कर चुका था कि सुबह होने से पहले ही वह इस अजीब आदमी का खात्मा कर देगा।

जब वे लोग सोने के लिये लेटे तो अमीन ने तुरन्त सो जाने का बहाना किया परन्तु वह सोया नहीं और गुल के सो जाने का इन्तजार करता रहा।

जब गुल खर्राटे भरने लगा तो अमीन अपने बिस्तर से उठा और चावल का एक बोरा उठा कर अपने सोने की जगह रख दिया। उसने उस बोरे को एक चादर ओढ़ा दी और खुद छिप गया।

अगले दिन जब अभी दिन पूरी तरीके से निकला भी नहीं था कि गुल उठा और उसने एक पेड़ का तना लिया और अमीन के बिस्तर के पास आया।

रुक कर उसने वहॉ कुछ पल इन्तजार किया और फिर पक्का करने के बाद कि अमीन सो रहा है, क्योंकि चावल का बोरा तो हिल नहीं रहा था सो उसने समझा कि अमीन सो रहा है, उसने अमीन को उस तने से सात बार मारा और खुशी खुशी अपने बिस्तर में जा कर सो गया।

दिन निकलने पर अमीन उठा और उसने गुल को जगाया और बोला — "तुम्हें परेशान करने के लिये मैं माफी चाहता हूॅ परन्तु तुम्हारी गुफा में रात में एक कीड़ा भुनभुना रहा था।"

गुल आश्चर्य के साथ उठा कि उसका साथी ज़िन्दा था। उसको यह भी लगा कि अमीन सचमुच ही बहुत ताकतवर था जो उस भारी तने की सात बार मार खा कर भी ज़िन्दा था क्योंकि उस तने की

मार से तो हाथी भी मर जाता। और अमीन के अगले शब्दों ने तो गुल को और भी ज़्यादा डरा दिया था।

अमीन ने कहा — "ओ ताकतवर गुल। वह कीड़ा मेरे कम्बल से धीरे से सात बार टकराया। मैंने खुद गिना। ऐसा लगा जैसे वह मुझे उठाना चाहता था। वह कीड़ा कौन सा हो सकता है गुल?"

बिना कुछ बोले गुल उठा और गुफा से भाग लिया। अमीन अब गुल की गुफा में अकेला था। इतना उसे पता था कि वह अभी वापस आयेगा और जैसा कि तुम्हें मालूम है अमीन के पास अपनी रक्षा के लिये कोई हथियार तो था नहीं।

अमीन ने जल्दी जल्दी गुफा में इधर उधर देखना शुरू किया कि शायद उसे कोई हथियार मिल जाये। उसे वहॉ एक बन्दूक़ कुछ कारतूस और कुछ बन्दूक का पाउडर मिल गया।

उसे विश्वास नहीं था कि कारतूस गुल के शरीर में घुस सकता था या नहीं पर वह क्या करता उसको तो बस वहॉ यही कुछ मिला। उसने बन्दूक कारतूसों से भर ली और एक ऐसी जगह जा कर खड़ा हो गया जहॉ से गुल अपने घर आता।

कुछ देर बाद ही उसे गुल आता दिखायी दे गया। उसके हाथ में एक मोटी लकड़ी थी और साथ में एक लोमड़ी। अमीन ने सोचा कि इस लोमड़ी ने ज़रूर ही सारी बातें गुल को बता दी होंगी अब मैं क्या करूँ।

इन कारतूसों से तो मैं केवल लोमड़ी को मार सकता हूँ। सो तुरन्त उसने निशाना बाँधा और लोमड़ी पर गोली चला दी और ज़ोर से बोला — "ओ बेवकूफ लोमड़ी। तूने मेरा कहा नहीं माना तो ले अब तू इसका मजा चख।" लोमड़ी अमीन की गोली खा कर मर गयी।

लोमड़ी को मारने के बाद अमीन बाहर निकल आया और गुल से बोला — "मैंने इस बेवकूफ लोमड़ी को सात गुल लाने को कहा था क्योंकि मुझे वे सात गुल फारस के शाह[31] को देने थे पर यह केवल तुम अकेले को ही लिये चली आ रही थी अब तुम मेरे गुलाम हो। चलो मेरे साथ चलो।"

यह सुन कर और लोमड़ी के साथ जो कुछ हुआ उसको देख कर तो गुल के होश उड़ गये। बिना एक शब्द बोले वह झाड़ियों को फलाँगता हुआ वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

अमीन बहुत खुश हुआ। "अब वह कभी नहीं आयेगा।" यह सोच कर वह गुल की गुफा की ओर चल दिया।

गुल क्योंकि कई सालों से राहगीरों को लूटने का काम करता था इसलिये उसकी गुफा में खजाना भरा पड़ा था। अमीन ने वह सब खजाना उठाया और उसे घर ले गया। उस खजाने से वह सारी ज़िन्दगी आराम से रहा।

[31] Translated for the word "King". King means Shaah in Urdu and Arabic language.

14 सात खुश गॉव वाले[32]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[33] की लोक कथाओं से ली है। यह एक बेवकूफी की मजेदार कथा है। लो तुम भी पढ़ो यह कथा और इन सात खुश गॉव वालों की बेवकूफी पर हॅसो।

फिलीपीन्स के एक गॉव में एक बार सात खुशदिल आदमी रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि काम से एक दिन की छुट्टी ले कर मछली पकड़ने के लिये जाया जाये।

सो सुबह सुबह वे सब गॉव के बाहर इकट्ठे हो गये। उनके साथ साथ उनमें से एक आदमी की पत्नी भी थी जो उनको वहॉ तक छोड़ने आयी थी।

उन्होंने उससे कहा — "गॉव के लोगों से कहना कि वे जल्दी ही आग जला कर याम[34] भून लें और रोटी बना लें।

---

[32] The Seven Happy Villagers – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=98
Retold and written by Mike Lockett.
[This story is very similar to "Nau Bhai" told in Ethiopia. Read this story in the Book "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta. India, Prabhat Prakashan. 2017.]

[33] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards West to Indian Peninsula.

[34] Yam is a tuber vegetable commonly grown and found in tropics. See its picture above.

हम लोग सारे गॉव वालों के लिये काफी मछलियॉ ले कर आयेंगे। फिर हम लोग सब मिल कर खुशियॉ मनायेंगे। जब तक आदमी ज़िन्दा है तब तक वह खुशियॉ मना ले तो अच्छा है।"

वह पत्नी होशियार थी। उसने उन लोगों के गॉव छोड़ने से पहले उन सबको गिन लिया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। हॉ ठीक है तुम सब सात ही हो और तुम सब यहॉ हो।

अब जाओ अपना दिन आनन्द से बिताओ और जब तुम लोग आ जाओगे तो सारे गॉव वाले खुशियॉ मनाने के लिये इकट्ठे होंगे।"

सातों आदमी गॉव से जंगल के रास्ते होते हुए वहॉ चल दिये जहॉ उनको मछली पकड़ने के लिये जाना था। वह जगह उनकी एक बहुत ही प्रिय नदी थी।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने मछलियॉ पकड़ीं और खूब खेले जैसे कि वे फिर से बच्चे हो गये हों। वे सारे दिन मछलियॉ पकड़ते रहे।

शाम होने से पहले सबसे बड़ा आदमी बोला — "अब शाम होने वाली है अब हमको घर चलना चाहिये। मुझे भूख भी लग आयी है और मुझे यकीन है कि वहॉ गॉव वालों ने हमारे लिये आग भी जला कर रखी होगी।

जब हम उनके खाने के लिये इतनी सारी मछलियॉ ले कर गॉव पहुॅचेंगे तो गॉव वाले भी कितने खुश होंगे।"

वह सबसे बड़ा आदमी जबसे वह छोटा था तभी से वह उन सब का नेता भी था। सो सबने उसकी बात मान ली और वे सब चलने के लिये तैयार हो गये।

जब वे चलने लगे तो वह नेता बोला — "चलने से पहले हम एक बार अपने आपको गिन तो लें कि हम सब यहॉ पर मौजूद हैं या नहीं।"

सो उसने अपने सब दोस्तों को एक लाइन में खड़ा किया और उनको गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह।

अरे। यहॉ तो हम केवल छह ही हैं। हममें से एक तो खो गया। ओह नहीं। जब हमने गॉव छोड़ा था तब तो हम सात थे और अब हम केवल छह ही रह गये हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

असल में वह अपने आपको गिनना भूल गया था।

उससे दूसरा बड़ा बोला — "यह सही नहीं हो सकता। तुमसे जरूर कहीं गलती हुई है। मुझे तो याद नहीं पड़ता कि हममें से कोई नदी में गिरा है। अबकी बार मैं हर एक को गिनता हूँ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिनना शुरू किया — "एक दो, तीन, चार, पॉच, छह। यहॉ तो वाकई छह लोग हैं। तुम ठीक कहते थे। हममें से एक खो गया है।

जब हम लोगों ने गॉव छोड़ा था तब हम लोग सात थे पर अभी तो हम छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक यकीनन नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

वह भी अपने आपको गिनना भूल गया था।

सो उस खोये हुए आदमी को ढूँढने के लिये सारे लोग नदी में कूद पड़े। जब उनको नदी में भी कोई नहीं मिला तो वे नदी में से निकल आये और एक बार फिर किनारे पर आ कर खड़े हो गये।

तीसरा बड़ा आदमी बोला — "इस बार मैं गिनता हूँ। एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह। यह तो सचमुच छह ही आदमी हैं। हममें से एक अभी भी खोया हुआ है।

हम घर से सात चले थे और अब हम छह हैं। अगर हम घर छह ही पहुँचे तो हमारा तो आज का सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा। हममें से एक की पत्नी बहुत दुखी होगी। इसलिये हमको पहले यह पता लगाना ही पड़ेगा कि हममें से कौन डूबा है ताकि हमको यह पता चल सके कि हमें उसकी पत्नी से क्या कहना है।"

जब सारे लोग इस तरह दुखी हो कर खड़े हुए थे तो एक बहुत ही बूढ़ा आदमी वहॉ से जा रहा था।

उसने उन सबको वहॉ उदास खड़े देखा तो बोला — "आज कितना अच्छा दिन है और तुम सब लोग उदास खड़े हो। क्या बात है? आज का दिन तो मछली पकड़ने और ज़िन्दा होने के लिये भगवान को धन्यवाद देने के लिये बहुत अच्छा दिन है।"

एक आदमी बोला — "यह तो आप ठीक कहते हैं पर यही तो परेशानी है। हम लोग जब मछली पकड़ने के लिये गॉव से चले थे तो हम सात थे।

हम लोगों ने सोचा था कि घर वापस जा कर हम लोग खुशियॉ मनायेंगे। पर अब हम लोग केवल छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में डूब गया है। अब हम लोग खुशियॉ कैसे मना सकते हैं जबकि हममें से एक ज़िन्दा नहीं है।"

वह बूढ़ा आदमी बोला — "अच्छा मैं गिन कर देखता हूँ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिना — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। तुम सब तो यहीं हो। जाओ घर जाओ और घर जा कर खुशियॉ मनाओ।"

यह सुन कर सबसे बड़ा आदमी बोला — "तुमको भी हमारे साथ हमारे घर चल कर हमारी खुशियों में शामिल होना चाहिये। तुम ने हममें से एक की ज़िन्दगी बचायी है।"

सो वह बूढ़ा भी उनके साथ उनके गॉव चला गया। इस तरह आखीर में आठ खुश आदमी गॉव लौटे और फिर उन सबने खूब आनन्द मनाया गया। आया न मजा इस कहानी में?

15 चॉद बचाया[35]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[36] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि गहरे समुद्र में एक बहुत बड़ा केंकड़ा[37] रहता था। वह समुद्र का एक बहुत बड़ा जीव था – सबसे बड़ी व्हेल मछली से भी बड़ा। वह समुद्र की तली में एक बहुत बड़े गड्ढे में रहता था।

वह खाना ढूँढने के लिये अपने घर में से दिन में दो बार बाहर निकलता था। जब वह अपना घर छोड़ता था तो उसके घर में तुरन्त ही पानी भर जाता था। क्योंकि वह केंकड़ा बहुत बड़ा था इसलिये समुद्र के किनारे का सारा पानी उसके घर में चला जाता था।

जब केंकड़ा अपना खाना खत्म कर लेता था तब वह अपने गड्ढे में वापस चला जाता था। इससे पानी को फिर से किनारों के बाहर तक फैलना पड़ जाना पड़ता था।

कुछ लोग इसको ज्वार भाटा[38] भी कहते थे।

---

[35] Saving the Moon – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=95 Retold and written by Mike Lockett.

[36] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards East to Indian Peninsula.

[37] Crab. See its picture above.

[38] High Tides and Low Tides

एक शाम एक टापू की राजकुमारी अपने घर के पास ही समुद्र के किनारे टहल रही थी। घूमते घूमते कभी कभी वह समुद्र की तरफ भी देख लेती थी।

कि अचानक उसने समुद्र में एक टापू उभरता हुआ देखा। वह उसको बड़े आश्चर्य से समुद्र में से ऊॅचा और ऊॅचा निकलते हुए देखती रही।

फिर उसने देखा कि वह टापू खड़ा हुआ और समुद्र के किनारे की तरफ आने लगा। अरे वह तो टापू नहीं था वह तो वह बहुत बड़ा वाला केंकड़ा था।

यह केंकड़ा तो उस टापू के सबसे ऊॅचे पेड़ से भी ऊॅचा था जिस पर वह रहती थी और पेड़ से ही क्यों वह तो टापू के सबसे ऊॅचे पहाड़ से भी ऊॅचा था। राजकुमारी ने कोई चीज़ इतनी बड़ी पहले कभी नहीं देखी थी।

पहले उसने उसके आगे वाले दोनों बड़े बड़े हाथ[39] देखे। फिर उसने उसकी बड़ी बड़ी ऑखें देखीं। तो वह केंकड़ा तो आसमान में उगते हुए चॉद को देख रहा था। और वह राजकुमारी बड़े ध्यान से उस केंकड़े के दोनों आगे वाले हाथों को खुलते और बन्द होते देख रही थी। फिर उसने उसका खुलता और बन्द होता मुॅह देखा।

वह समुद्र में से इतनी ज़ोर से ऊपर उठा जैसे वह चॉद को खा जाना चाहता हो। उस बड़े केंकड़े की बड़ी बड़ी लाल लाल ऑखें

[39] Translated for the word “Pinchers” of the crab

आसमान में चढ़ते हुए चॉद का पीछा कर रही थीं। वह चॉद को खाने के लिये बहुत ज़ोर से ऊपर उठ रहा था।

उसने अपने हाथों से उसको पकड़ने की कोशिश की – खटाक़ खटाक। यह आवाज तो बिजली की कड़क की सी आवाज थी।

यह आवाज सुनते ही राजकुमारी घबरा गयी। अगर कहीं उसने चॉद को पकड़ लिया और खा लिया तो? तब तो रात का आसमान हमेशा के लिये अँधेरा हो जायेगा।

टापू के मछियारों के लिये समुद्र सुरक्षित नहीं रहेंगे। टापू के नौजवान लड़के लड़कियॉ फिर चॉदनी रात में हाथ में हाथ डाले नहीं घूम पायेंगे। यह सोच कर वह तो परेशान हो गयी।

राजकुमारी को मालूम था कि आज उसके टापू के लोग एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम कर रहे थे। लोग गा रहे थे, ढोल बजा रहे थे कुछ लोग नाच रहे थे और आनन्द मना रहे थे।

उसको यह भी मालूम था कि टापू के लोग उस केंकड़े को जब तक देख पायेंगे और चॉद खाने से रोक पायेंगे तब तक तो बहुत देर हो चुकी होगी। इसलिये केंकड़े को चॉद को खाने से रोकने के लिये राजकुमारी को सहायता की अभी अभी जरूरत थी।

गॉव वापस जाने का भी समय नहीं था। इसके अलावा वह इतनी ज़ोर से चिल्ला भी नहीं सकती थी कि वहॉ से उसके गॉव वाले उसकी आवाज सुन लें।

अचानक राजकुमारी के दिमाग में एक विचार आया। वह समुद्र के किनारे की तरफ दौड़ी। वहॉ उसको रेत में एक खाली शंख[40] पड़ा मिल गया। उसने वह शंख अपने होठों से लगाया और उसमें ज़ोर से हवा फूँकी तो वह शंख ज़ोर से बज उठा।

राजकुमारी उस केंकड़े के वे आगे वाले हाथ चॉद की तरफ बढ़ते हुए देख रही थी – खटाक, खटाक, खटाक। राजकुमारी ने एक बार फिर ज़ोर से शंख बजाया और फिर उसको बजाती ही रही और वह केंकड़ा भी चॉद के और पास आता ही रहा और आता ही रहा।

अबकी बार राजकुमारी ने अपने पूरे ज़ोर के साथ वह शंख बजाया और जैसे जैसे उस शंख की आवाज कम होती गयी गॉव में बजने वाले ढोल भी बन्द हो गये। गॉव वालों ने शंख की आवाज सुन ली थी।

राजकुमारी ने गॉव की तरफ देखा तो उसने देखा कि लोग अपने हाथों में मशाल लिये हुए समुद्र के किनारे की तरफ चले आ रहे हैं। मशालों की वह लाइन एक लहर की तरह दिखायी दे रही थी जो समुद्र के किनारे की तरफ पहाड़ से नीचे की तरफ चली आ रही थी जहॉ राजकुमारी थी।

[40] Translated for the word “Conch Shell”. See its picture above.

उसने वह शंख एक बार और बजाया और फिर अपने लोगों की तरफ भाग गयी।

लड़ने वाले लोग तलवाऱ चाकू और भाले आदि लिये हुए समुद्र के किनारे पर आ गये। उन्होंने उस तरफ देखा जिधर राजकुमारी इशारा कर रही थी।

उस उतने बड़े केंकड़े को देख कर उन टापू वालों की ऑखों में भी डर छा गया क्योंकि इतना बड़ा केंकड़ा उन्होंने भी पहले कभी नहीं देखा था। जब वह चॉद को पकड़ने की कोशिश कर रहा था तब तो वह पहाड़ से भी ऊॅचा लग रहा था।

उसका एक हाथ तो इतना ऊॅचा पहुॅच चुका था कि बस चॉद को छूने ही वाला था। सब लोगों की सॉसें रुकी हुई थीं। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि चॉद उसके हाथों से फिसल गया और वह केंकड़ा पीठ के बल नीचे गिर पड़ा।

तभी राजकुमारी ने एक लड़ने वाले से एक भाला छीन लिया और समुद्र के किनारे की तरफ दौड़ी जहॉ वह केंकड़ा पलट कर उठने की कोशिश कर रहा था। राजकुमारी उस केंकड़े के पास पहुॅची तो उसके पीछे और लड़ने वाले भी दौड़े।

उसने अपना भाला उस केंकड़े के मुलायम पेट की तरफ ताना और उस केंकड़े के पेट में घुसा दिया। केंकड़े के आगे वाले हाथ बचाते हुए और लड़ने वालों ने भी ऐसा ही किया।

कुछ लड़ने वालों ने उसकी टाँगें काट लीं। एक ने उसका एक पंजा काट लिया दूसरे ने उसका दूसरा पंजा काट लिया। जल्दी ही केंकड़ा मर गया और चाँद बच गया। राजकुमारी की बहादुरी ने चाँद को बचा लिया था।

रात का आसमान आज भी चाँद की रोशनी से चमकता है। जहाज़ आज भी चाँद की रोशनी में चलते हैं। दुनियाँ भर में परिवार आज भी चाँद की रोशनी में केंकड़े के माँस की दावत करते हैं। समुद्र का पानी आज भी किनारों से बाहर और अन्दर बहता है। पर आज वह उस केंकड़े की वजह से नहीं बहता, लोगों का कहना है कि अब वह चाँद की अपनी तरफ खींचने की ताकत से बहता है।

पर उन टापू वालों का विश्वास है कि वह आज भी समुद्र की तली में उस केंकड़े के घर में पानी आने जाने की वजह से ही होता है हालाँकि वह केंकड़ा बहुत दिनों पहले मर चुका है।

16 नर मच्छर क्यों नहीं काटते[41]

एक बार की बात है कि फिलीपीन्स देश में एक बहुत ही अक्लमन्द और बहुत ही बढ़िया आदमी रहता था। वह जानवरों के साथ रहता था और जब भी जानवरों में कोई झगड़ा होता या बहस होती तो वह जज बन कर उनके झगड़े सुलझाता था।

एक बार एक चिड़िया ने उस आदमी से शिकायत की — "जज साहब, जज साहब। मैं क्या करूँ, हर रात यह मेंढक इतना शोर मचाता है कि मैं सो ही नहीं सकती।"

जज बोला — "ठीक है। बुलाओ। मेंढक को बुलाओ। हम पता करेंगे कि वह तुमको परेशान क्यों करता है।"

जल्दी ही मेंढक जज के सामने हाजिर हो गया। जज ने पूछा — "ओ मेंढक। तुम रोज रात को चिड़िया की नींद क्यों खराब करते हो।"

मेंढक इज़्ज़त से बोला — "जनाब, मैं रोज रात को कछुए से अपनी सुरक्षा के लिये चिल्लाता हूँ।

---

[41] Why Male Mosquitoes Do Not Bite? – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=90
Retold and written by Mike Lockett. Adapted from "The Animals Go on Trial" in the Book "Once in the First Times", 1949, stories retold by Elizabeth Hough Sechrist and attributed to "Filopino Popular Tales", by Dean S Fansler. 1921.

कछुआ अपना घर अपनी पीठ पर ले कर चलता है। जब भी वह मेरे पास से गुजरता है तो मुझे उससे डर लगता है कि कहीं वह मेरे ऊपर न गिर जाये और मुझे उससे कोई नुकसान न पहुँचे।"

जज बोला — "ओ, अब मैं समझा कि मेंढक रात को क्यों चिल्लाता है। यह कछुए की गलती है। क्योंकि वह अपना घर अपने ऊपर ले कर चलता है तो मेंढक डर जाता है और वह सारी रात चिल्लाता है और उसकी वजह से चिड़िया रात भर सो नहीं सकती। अच्छा तो कछुए को बुलाओ। कछुआ ऐसा क्यों करता है।"

कछुआ भी जल्दी ही जज के सामने आ गया। जज ने पूछा — "ओ कछुए, तुम अपने ऊपर अपना घर रख कर मेंढक को क्यों डराते हो?"

कछुआ इज़्ज़त से सिर झुका कर बोला — "योर औनर, मैं क्या करूँ, जुगनुओं[42] से बचने के लिये मुझे तो अपना घर अपने साथ रखना ही पड़ता है।

जुगनू हमेशा ही आग लिये घूमता रहता है और मुझे हमेशा ही यह डर लगा रहता ही कि मेरे पीछे वह मेरा घर बरबाद कर देगा इसलिये मैं अपना घर अपने साथ ही रखता हूँ।"

[42] Translated for the Word "Firefly", commonly known as "Glowworm".

जज बोला — "अब मैं समझा कि कछुआ जुगनू से क्यों डरता है। वह जुगनू ही है जो कछुए को अपनी आग से डराता है और इसी लिये बेचारे कछुए को अपना घर अपने साथ में लिये घूमना पड़ता है।

और क्योंकि कछुआ अपना घर अपने साथ ले कर घूमता है इसलिये मेंढक कछुए से डर जाता है और रात भर चिल्लाता है जिससे चिड़िया रात भर सो नहीं पाती। ठीक है जुगनू को बुलाओ।"

तुरन्त ही जुगनू को जज के सामने लाया गया। जज ने जुगनू से पूछा — "ए जुगनू तुम अपनी आग से कछुए को क्यों डराते हो?"

जुगनू बहुत ही नर्मी से बोला — "जनाब, मैं यह आग मच्छर को दूर रखने के लिये जलाता हूँ ताकि वह अपने चाकू जैसे दाँत मेरे कोमल शरीर में न घुसा सके। वह हमेशा ही मुझे अपने चाकू जैसे पैने दाँतों से धमकाता रहता है।"

जज बोला — "ओह़ अब मेरी समझ में आया कि जुगनू अपने साथ आग लिये क्यों घूमता है। वह मच्छर ही है जो जुगनू को अपने पैने दाँतों से धमकी देता है और उस धमकी की वजह से जुगनू को आग जला कर रखनी पड़ती है।

वह आग कछुए को डराती है तो उसको अपना घर अपने ऊपर ले कर घूमना पड़ता है। कछुए का हर समय घर को ले कर घूमना

मेंढक को डराता है सो वह सारी रात चिल्लाता है और उसके चिल्लाने की वजह से चिड़िया सारी रात सो नहीं पाती। ठीक है, मच्छर को मेरे पास भेजो।"

डरता डरता बेचारा मच्छर आया। जज ने मच्छर से पूछा — "तुम अपने चाकू जैसे तेज़ दॉतों से जुगनू को क्यों डराते हो मच्छर?"

मच्छर बेचारे के पास इसका कोई जवाब नहीं था। वह नहीं जानता था कि वह जुगनू को क्यों डराता था। सो जज ने मच्छर को सजा सुना दी कि उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया जाये। सजा के अनुसार उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया गया।

तीन दिनों तक जेल में रहने से उन तीन दिनों के अन्दर सारे समय मच्छर की आवाज जाती रही। उसके बाद मच्छर न तो कभी गा सका और न ही कभी भिनभिना ही सका जैसे उस मच्छर के और भाई बहिनें गाते और भिनभिनाते थे।

और उसके बाद न ही वह किसी जानवर या आदमी को काट ही सका।

17 नारियल वाला आदमी[43]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[44] की लोक कथाओं से ली गयी है।

जुआन[45] बहुत देर से बड़ी मेहनत से काम कर रहा था। एक अमीर आदमी ने उसको अपने नारियल के बागीचे में से नारियल तोड़ने के लिये रखा हुआ था।

वह सुबह सूरज निकलने से पहले ही वहॉ आ गया था। वह बागीचा क्योंकि उसके घर से काफी दूर था इसलिये उस नारियल के बागीचे तक पहुॅचने के लिये उसको घर से अॅधेरे में ही चलना पड़ा था।

सारी सुबह वह नारियल तोड़ने के लिये नारियल के पेड़ों पर चढ़ता और उतरता रहा।

वह अपना बड़ा चाकू[46] रस्सी से अपनी कमर में बॉध लेता था। उसके बाद वह पेड़ पर चढ़ता था। फिर रस्सी

[43] The Man With the Coconuts: going slow makes you faster – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=212 Retold and written by Mike Lockett.

[44] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards East to Indian Peninsula.

[45] Juan – the name of a man from Philippines

[46] Translated for the word “Matchet” See the picture of a matchet above.

में बँधा चाकू ऊपर खींचता था चाकू से नारियल काटता था और एक एक कर के उनको वह जमीन पर फेंकता जाता था।

जब वह एक पेड़ से सारे नारियल तोड़ लेता था तो नीचे उतर आता था। तोड़े हुए सारे नारियल एक बड़ी सी टोकरी में भरता और उनको घोड़े की पीठ पर रख कर उन्हें उस आदमी के घर ले जाता।

यह बहुत सारा और बड़ा थकाने वाला काम था। किसी एक बागीचे के सारे फल तोड़ने के लिये उसको कई दिनों की जरूरत थी। फिर भी उसने अपना यह काम सूरज के आसमान में रहते रहते ही खत्म कर लिया था।

अब उसको उन फलों को केवल मालिक के घर तक पहुँचाना था और उससे अपनी मजदूरी लेनी थी।

जैसे ही वह मालिक के घर के लिये रवाना हुआ तो उसको एक लड़का दिखायी दे गया। जुआन ने उससे पूछा — "यहाँ से मालिक के घर तक जाने में कितनी देर लगेगी?"

लड़का बोला — "अगर तुम धीरे धीरे जाओगे तो तुम जल्दी पहुँच जाओगे पर अगर तुम जल्दी जल्दी जाओगे तो कल तक पहुँचोगे।"

जुआन ने सोचा "यह कितना बेवकूफ लड़का है? कहीं ऐसा भी होता है क्या कि कोई आदमी धीरे धीरे चलने पर जल्दी पहुँचे और जल्दी जल्दी चलने पर देर से पहुँचे। यह लड़का होशियार नहीं है।

मुझे जल्दी जल्दी ही जाना चाहिये।" यह सोचते हुए जुआन उस सड़क पर जल्दी जल्दी चल दिया।

जैसे ही उसने घोड़े को जल्दी जल्दी खींचा तो उसके नारियल टोकरी में से निकल निकल कर नीचे गिरने लगे। जब नारियल नीचे गिर जाते तो जुआन को उनको उठाने के लिये रुकना पड़ता था और फिर घोड़े के ऊपर लदा बोझा भी ठीक से रखना पड़ता था।

जुआन ने सोचा "इस तरह से तो मेरा समय बहुत बर्बाद हो रहा है। मुझे अपने इस समय को बचाने के लिये और जल्दी जल्दी जाना चाहिये।" सो उसने और जल्दी जल्दी चलना शुरू कर दिया।

इस चक्कर में उसकी भरी हुई टोकरी में से उसके और ज़्यादा नारियल नीचे गिर गये। नीचे गिर कर वे पहाड़ी के नीचे भी लुढ़क गये।

जुआन जितनी जल्दी करता उतने ही ज़्यादा नारियल टोकरी में से बिखर जाते और हर बार जुआन को वे नारियल उठाने और टोकरी को ठीक करने में कुछ ज़्यादा ही समय भी लगता और थकान भी लगती।

सूरज डूबने को आ रहा था और जुआन ने देखा कि मालिक का घर पहाड़ी की चोटी पर था। वह एक बार फिर जल्दी जल्दी चला।

अब उसके जल्दी जल्दी चलने से उसका घोड़ा भी गिरने लगा और नारियल भी बहुत लुढ़कने लगे। अब सूरज भी डूब चुका था और अँधेरा भी होने लगा था।

बेचारा जुआन। अँधेरे में अब वह गिरे हुए नारियल देख भी नहीं सकता था सो वह वे नारियल मालिक को उस दिन नहीं दे सका। वह उनको अगले दिन ही दे पाया।

सो वह लड़का इतना बेवकूफ भी नहीं था।

18 मुर्गियॉ जमीन क्यों खुरचती हैं[47]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[48] की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पहले की बात है कि एक बार एक बाज़[49] एक मुर्गीखाने के ऊपर से उड़ा जा रहा था। उसने नीचे देखा तो उसको एक बहुत सुन्दर सी मुर्गी दिखायी दी।

वह रोज उस मुर्गियों के बाड़े के ऊपर से उड़ता और उस सुन्दर सी मुर्गी को देखता पर वह उससे मिलने के लिये नीचे नहीं उतर पाता।

एक दिन उसको अपने अन्दर यह हिम्मत आ ही गयी कि वह आसमान से नीचे उतर कर उस मुर्गी से बात करे। और फिर जल्दी ही वह उस मुर्गी के प्रेम में फॅस गया।

एक दिन उस बाज़ ने उस मुर्गी से अपनी पत्नी बन जाने के लिये कहा। वह तुरन्त ही तैयार हो गयी पर बोली — "मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती जब तक कि मेरे पंख भी तुम्हारे जैसे सुन्दर न हो जायें ताकि मैं भी तुम्हारे साथ साथ आसमान में उड़ सकूॅ।"

---

[47] Why Chickens Scratch the Ground – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=213 Retold and written by Mike Lockett.

[48] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards East to Indian Peninsula.

[49] Translated for the word "Hawk". See its picture above.

बाज़ भी इस बात पर राजी हो गया। उसने मुर्गी के गले में एक छल्ला पहना दिया और बोला — "तुम इसको अपने गले में पहन लो ताकि तुमको याद रहे कि तुमने मुझसे शादी का वायदा किया है। इसका ख्याल रखना। मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारे लिये नये पंख ले कर तुम्हारे पास आऊँगा और फिर हम शादी कर लेंगे।" इतना कह कर वह बाज़ उड़ गया।

एक दिन वह मुर्गी अपना सिर ऊँचा किये अपने मुर्गीखाने में इधर उधर घूम रही थी। सारी मुर्गियॉ क्लक क्लक कर रही थीं और उसके गले में पड़े नये छल्ले की तारीफ कर रही थीं। पर दो और भी ऑखें थीं जो उससे कुछ कह रही थीं और वे ऑखें थीं एक मुर्गे की।

वह मुर्गा उस मुर्गी से बोला — "इस छल्ले को तुम अभी उतार दो। इस मुर्गीखाने की हर मुर्गी मेरी है। तुम मुर्गी हो बाज़ नहीं। इस छल्ले को तुम अभी उतार दो और फेंक दो। तुम बस मुझसे शादी कर रही हो और किसी से नहीं। तुम किसी और से शादी कर ही नहीं सकतीं।"

यह सुन कर मुर्गी ने वह छल्ला उतार कर फेंक दिया।
कुछ देर बाद वह बाज़ पंखों का एक बहुत ही बढ़िया कोट ले कर वहॉ आया और उसने अपनी मुर्गी को पुकारा — "प्रिये तुम कहॉ हो? देखो मैं तुम्हारे लिये आसमान में उड़ने के लिये नये पंखों का यह कितना सुन्दर कोट ले कर आया हूँ।"

मुर्गी ने बाज़ को देखा तो उसको बहुत खराब लगा कि वह चील तो उसके लिये कितना सुन्दर पंखों का कोट ले कर आया और उसने उसका दिया हुआ छल्ला उतार कर फेंक दिया।

सो उसको देख कर वह भाग कर छिप गयी। बाज़ भी उसके पीछे पीछे उड़ा और उसको ढूँढ लिया।

उसी समय उसने देखा कि मुर्गी के गले में तो उसका दिया हुआ छल्ला नहीं है तो वह कुछ गुस्सा हो कर बोला — "मेरा दिया हुआ छल्ला कहाँ है?"

पहले तो बेचारी मुर्गी ने उस छल्ले के खोने की कई कहानियाँ बनायीं पर आखीर में उसने उसको सच सच बता दिया कि वह छल्ला उसने उतार कर फेंक दिया।

बाज़ दुखी हो कर बोला — "मैं नहीं सोचता था कि तुम इतनी बेरहम हो। मुझे मेरा छल्ला अभी चाहिये। तुम अभी से जमीन खुरचना शुरू कर दो और तब तक खुरचती रहो जब तक तुमको मेरा वह छल्ला नहीं मिल जाता।"

बाज़ फिर बोला — "और तब तक तुम एक बात और जान लो। आज से मैं तुमको, मुर्गे को और दूसरी सब मुर्गियों को अपना दुश्मन समझूँगा। जब तक तुम मेरा छल्ला नहीं ढूँढ लेतीं तब तक मैं दुनियाँ के सारे मुर्गे मुर्गियाँ खाता रहूँगा।"

इतना कह कर बाज़ उड़ गया। उस मुर्गी ने सारे मुर्गे मुर्गियों को इस घटना के बारे में बता दिया। उस दिन से सारी मुर्गियाँ उस

छल्ले को ढूँढने के लिये जमीन खोदती फिर रही हैं पर उनको अभी तक उस बाज़ का छल्ला नहीं मिला।

इसके अलावा उसी दिन से हर बाज़ का सबसे प्रिय खाना भी मुर्गी ही है।

19 बन्दर और बड़ी मक्खियॉ[50]

यह लोक कथा एशिया के फिलीपीन्स नाम के देश[51] में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

दोपहर का सूरज जंगल पर बहुत ज़ोर से चमक रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे सूरज की हर किरन जिसको भी छू लेगी उसी को पिघला देगी।

ऐसे मौसम में एक बड़ी मक्खी[52] उड़ते उड़ते बहुत परेशान हो गयी थी सो वह आराम करने के लिये एक पेड़ की शाख पर बैठ गयी।

अब उस पेड़ पर एक बन्दर का परिवार रहता था। वह बड़ी मक्खी वहॉ बैठी बैठी कुछ ठंडी होने के लिये अपने पंख हिला हिला कर अपने को हवा कर रही थी।

एक बन्दर बोला — "तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

बड़ी मक्खी बोली — "जनाब, आज का दिन बहुत गर्म है। मैं यहॉ कुछ देर के लिये आराम करने के लिये बैठी हूॅ। जब मैं थोड़ी ठंडी हो जाऊॅगी तब मैं यहॉ से चली जाऊॅगी।"

---

[50] Monkeys and Dragonflies – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=241 By Mike Lockett

[51] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards West to Indian Peninsula.

[52] Translated for the word "Dragonfly". See its picture above.

बन्दर बोला — "तुम अभी अभी इस पेड़ से चली जाओ। हम किसी कमजोर जानवर को अपने पेड़ पर नहीं बैठने देते।"

कह कर बन्दर ने उसको एक डंडी फेंक कर मारी। इससे पहले कि बन्दर की डंडी बड़ी मक्खी को लगती और उसको कुछ चोट पहुँचाती वह वहाँ से उड़ गयी।

वह तुरन्त ही वहाँ से घर गयी और फिर बड़ी मक्खियों के राजा के पास पहुँची। इत्तफाक से उसका भाई ही बड़ी मक्खियों का राजा था।

बड़ी मक्खियों के राजा ने अपने तीन सिपाही लिये और उस जगह की तरफ चल दिया जहाँ वे बन्दर रहते थे।

वह सीधे बन्दरों के राजा के पास गया और बोला — "ओ बन्दरों के राज़ा तुम्हारे एक बन्दर ने मेरी बहिन को मारने की कोशिश की। उसको अपने बुरे बर्ताव के लिये मेरी बहिन से माफी माँगनी होगी।"

बन्दरों का राजा गुस्से से बोला — "बन्दर लोग कभी किसी से माफी नहीं माँगते। इससे पहले कि हम तुम्हारे साथ लड़ाई छेड़ें तुम यहाँ से चले जाओ। हम लोग सब बहुत बड़े बड़े हैं और तुम सब बहुत छोटे हो। हम लोग बहुत ताकतवर हैं अैर तुम लोग बहुत कमजोर हो।

अगर हमारी तुम्हारी लड़ाई हुई तो उस लड़ाई में हम जीत जायेंगे और तुम हार जाओगे।"

बड़ी मक्खियों के राजा और उसके तीनों सिपाहियों ने कहा — "हम तुम्हारी चुनौती स्वीकार करते हैं। हमने माना कि तुम बड़े हो ताकतवर हो लेकिन फिर भी तुम गलत हो। हम तुमसे लड़ने से नहीं डरते।"

सो बन्दर के राजा ने अपने सारे बन्दरों को बुलाया और उनसे कहा कि वे अपने साथ एक एक भारी डंडा ले कर लड़ाई के लिये आयें। तुरन्त ही बहुत सारे बन्दर अपना अपना डंडा ले कर वहॉ चले आये।

बन्दरों के राजा ने उनको हुक्म दिया कि वे बड़ी मक्खियों को अपने डंडे से मारें और कुचल दें।

बड़ी मक्खियॉ छोटी थीं। बड़ी मक्खियॉ कमजोर थीं पर वे बहुत होशियार थीं। उनके राजा ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे बन्दरों के माथे पर जा कर बैठ जायें।

उधर बन्दर अपनी अपनी डंडियों से बड़ी मक्खियों को मारने के लिये उनको बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला रहे थे पर बड़ी मक्खियॉ बहुत तेज़ थीं। वे जब भी कोई डंडी अपने ऊपर आती देखतीं तो वे एक बन्दर के माथे से उड़ कर दूसरे बन्दर के माथे पर बैठ जातीं।

और इस तरह से बन्दर अपनी बेवकूफी से आपस में ही एक दूसरे को मारते रहे। लड़ाई खत्म होने से पहले ही हर बन्दर बुरी तरह से घायल हो गया था।

होशियार बड़ी मक्खियॉ जीत गयीं। अब बन्दर बड़ी मक्खियों को अपने पेड़ों पर जहॉ वे रहते थे बैठने देते थे।

20 गिरगिट और चीते की लड़ाई[53]

यह लोक कथा हमने एशिया महाद्वीप के श्रीलंका देश की लोक कथाओं से ली है। इस लड़ाई में एक छोटा सा गिरगिट एक खूँख्वार चीते को लड़ाई में हरा देता है। देखते हैं कैसे।

एक बार की बात है कि एक चीता[54] अपने लिये अपना खाना ढूँढने निकला कि उसको केवल एक छोटा सा गिरगिट एक पेड़ की शाख पर बैठा दिखायी दे गया।

चीता गिरगिट से बोला — "बहुत अच्छे आज तुम ही मेरा खाना हो।"

गिरगिट बोला — "पर मैं तो बहुत छोटा हूँ। मैं तुम्हारे खाने के लिये ठीक नहीं हूँ।"

चीता चिल्लाया — "पर मैं बहुत भूखा हूँ। चाहे तुम मेरा एक छोटा सा कौर ही सही पर फिर भी मैं तुमको खाऊँगा।"

गिरगिट ने अपने को बड़ा दिखाने के लिये अपने गाल फुलाये और बोला — "तुम मुझे खाने की कोशिश कर सकते हो पर मैं

---

[53] Lizard's Duel With Leopard – a folktale from Sri Lanka (Ceylon), Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=56 Retold and written by Mike Lockett. [Similar tales, to save oneself and to save others from wild animals, are told in India also. To read such tales read my Books "Intelligent Men-1" and "Intelligent Men-2", "Intelligent Animals-1"and "Intelligent Animals-2".]

[54] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

तुमसे लड़ूँगा। तुम्हारे दाँत बहुत बड़े और तेज़ हैं जबकि मेरे दाँत बहुत छोटे हैं पर फिर भी तुमको काटूँगा।

तुम्हारे पंजे भी बड़े और तेज़ हैं और मेरे पंजे छोटे हैं फिर भी मैं उनसे तुमको खरोंचूँगा। तुम बहुत ताकतवर हो जबकि मैं कमजोर हूँ फिर भी मैं तुमसे लड़ूँगा।"

गिरगिट फिर चिल्लाया — "तुम बहादुर हो और मैं डरा हुआ हूँ पर फिर भी मैं अपने आपको बचाऊँगा। तुम मुझे काटने की कोशिश तो करो अगर तुम कर सकते हो तो ...।

गिरगिट के इस चिल्लाने को पेड़ों पर रहते बन्दरों ने सुना तो वे चिल्लाये — "चीता तो हमेशा से ही लड़ने वाला जानवर है वह उन सब जानवरों को लड़ने के लिये पकड़ लेता है जो उससे छोटे और कमजोर हैं।"

यह सुन कर चीता कुछ हिचक गया और बोला — "मैं केवल बराबर वालों से लड़ता हूँ।"

गिरगिट बोला — "बहुत अच्छे। तो मुझे अपने से लड़ने के लिये एक महीने का समय दो। तब तक मैं तुम्हारे बराबर हो जाऊँगा और तब हम लड़ सकते हैं।"

चीता भूखा था पर फिर भी वह गिरगिट को लड़ाई के लिये तैयार होने के लिये एक महीने का समय देने के लिये राजी हो गया और वहाँ से चला गया।

गिरगिट जानता था कि वह कभी भी चीते के बराबर या उससे ज़्यादा ताकतवर नहीं हो सकता पर उसका दिमाग चीते से ज़्यादा तेज़ी से काम कर रहा था।

वहॉ से गिरगिट एक नदी के किनारे पर गया जहॉ बहुत सारी गीली कीचड़ और मिट्टी थी। उसने वह कीचड़ और मिट्टी अपने शरीर पर लपेट ली। फिर वह धूप में लेट गया जिससे वह मिट्टी उसके शरीर पर चिपक कर जम गयी।

अगले दिन वह एक चावल के खेत में गया वहॉ भी वह वहॉ की मिट्टी और भूसे में इधर उधर लेटा जिसे खेत वाले चावल काटने के बाद वहॉ छोड़ गये थे। इसके बाद वह फिर उस सबको सुखाने के लिये धूप में लेट गया।

इस तरह हर दिन वह गिरगिट पहले कीचड़ मिट्टी भूसे तिनके आदि में लेटता और फिर उनको धूप में सुखाता। इस तरह वह दिन ब दिन बड़ा होता जा रहा था।

महीने के आखीर में गिरगिट ने अपने चेहरे और पंजों के ऊपर से कीचड़ धोयी ताकि चीता उसको पहचान सके। बाकी की कीचड़ और मिट्टी उसने अपने शरीर पर ऐसे ही लगी छोड़ दी जो उसके लिये चीते से लड़ाई के समय कवच का काम करती।

महीने के खत्म होने पर गिरगिट चीते से वहीं मिला जहॉ उसने उससे मिलने का वायदा किया था। चीते ने उस जगह जा कर यह पहले ही देख लिया था कि वहॉ कोई बन्दर या कोई और दूसरा

जानवर तो नहीं था जो उसको इतने छोटे से जानवर से लड़ता देखता।

चीते ने पहले हमला किया। उसने गिरगिट को अपने बड़े वाले पंजे से मारा। उस पंजे की मार से गिरगिट के शरीर की कुछ कीचड़ उखड़ गयी पर गिरगिट को कोई चोट नहीं आयी।

गिरगिट ने चीते की टॉग पर वार किया तो उसकी टॉग पर थोड़ी सी खरोंच आ गयी और उसमें से खून निकलने लगा।

चीते ने गिरगिट की गरदन पर काटने की कोशिश की पर इससे उसके मुँह में केवल थोड़ी सी मिट्टी और सड़ी हुई घास ही आयी।

फिर गिरगिट कूद कर चीते की पीठ पर बैठ गया। उसने चीते के कानों में काटा और उसकी नाक में खरोंच मारी। इससे चीता दर्द के मारे लोटने लगा और उसने गिरगिट को झटक कर दूर फेंक दिया।

उसने फिर गिरगिट को बार बार मारा और काटा पर हर बार मारने पर वह उसके शरीर पर से केवल थोड़ी सी मिट्टी ही खुरच सका और हर बार काटने पर थोड़ी सी कीचड़ और भूसा ही चख सका जो कोई भी खाना नहीं चाहता था।

गिरगिट का चीते को काटना बहुत छोटा सा था पर क्योंकि वह चीते के नंगे शरीर पर था इसलिये वह उसको बहुत महसूस हो रहा था। गिरगिट की खरोंचें छोटी छोटी थीं पर वे चीते को लहू लुहान कर रहीं थीं।

चीते का सारा शरीर घायल हो चुका था। उसका दर्द इतना बढ़ गया था कि वह उसको और नहीं सह सका और लड़ाई के मैदान से भाग खड़ा हुआ।

वह एक जगह बैठ कर अपने घावों को चाटने लगा। वह दुखी हो कर बार बार यही कह रहा था गिरगिट ने मुझे यहॉ काटा है। गिरगिट ने मुझे वहॉ काटा है।

चीते को यह पता ही नहीं था कि एक लकड़ी काटने वाला यह सारी लड़ाई देख रहा था। वह देख रहा था कि एक इतना बड़ा चीता एक छोटे से गिरगिट से लड़ रहा था।

उसने यह भी देखा कि चीते के मुँह में बार बार कीचड़ आ रही थी और वह उसको थूक रहा था। यह सब देख कर उसको हॅसी आ रही थी।

फिर उसने देखा कि चीता गिरगिट के दिये घाव चाट रहा था और दर्द के मारे रो रहा था। अब उससे अपनी हॅसी न रुक सकी और वह ज़ोर से हॅस दिया।

चीते को पता नहीं था कि कौन हॅस रहा था सो वह यह देखने के लिये कि कौन हॅस रहा था एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वहॉ से उस हॅसने वाले को ठीक से देख सके।

उसको वह आदमी दिखायी दे गया तो वह उससे बोला — "तुम हॅसना बन्द करो वरना मैं तुम्हीं को खा जाऊॅगा।" और चीता

उसको खा भी जाता पर उसको डर था कि गिरगिट कहीं पास में ही न हो और वह उसको देख न रहा हो।

लकड़ी काटने वाला बोला — "मेहरबानी कर के मुझे मत खाओ। अब मैं तुम्हारे ऊपर नहीं हॅसूॅगा।" फिर उसने अपना हॅसना बन्द कर के कहा — "ठीक है ठीक है अब मैं हॅसूॅगा भी नहीं और किसी को बताऊॅगा भी नहीं।"

चीते ने पूछा — "तुम अपनी पत्नी को तो नहीं बताओगे?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं। मैं अपनी पत्नी को भी नहीं बताऊॅगा।"

चीते ने पूछा — "तुम अपने बच्चों और गॉव के दूसरे लोगों को तो नहीं बताओगे?"

आदमी बोला — "नहीं, मैं अपने बच्चों और दूसरे गॉव वालों को भी नहीं बताऊॅगा।"

सो चीते ने उसको जाने दिया। पर बाद में चीते को चिन्ता होने लगी क्योंकि आदमी और औरतें भेद छिपाने में बहुत अच्छे नहीं होते। अगर उस आदमी ने यह बात किसी दूसरे को बता दी और दूसरे जानवरों ने यह सुन लिया तो वे सभी मेरे ऊपर हॅसेंगे।

सो चीता जंगल से चल कर उस लकड़ी काटने वाले के घर आया और उसके घर के सामने आ कर बैठ गया। वह यह सुनने की कोशिश करने लगा कि वह वहॉ क्या बात करता है।

तभी चीते ने आदमी की हॅसी की आवाज सुनी। आदमी की पत्नी और बच्चों ने पूछा — "आप क्यों हॅस रहे हैं?"

पर आदमी ने उनको कुछ बताया नहीं। वह बोला — "मैंने वायदा किया है कि मैं किसी को नहीं बताऊॅगा और मैं अपने वायदे का पक्का हूॅ।"

चीता खिड़की से झॉक रहा था। उसने देखा कि वह आदमी और उसकी पत्नी बच्चों को सुला रहे थे। फिर बाद में पत्नी भी सोने चली गयी। आदमी ने रोशनी बुझा दी।

अब चीता वहॉ से चलने को ही था कि उसने आदमी की हॅसी फिर से ज़ोर से सुनी। चीते ने सुना कि वह अपनी पत्नी से कह रहा था — "अब मैं चुप नहीं रह सकता। मैं बच्चों को तो नहीं बताऊॅगा पर मैं तुमको जरूर बताऊॅगा।"

फिर उसने अपनी पत्नी को सब बता दिया कि कैसे एक छोटे से गिरगिट ने एक बड़े से चीते को हरा दिया। वह आगे बोला — "यह सब बहुत ही मजेदार था। चीता कहता ही रहा "उसने मुझे यहॉ काटा, उसने मुझे यहॉ काटा।" वह सब कुछ कितना हॅसाने वाला था।"

यह सुन कर चीता बहुत गुस्सा हुआ और वह उस आदमी के घर पर चढ़ गया। वहॉ पहुॅच कर उसने छत में एक बड़ा सा छेद किया और उसके घर में कूद गया।

वहॉ जा कर वह उस आदमी के सो जाने का इन्तजार करने लगा। आदमी के सो जाने के बाद वह उसके पलंग के नीचे घुसा और उस पलंग को उठा कर घर के बाहर ले गया। वह उस आदमी को जंगल ले जा कर खाना चाहता था।

उधर आदमी ने सपने में देखा कि वह किसी जंगल में चल रहा है और जंगल के पेड़ों की शाखाऍ उसके सिर पर हिल रही हैं। यह सब सपना भी उसको बहुत ही सच्चा लग रहा था।

कि तभी उसकी ऑखों पर चॉद चमका तो उसकी ऑख खुल गयी। पर यह तो सपना नहीं था सच ही था क्योंकि वह तो अपने घर में नहीं था, वाकई जंगल में था।

उसने अपने पलंग के नीचे झॉक कर देखा तो उसके पलंग के नीचे तो चीता था।

लकड़ी काटने वाला जानता था कि यह चीता अब उसे खा जायेगा सो वह अपने पलंग पर उठ कर बैठ गया और जैसे ही उसको एक नीचा सा पेड़ दिखायी दिया उसने उस पेड़ की शाख पकड़ ली और उस पेड़ पर चढ़ गया।

चीते ने महसूस किया कि उसका बोझ तो काफी हलका हो गया है सो उसने भी तुरन्त ही ऊपर देखा तो देखा कि आदमी तो पेड़ पर चढ़ रहा था।

बस चीते ने वह पलंग फेंक दिया और चिंघाड़ कर वह भी उस पेड़ पर चढ़ने लगा। आज उसको उस आदमी को खाने से कोई नहीं रोक सकता था।

उसी समय वह आदमी ऊपर से बोला — "तुम्हारे ऊपर हॅसने का मुझे बहुत अफसोस है मिस्टर चीते, मगर अब तुमको इससे ज़्यादा ऊॅचा नहीं चढ़ना चाहिये क्योंकि मेरे पास वह गिरगिट बैठा हुआ है और अगर तुम और ऊपर चढ़े तो वह तुमको फिर से काट लेगा।"

बस यह सुनना था कि चीता डर गया और वहॉ से जल्दी से भाग गया। वहॉ से भाग कर वह बहुत दूर चला गया क्योंकि वह गिरगिट से दोबारा से नहीं लड़ना चाहता था।

अब वह आदमी चीते और गिरगिट की लड़ाई की कहानी बिना किसी डर के सबको सुना सकता था कि किस तरह एक छोटे से गिरगिट ने इतने बड़े चीते को हराया।

21 राजा जिसने अपने तरीके बदले[55]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के सीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह बहुत साल पुरानी बात है कि सीरिया के एक बड़े बेरहम राजा के राज में लोग बहुत परेशान रहते हैं।

राजा का उद्देश्य केवल अपना खजाना भरना था और इसके लिये वह अपने देश के लोगों पर बहुत टैक्स लगाता था। वह टैक्स लगाने के रोज नये नये तरीके सोचता रहता था। जब कभी कोई टैक्स देने से मना करता तो राजा अपने खजाने को बढ़ाने के लिये उसकी जायदाद जब्त कर लेता।

एक दिन ऐसा समय आया जब राज्य में लोगों के पास पैसा खत्म हो गया। किसी के पास एक लीरा[56] या कोई सिक्का भी नहीं बचा जो कोई खर्च कर सकता। राजा ने एक और तरकीब सोची जिससे वह यह पता चला सकता था कि उसके पास सारे देश का पैसा था या नहीं।

उसने किसी घर में से बहुत सुन्दर लड़की ली और उसको अपने महल में ले आया। उसने उसको बहुत अच्छे कपड़े पहनाये और

---

[55] The King Who Changed His Ways – a folktale from Syria, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=175
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[56] Lira was Syria's currency in olden days. Till recently Lira was Italian currency, but now all over Europe Euro is a commom currency.

बाजार में दासी की हैसियत से बेचने के लिये खड़ा कर दिया। उसकी उसने कीमत रखी एक लीरा।

देश के सारे लोग उसको खरीदना चाह रहे थे पर किसी के पास एक लीरा भी नहीं था जो कोई उसको खरीद सकता।

अहमद एक पुराने अमीर व्यापारी का बेटा था। पर उसके पिता का बिज़नैस राजा के ऊँचे टैक्स की वजह से बरबाद हो गया था और वह मर गया था। अब अहमद घर में ही रहता था और अपनी बूढ़ी मॉ की देखभाल करता था।

जब वह बाजार से गुजरा तो उसने भी उस लड़की को देखा। वह लड़की उसको बहुत प्यारी लगी। उसने सोचा कि उस लड़की को किसी के लिये काम करने पर मजबूर नहीं किया जाना चाहिये।

इसलिये वह उसको खरीदना चाहता था और फिर उसको आजाद कर देना चाहता था। या फिर उसको वह अपनी पत्नी बना लेता अगर वह भी ऐसा चाहती तो।

सो अहमद ने एक खास तरकीब सोची जो उसकी मॉ ने उसको बतायी थी। उसकी मॉ ने घर में एक अकेला सिक्का कहीं छिपा कर रखा था। वह उसको एक खास सिक्का बोलती थी क्योंकि वह पहला सिक्का था जो उसके पिता ने अपने बिज़नैस में कमाया था और उसको ला कर दिया था।

उसने सोचा शायद मॉ बहुत खुश होगी अगर मैं वह सिक्का इस लड़की को आजाद कराने के लिये और उसकी बहू लाने के लिये

इस्तेमाल कर लूँ। सो अहमद मन में यह उम्मीद लिये घर चल दिया।

पर उसकी उम्मीदों पर पानी पड़ गया जब उसने उस छिपी हुई जगह में उस सिक्के को ढूँढा जहाँ वह सिक्का होना चाहिये था और वहाँ तो उसको वह सिक्का मिला ही नहीं।

उसने माँ को पुकारा — "माँ। हमारा वह खास सिक्का कहाँ है?"

फिर उसने माँ को उस लड़की को उस सिक्के से खरीदने और उसको आजाद करने के बारे में बताया तो उसकी माँ रो पड़ी और उसने उसको बताया कि वह सिक्का कहाँ गया।

उसने कहा — "बेटा। मैंने वह सिक्का तुम्हारे पिता के साथ साथ उनकी कब्र में ही गाड़ दिया था। हमारे बुजुर्गों ने कहा था कि मरे हुए आदमी को एक सिक्के के साथ गाड़ना चाहिये। वह सिक्का मरे हुए की उसकी बाद की ज़िन्दगी का रास्ता बनाता है। सो मैंने सोचा कि अगर ये कहानियाँ सही हैं तो मैं तुम्हारे पिता के साथ वह सिक्का गाड़ देती हूँ।"

अहमद ने अपनी माँ के गाल पर चूमा और तुरन्त वहाँ से चला गया। वह दौड़ा दौड़ा कब्रिस्तान गया जहाँ उसके पिता को गाड़ा गया था। उसको लगा कि उसका पिता को यह जरूर ही अच्छा लगेगा कि वह उस सिक्के को ले ले और उसको किसी अच्छे काम में लगा दे।

सो उसने अपने पिता की कब्र खोद कर वहॉ वह सिक्का ढूँढा। उसको वह सिक्का वहॉ मिल गया। उसने वह सिक्का उठा लिया और उसको हाथ में लिये लिये बाजार की तरफ भागा।

उसके दिमाग में था कि वह पहला आदमी होगा जो उस लड़की को आजादी दिलायेगा। फिर वह उसको अपना दोस्त बना लेगा और एक दिन उससे शादी कर लेगा।

उधर जब कोई आदमी उस लड़की को खरीदने के लिये नहीं आया तो वह लालची राजा अपने मन में बहुत खुश हुआ कि आज उसके राज्य का सारा पैसा उसके पास था। किसी के पास एक लीरा भी नहीं था जो उस लड़की को खरीद सकता।

पर तभी अहमद बाजार आ पहुँचा। उसके हाथ में एक सिक्का था। उसने वह एक लीरा का सिक्का राजा को दिया और उस लड़की को खरीद लिया।

"कहॉ से आया उसके पास वह सिक्का?" राजा ने सोचा।

राजा के पहरेदार अहमद को पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने उसको यह बताने के लिये मजबूर किया कि वह सिक्का उसके पास कहॉ से आया।

अहमद ने सीधे स्वभाव उसे सब सच सच बता दिया। जैसे ही राजा ने सुना कि वह सिक्का उसके पास उसके पिता की कब्र में से आया है उसकी ऑख से एक ऑसू गिर पड़ा।

उसने सोचा — "मेरे अपने लालच ने एक मरे हुए आदमी को उसकी कब्र में परेशान किया। लानत है मुझ पर।" उस दिन से राजा ने अपने तरीके बदल दिये।

लड़की को बिना सिक्का लिये आजाद कर दिया गया। वह लड़की तुरन्त ही अहमद से प्रेम करने लगी जिसने उसे आजाद करवाया।

राजा ने फिर अपना काफी पैसा अपने राज्य के लोगों में बॉट दिया। अब उसके राज्य में सब जगह न्याय ही न्याय था।
राजा के शहर के फाटक के पास दीवार पर एक घंटा लगा दिया गया था। उस घॅटे से एक रस्सी बॅधी हुई थी। उस रस्सी को खींचने से वह घंटा बज जाता था।

उसने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि अगर मेरे राज्य में कहीं भी कोई भी अन्याय हो रहा हो तो यह रस्सी खींच दी जाये। जैसे ही मैं घंटे की आवाज सुनूॅगा मैं आऊॅगा और न्याय करूॅगा।

राजा के ये शब्द एक चिड़िया ने भी सुने जो शहर की दीवार के बाहर ही रहती थी। जब उसके नये निकले बच्चों को सॉप ने खाने की धमकी दी तो वह राजा की उस रस्सी के पास पहुॅची और उसको खींच दिया।

रस्सी खींचते ही घंटा बज उठा। राजा ने घंटे की आवाज सुनी और अपने पहरेदारों को बुलाया। पहरेदारों ने चिड़िया का पीछा किया। चिड़िया उनको अपने घोंसले तक ले गयी।

पहरेदारों ने देखा कि एक सॉप चिड़िया के बच्चों को खाने ही वाला है। पर इससे पहले कि वह उस चिड़िया के बच्चों को खाता उन्होंने उसको मार दिया।

राजा बोला — "अब मैं शान्ति से मर सकता हूँ। एक बार मेरी बुरी आदत एक मरे हुए को परेशान कर चुकी है पर अब मेरा न्याय हवा में उड़ती हुई चिड़िया तक पहुँच रहा है।"

22 मक्खियों ने कर्जा चुकाया[57]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तैवान देश की है। बहुत साल पहले तैवान देश में एक बड़ा मामूली सा आदमी रहता था। उसका नाम था वॉग वू[58]।

वॉग वू बहुत ही दयालु और दूसरे लोगों की परवाह करने वाला आदमी था। उसको यह ज़रा भी अच्छा नहीं लगता था कि वह किसी को भी ज़रा सा भी दुख पहुँचाये, चाहे वह आदमी हो या जानवर और या फिर कोई और जीव।

वॉग वू शराब बनाता था। वह अपनी जमीन पर अपने आप ही फल उगाता था और फिर उन फलों से अपने आप ही शराब बनाता था। उनमें से कुछ फल और शराब वह अपने परिवार की जरूरत का सामान खरीदने के लिये बेच देता था।

कुछ पैसा जो वह कमाता था उससे वह टैक्स देता था और गरीबों को दान देता था। कुछ पैसा वह अपने बच्चों को पढ़ने के लिये बचा कर रखता था और कुछ पैसा वह अपने बुढ़ापे के लिये बचा कर रखता था।

---

[57] The Flies Who Paid a Debt of Gratitude – a folktale from Taiwan, Asia. Translated from the Web Site: http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=68
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
This story, originated in a collection of Buddhist Children's Stories, is believed to be housed in the White Cloud Cultural Centre, Taipei, Taiwan according to citations from Sydney, Australia. No dates were available except for the dates that the story was first told in 581-618 AD.

[58] Wang Wu – a name of a Taiwan's man

जब भी वॉग वू शराब बनाने के लिये फलों का रस निकालता तो उसके पास बहुत सारी मक्खियॉ भिनभिनाती रहतीं। वे लालची मक्खियॉ शराब की खुशबू सूँघती और उसकी खुशबू से बेहोश हो कर शराब के बर्तन में गिर जातीं। अगर वॉग वू का स्वभाव दयालु न होता तो वे उसमें डूब जातीं।

वह हमेशा ही बहुत सॅभाल कर उस रस को छानता और मक्खियों को उसमें से बाहर निकाल देता। फिर वह हर एक मक्खी को राख से सुखाता और जब वे जाग जाती तो उनको उड़ा देता। वॉग वू किसी भी जीव को किसी तरह की तकलीफ देने में विश्वास नहीं करता था और इसका वह हमेशा ही ध्यान रखता था।

एक साल उसके दिन कुछ खराब आये। किसी ने उसके खिलाफ सरकार को कोई गलत शिकायत लिखवा दी। शिकायत बहुत ही गम्भीर थी और वॉग वू को बिना किसी सुनवाई के मारने का हुक्म सुना दिया गया।

उसको अपने परिवार की चिन्ता थी और वह अभी मरना नहीं चाहता था। हालॉकि वह बार बार यही कहता रहा कि उसने कोई जुर्म नहीं किया है वह बेकुसूर है पर अदालत ने उसकी एक न सुनी।

जैसे जैसे उसके मरने का दिन पास आता जा रहा था उसको बहुत चिन्ता सता रही थी। वह बार बार यही कहता — "मैं

ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने कुछ नहीं किया है मैं बेकुसूर हूँ। पर मैं क्या करूँ मेरी कोई सुनता ही नहीं।"

जब वह यह कह रहा था तो उसको सुनने वाला वाकई वहाँ कोई नहीं था सिवाय एक मक्खी के जो वहीं पास की दीवार पर बैठी हुई थी।

और बस तभी एक अजीब घटना घटी। मारने वाला जब वॉग वू को मारने के लिये कागज पर दस्तखत करने ही वाला था कि न जाने कहाँ से हजारों मक्खियाँ वहाँ प्रगट हो गयीं और उसके कलम और हाथ पर बैठ गयीं। उन मक्खियों की वजह से वह उस कागज पर दस्तखत ही नहीं कर सका।

उसने उन मक्खियों को हटाने के लिये ज़ोर से अपना हाथ इधर उधर झटका पर हर एक मरी हुई मक्खी के लिये वहाँ फिर से बहुत सारी मक्खियाँ प्रगट हो जातीं और उसको दस्तखत करने से रोक देतीं।

इस हालत में वह कागज पर दस्तखत नहीं कर सकता था और कागज पर बिना दस्तखत किये वॉग वू को मारा नहीं जा सकता था।

यह फिर भी इतनी अजीब घटना नहीं होती अगर यह केवल एक बार ही होता पर यह बार बार होता रहा। मारने वाला औफीसर जब भी उस कागज पर दस्तखत करने बैठता तो बार बार वे मक्खियाँ इसी तरह से उसके कलम और हाथ पर आ कर बैठ

जाती। इस हालत में वह दस्तखत नहीं कर पाता और इस तरह से वे वॉग वू की जान बचाती रहीं।

वह औफीसर बार बार यही सोचता कि यह सब क्या हो रहा है। अपनी ज़िन्दगी में ऐसा तो कभी उसने देखा नहीं था। उसको लगा कि लगता है कि कोई इस आदमी के ऊपर झूठा इलजाम लगा रहा है।

क्या हो अगर यह आदमी बेकुसूर हो? मुझे अपने अफसर से प्रार्थना करनी चाहिये कि इस आदमी के मामले को फिर से जॉचा जाये। वह अपने अफसर के पास गया और उसके अफसर ने उसकी प्रार्थना सुन ली और वॉग वू के मामले की फिर से जॉच की गयी तो वह बेकुसूर पाया गया।

उसको आजाद कर दिया गया। उसकी जमीन और जायदाद उसको वापस कर दी गयी जो पहले उससे ले ली गयी थी। उसकी जान बच गयी थी। उसके परिवार की इज़्ज़त लौट आयी थी।

इसके बाद वॉग वू फिर से अपनी वही मामूली ज़िन्दगी बिताने लगा। इस तरह मक्खियों ने वॉग वू की जान बचायी।

23 कुँए का मेंढक[59]

यह लोक कथा भी हमने एशिया महाद्वीप के तैवान देश की लोक कथाओं से ली है।

बहुत समय पहले एक छोटा सा मेंढक एक गहरे कुँए की तली में रहता था। जब उसको प्यास लगती तो पीने के लिये उसके पास बहुत सारा पानी था और जब भूख लगती तो वहाँ खाने के लिये उसके पास बहुत सारे कीड़े थे।

जब वह थक जाता तो अपनी पीठ के बल लेट जाता और आसमान की तरफ देखता रहता जो उस कुँए के छेद के बहुत ऊपर दिखायी देता था।

हालाँकि उसने अपनी ज़िन्दगी का एक पल भी इस कुँए के बाहर नहीं गुजारा था पर फिर भी वह अपनी ज़िन्दगी से बहुत खुश था – सिवाय एक बात के, और वह यह कि वह बहुत अकेला था। उसको खेलने के लिये एक साथी चाहिये था।

जब भी कोई जानवर उस कुँए पर पानी पीने आता तो वह उससे अपनी सबसे ऊँची आवाज में बोलता — "क्या तुम नीचे आ कर मेरे साथ खेलना पसन्द करोगे? मेरे पास खाना भी है पानी भी है

[59] The Frog in the Well – a folktale from Taiwan, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=109
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

और रहने के लिये बहुत अच्छी जगह भी। यहॉ से अच्छी जगह और कोई नहीं है।"

पर वे जानवर कहते — "बहुत बहुत धन्यवाद मेंढक भाई। पर हमको यहॉ बाहर रहना ज़्यादा पसन्द है। यह दुनियॉ तुम्हारे इस कुँए की दुनियॉ से यहॉ कहीं बहुत बड़ी और ज़्यादा अच्छी है।"

पर वह छोटा मेंढक कहता — "यहॉ से ज़्यादा अच्छी जगह कहीं नहीं है तुम यहॉ आ कर देखो न।"

वहॉ चिड़ियॉ भी उस कुँए पर पानी पीने आतीं तो मेंढक उनसे भी अपने साथ खेलने के लिये कहता तो वे जवाब देतीं — "यहॉ बाहर बहुत अच्छा है मेंढक भाई। तुमको यहॉ बाहर आना चाहिये खेलने के लिये। यह दुनियॉ तुम्हारे इस कुँए की दुनियॉ से बहुत बड़ी और ज़्यादा अच्छी है।"

पर वह छोटा मेंढक उनका विश्वास ही नहीं करता और कहता — "मेरे घर से अच्छी और कोई जगह नहीं।"

मेंढक के मुँह से यह बार बार सुनने के बाद जानवरों और चिड़ियों ने फिर उससे बात करना बन्द कर दिया था पर छोटे मेंढक की समझ में नहीं आया कि उन्होंने उससे बात करना क्यों बन्द कर दिया। पर उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि वे लोग उसके पास रहने के लिये क्यों नहीं आ रहे थे।

एक दिन एक छोटी सी घरेलू चिड़िया[60] उस कुँए पर पानी पीने आयी। मेंढक ने उससे भी अपने पास आने के लिये कहा।

उस चिड़िया ने भी उससे वही कहा कि उसके कुँए की दुनियॉ से बाहर की दुनियॉ ज़्यादा बड़ी और अच्छी है। कह कर उसने मेंढक को बाहर निकाल कर अपने साथ उड़ने के लिये और दुनियॉ देखने को लिये कहा।

उसने कहा कि — "तुम देखो तो कि यह दुनियॉ तुम्हारे इस कुँए की दुनियॉ से कहीं बहुत बड़ी और कहीं बहुत ज़्यादा अच्छी है।"

छोटे मेंढक ने कहा — "तुम मुझसे झूठ क्यों बोलती हो? जहॉ मैं रहता हूँ वहॉ से अच्छी जगह तो और कोई हो ही नहीं सकती है।"

यह सुन कर वह छोटी घरेलू चिड़िया गुस्सा हो गयी और मेंढक को वहीं छोड़ कर उड़ गयी पर फिर भी वह वहॉ बार बार पानी पीने के लिये आती रही। वह जब भी वहॉ आती मेंढक उससे नीचे आने और अपने साथ खेलने के लिये कहता पर हर बार वह चिड़िया उड़ जाती।

[60] Translated for the word "Sparrow" bird. See its picture above.

एक दिन वह चिड़िया कुँए में गयी और बजाय वहाँ रुकने और मेंढक के साथ वहाँ खेलने के उसने मेंढक को वहाँ से अपनी चोंच में उठाया और उस कुँए के बाहर ले आयी और हवा में उड़ गयी।

बाहर निकल कर पहले तो मेंढक को कुछ दिखायी नहीं दिया क्योंकि कुँए के बाहर सूरज की चमकीली रोशनी बहुत तेज़ थी पर फिर उसने हवा में से दुनियाँ देखी।

उस छोटे से मेंढक को वह दुनियाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जितना वह पहले दुनियाँ के बारे में सोचता था दुनियाँ उससे वाकई कितनी ज़्यादा बड़ी थी। अब उसको यह भी महसूस हुआ कि उसका कुँआ कितना छोटा था।

वह चिड़िया से बोला — "धन्यवाद चिड़िया। जो कुछ तुमने मुझे दिखाया उसके लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास न करने के लिये माफी माँगता हूँ। अब तुम मुझे यहाँ नीचे उतार दो।"

चिड़िया नीचे उतरी और मेंढक को एक वड़े से और सुन्दर से तालाब के पास हरी हरी घास के ऊपर उतार कर बोली — "मुझे अफसोस है कि मैं तुमको तुम्हारी इजाज़त के बिना ही तुम्हारे घर से उठा लायी। अब जब तुम्हारी इच्छा अपने घर वापस जाने की होगी तो तुम मुझे बता देना मैं तुमको वापस ले जाऊँगी।"

चिड़िया को बिना कोई जवाब दिये ही वह मेंढक उस घास पर इधर उधर कूदने लगा। वहाँ उसने बहुत सारे रंगों के बहुत सारे

फूल देखे। उसने न तो पहले कभी इतने सारे फूल देखे थे और न ही इतनी सुन्दर खुशबू सूँघी थी।

बाहर की दुनियाँ तो वाकई में बहुत बड़ी थी। खुशी के मारे वह चिल्ला कर उस तालाब में कूद पड़ा।

कुछ देर बाद जब वह चिड़िया वहाँ आयी तो उसने मेंढक को वहाँ नहीं देखा। उसने मेंढक को पुकारा — "ओ छोटे मेंढक़ तुम कहाँ हो? तुमको यह बाहर की दुनियाँ कैसी लगी?"

मेंढक बोला — "ओह यह तो बहुत बड़ी और बहुत सुन्दर है। बहुत बहुत धन्यवाद चिड़िया। अगर तुम मुझे यह दुनियाँ दिखाने के लिये यहाँ न लायी होतीं तो मुझे कभी पता ही न चलता कि मेरे कुँए के बाहर इतनी सुन्दर चीज़ें हैं।"

उसके बाद वह मेंढक फिर कभी अपने कुँए में वापस नहीं गया।

24 तैवान में खरगोश पकड़ना[61]

एशिया महाद्वीप के तैवान देश की एक और लोक कथा। यह लोक कथा बताती है कि तैवान में पहला खरगोश कैसे पकड़ा गया।

बहुत समय पहले एक मामूली सा किसान तैवान के समुद्र के किनारे पर रहता था। वह सुबह सुबह जल्दी उठता था और अपने चावल के खेतों में काम करने चला जाता था। वह वहॉ सुबह से ले कर शाम तक कड़ी मेहनत करता था।

एक दिन उसको लगा कि उन कीचड़ वाले पानी से भरे खेतों में काम करना बहुत मुश्किल था। वह बोला — "काश भगवान मुझे कोई और काम दे देता तो मुझे इन चावल के खेतों में काम नहीं करना पड़ता।"

जब वह यह कह ही रहा था कि तभी उसका हॅसिया[62] एक सोते हुए खरगोश से टकरा गया। इससे वह खरगोश जाग गया और डर गया। वह वहॉ से इतनी तेज़ भागा कि जा कर पास वाले बरगद के पेड़ से टकरा गया और मर गया।

---

[61] Trapping Rabbits in Taiwan – a folktale from Taiwan, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=182
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[62] Translated for the word "Fot". See its picture above.

किसान बोला — "धन्यवाद भगवान धन्यवाद तुमने तो मेरी प्रार्थना तुरन्त ही सुन ली। अब मैं अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये खरगोश ही पकडूँगा चावल के खेतों में कभी काम नहीं करूँगा।"

उस दिन उसने उस खरगोश की खाल उतारी और उसको पका कर शाम के खाने में खा लिया। अगले दिन वह किसान अपने घर से बाहर निकला और एक पेड़ के नीचे जा कर बैठ गया।

एक पड़ोसी ने उससे पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वह किसान बोला — "मैं यहाँ खरगोश का इन्तजार कर रहा हूँ जो भागे और उस पेड़ से टकरा कर मर जाये तो फिर मैं उसको पका कर खा लूँ।"

फिर उसने अपने पड़ोसी को पिछले दिन की कहानी सुनायी और बोला — "शायद भगवान यही चाहता है कि मैं अब अपनी रोजी रोटी बजाय कीचड़ वाले खेत में काम करने के खरगोश पकड़ कर ही कमाऊँ।"

यह सुन कर उस किसान के सारे दोस्त हँस पड़े। वे बोले — "तुम कभी भी कोई भी खरगोश इस तरह से फिर से नहीं पकड़ सकते। जाओ अपने खेत में अपने काम पर वापस चले जाओ। कोई खरगोश तुम्हारे खाने के लिये यहाँ भागा भागा आ कर इस पेड़ से टकरा कर नहीं मरेगा।" कह कर वे हँसते हँसते चले गये।

वह वहॉ रोज ऐसे किसी खरगोश का इन्तजार करता जो वहॉ आता उस पेड़ से टकराता और उसके लिये मर जाता पर ऐसा कभी नहीं होता। उसको वहॉ बैठा देख कर रोज उसके पड़ोसी उस पर हॅसते रहे और उसको बेवकूफ कहते रहे।

किसान को भी मालूम था कि वे खरगोश के बारे में उससे ठीक ही बोल रहे थे। कोई खरगोश वहॉ भागा भागा आ कर उसके खाने के लिये उस पेड़ से क्यों टकरायेगा।

फिर वह अपने दिमाग से सोचने लगा कि खरगोश अपने आप तो आ कर इस पेड़ से टकरायेगा नहीं पर ऐसा तो कुछ किया जा सकता है जिससे मैं उसको इस पेड़ से टकराने पर मजबूर कर दूॅ। फिर मैं उसको पकड़ लूॅगा।

उसको कुछ याद आया कि खरगोश को गाजर बहुत पसन्द हैं। सो उसने एक गाजर अपने हाथ में पकड़ ली और सारे दिन उसको पकड़ कर वहॉ बैठा रहा और खरगोश को बुलाता रहा।

पर खरगोश को पकड़ने के लिये उसका यह तरीका तो काम नहीं किया। इससे उसके पड़ोसी बहुत खुश हुए। उनको उसके ऊपर हॅसने एक और मौका मिल गया था।

वे हॅस कर बोले — "खरगोश यहॉ आ कर तुम्हारे हाथ से गाजर खाने से डरते हैं।"

किसान ने सोचा — "शायद वे लोग ठीक कहते हैं। अबकी बार में गाजर जमीन पर रख देता हूॅ और पेड़ के ऊपर जा कर

बैठता हूँ। जब खरगोश गाजर खाने आयेंगे तब मैं उनको पकड़ लूँगा।" और यही उसने किया।

अगले दिन उसने एक गाजर जमीन पर रख दी और खुद पेड़ के ऊपर जा कर बैठ गया। तुरन्त ही एक खरगोश वहाँ आया उसने वह गाजर उठायी और इससे पहिले कि वह आदमी उसको पकड़ सकता वह उसको ले कर भाग गया।

उसने खरगोश पकड़ने के लिये यह बार बार किया पर वह खरगोश को पकड़ने के लिये काफी तेज़ नहीं था सो इससे पहले कि वह खरगोश को पकड़े खरगोश उसकी वह गाजर उठा कर भाग जाता था।

उसके पड़ोसी फिर उसके ऊपर खूब हँसे। उन्होंने कहा — "तुम कभी भी इस तरह से खरगोश नहीं पकड़ सकते क्योंकि तुम कभी भी इतनी तेज़ी से पेड़ से नीचे उतर ही नहीं सकते कि तुम भागते हुए खरगोश को पकड़ सको।"

उसने फिर सोचा — "मेरे दोस्त लोग ठीक कहते हैं। अबकी बार मैं ऐसा कर के देखता हूँ कि गाजर एक बक्से में रख देता हूँ और जब खरगोश गाजर खाने आयेगा तब मैं उस बक्से का ढक्कन गिरा कर उस खरगोश को पकड़ लूँगा।"

अगले दिन उसने एक रसीली गाजर एक बक्से में रखी। बक्से के ढक्कन में एक रस्सी बाँधी और उसका दूसरा सिरा ले कर वह पेड़ के ऊपर चढ़ कर बैठ गया।

जब एक खरगोश उस बक्से में से गाजर निकालने गया तो उसने वह रस्सी खींच कर उस बक्से का ढक्कन गिरा दिया। इससे वह बक्सा बन्द हो गया और वह खरगोश उसमें पकड़ा गया।

इस तरह उस आदमी ने उस दिन अपना पहला खरगोश पकड़ा। फिर उसके बाद तो दूसरा। फिर तीसरा। फिर चौथा.... । और फिर तो उसने कई खरगोश पकड़े।

जब उसके दोस्त लोग अपने अपने खेतों पर काम कर के घर वापस जा रहे थे तब वह अपने पकड़े हुए खरगोश घर ले जाने के लिये एक पिंजरे में रख रहा था।

उन्होंने उसके मोटे मोटे खरगोश देखे तो इस बार वे उस पर हॅसे नहीं बल्कि उसको बधाई दी कि वह बजाय चावल उगाने के कुछ और कर सका।

जब उस किसान ने अपने खरगोश उनके साथ बॉटने का फैसला किया तो वे सब बहुत खुश हुए। खाना खाने के लिये वे लोग पका हुआ चावल ले कर आते और वह आदमी अपना पका हुआ खरगोश ले कर आता।

वह बोला — "भगवान ने मेरे दिमाग में यह विचार उठाया कि मैं अपनी रोजी रोटी खरगोश पकड़ कर कमाऊॅ और तुम लोगों की हॅसी ने मेरे दिमाग उनको पकड़ने का सबसे अच्छा तरीका सोचने का मौका दिया। तुम सबका बहुत बहुत धन्यवाद।" इस तरह तैवान में खरगोश पकड़ने का पहला जाल बना।

25 हाथी की नाक लम्बी क्यों[63]

यह लोक कथा हमने एशिया महाद्वीप के थाईलैंड देश की लोक कथाओं से चुनी है। थाईलैंड देश भारत के पूर्व में स्थित है।

बहुत पहले की बात है जब हाथी की भी छोटी नाक हुआ करती है जैसी कि सूअर की होती है। हालॉकि उसकी नाक छोटी थी पर उसकी सूँघने की ताकत बहुत अच्छी थी।

एक बार उसको धुँए की बू आयी तो उसने इधर देखा उधर देखा। उसको आग तो कहीं दिखायी नहीं दी पर उसको मधुमक्खी का एक झुंड दिखायी दे गया।

उसने उन मधुमक्खियों को पुकार कर कहा — "मुझे धुँए की बू आ रही है और जहॉ धुँआ होता है वहॉ अक्सर आग पायी जाती है पर मुझे धुँआ कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

यह सुन कर मधुमक्खियॉ ऊपर की तरफ उड़ गयीं। उत्तर की तरफ आग थी पूर्व की तरफ आग थी। पश्चिम की तरफ आग थी पर दक्षिण की तरफ एक नदी थी और आग उस नदी को पार नहीं कर सकती थी।

---

[63] Why Elephant Has a Long Nose? – a folktale from Thailand, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=222
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[A wonderful version of this story is available in "Shake It Up Tales", by Margaret Read MacDonald, 2000.]

मधुमक्खियॉ बोलीं — "हमारे साथ आओ। हम तुमको नदी की तरफ ले चलेंगे वहॉ तुम सुरक्षित रहोगे।"

सो हाथी मधुमक्खियों के पीछे दक्षिण की तरफ दौड़ चला। दौड़ते दौड़ते वह नदी के किनारे आ गया। वह नदी के बीच में वह सुरक्षित रहेगा यह सोच कर वह नदी में घुस गया।

मधुमक्खियॉ बोलीं — "मिस्टर हाथी, हमने तुम्हें बचाया है सो अब तुम हमारी सहायता करो। आग का धुँआ हमको नुकसान पहुँचा सकता है। हम धुँआ नहीं सहन कर सकतीं।

तुम अपना मुँह खोलो ताकि हम तुम्हारे मुँह में घुस सकें। वहॉ हम आग और उसके धुँए दोनों से सुरक्षित रहेंगीं। जब आग और धुँआ चला जायेगा तब हम बाहर आ जायेंगीं।"

यह तो ठीक था कि जब मधुमक्खियों ने हाथी की सहायता की तो हाथी को भी मधुमक्खियों की सहायता करनी चाहिये। सो हाथी ने अपना मुँह खोल दिया और मधुमक्खियॉ उसके मुँह में चली गयीं।

उफ़ उनके मुँह में घुसते ही हाथी के सिर में तो बहुत ज़ोर की ज़ ज़ ज़ ज़ की आवाज होनी शुरू हो गयी। वह आवाज हाथी के कानों में भी दर्द कर रही थी।

जब आग खत्म हो गयी तो हाथी बोला — "ओ मधुमक्खियों, अब तुम बाहर आ जाओ आग खत्म हो गयी है।"

पर मधुमक्खियॉ बोलीं — "हमको तो यहॉ बहुत अच्छा लग रहा है अब हम बाहर नहीं निकलेंगीं।"

हाथी ने अपना सिर हिलाया। हाथी ने अपने कान हिलाये। हाथी ऊपर कूदा। हाथी नीचे कूदा। हाथी को सिर दर्द हो गया पर मधुमक्खियॉ बाहर ही नहीं निकलीं।

हाथी को पता था कि मधुमक्खियॉ पानी से बहुत नफरत करती थीं सो उसने अपनी नाक से पानी पिया और उसको बाहर फेंक दिया। फिर भी ज़ ज़ ज़ ज़। मक्खियॉ उसके सिर में फिर भी भिनभिनाती रहीं।

हाथी अपनी नाक में से हवा निकालता रहा और जैसे जैसे वह अपनी नाक में से हवा निकालता रहा उसकी नाक लम्बी होती गयी और उसके सिर में मक्खियों का भिनभिनाना भी जारी रहा।

हाथी को फिर याद आया कि मधुमक्खियों को धुँआ भी अच्छा नहीं लगता सो वह वापस वहीं गया जहॉ आग बुझ गयी थी। फिर वह उधर भी गया जहॉ एक पेड़ अभी भी जल रहा था। हाथी ने उसका धुँआ अपनी नाक से ऊपर खींचा और अपना मुँह खोल दिया।

मधुमक्खियॉ बोलीं — "हमें धुँए से नफरत है।" और यह कहती हुई वे हाथी के मुँह से बाहर निकल गयीं।

वहीं उनको एक खोखला पेड़ दिखायी दे गया जो आग में नहीं जला था। उसमें एक इतना बड़ा छेद था जिसमें हाथी का पूरा सिर

आ सकता था। वहीं उन्होंने अपना नया घर बनाया और वहॉ वे आराम से रहीं।

तभी से मधुमक्खियॉ पेड़ के खोखले हिस्से में अपने छत्ते बनाना पसन्द करती हैं और तभी से हाथी की नाक भी लम्बी है।

कुछ हाथियों को तो अभी भी ऐसा लगता है कि मधुमक्खियॉ उनके सिर के अन्दर हैं सो वे अपनी लम्बी नाक से पानी ऊपर चढ़ा कर फिर उसे बाहर फेंक देते हैं ताकि उनके सिर में उनकी भिनभिनाहट कुछ कम हो जाये।

26 कैन्डी वाला आदमी[64]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[65] – औसतन 16 हजार फीट। इसीलिये इसको संसार की छत भी कहा जाता है।

एक बार की बात है कि तिब्बत के पहाड़ों में दो भाई रहा करते थे। जब उनके माता पिता मर गये तो उनका सब कुछ बड़े भाई को मिल गया।

सो अब बड़ा भाई अमीर था और छोटे भाई के पास कुछ भी नहीं था। बड़े भाई के पास तो अपनी जरूरत से भी ज़्यादा पैसा था पर वह खुश नहीं था। उसको जो कुछ पैसा अपने माता पिता से मिला था वह उसने ऊँचे ब्याज पर उधार दे दिया। इससे उसका पैसा और बढ़ गया था पर फिर भी वह खुश नहीं था। वह बहुत ही लालची था।

छोटे भाई के पास कोई पैसा नहीं था पर फिर भी वह हमेशा मुस्कुराता रहता। वह रोज रोज घर घर काम माँगने जाता था और जो भी काम उसको मिल जाता वह बेचारा उसी को कर लेता।

---

[64] The Candy Man – a folktale from Tibet, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=209
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[65] Tibet is called “The Roof the World”.

वह कभी अपने भाई के बारे में भी कोई शिकायत नहीं करता बल्कि अपने बड़े भाई के बारे में भी अच्छा ही बोलता था और अच्छा ही सोचता था।

एक दिन छोटे भाई को एक पहाड़ी पर लगे एक प्रकार के पेड़ के रस की भारी भारी भरी बालटियॉ उठाने का काम मिला। वह रस वहॉ इकट्ठा किया जाता था और फिर वहॉ से वह बालटियों मे भर कर पहाड़ियों के नीचे लाया जाता था जहॉ उसको पका कर उसका मीठा शहद और मीठी गोलियॉ बनायी जाती थीं।

एक बार जब वह रस से भरी उन बालटियों को ले कर नीचे आ रहा था तो उसका पैर फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा। वह लुढ़कता चला गया और वह रस उसके सारे शरीर पर लिपटता चला गया। जब वह रुका तो उसके चारों तरफ राक्षस[66] खड़े हुए थे।

राक्षस चिल्लाये — "कैन्डी[67] वाला आदमी। कैन्डी वाला आदमी।"

राक्षसों को कैन्डी बहुत अच्छी लगती थी सो वे बाले — "अरे आज तो हमारे पास खाने के लिये एक कैन्डी वाला आदमी है।"

उन राक्षसों ने उस छोटे भाई को उठा लिया और उसको पहाड़ में बनी अपनी एक गुफा में ले गये। कुछ राक्षस तो उसको तभी

[66] Translated for the word "Goblin"

[67] Sweet balls of sugar for children

खाना चाहते थे पर राक्षसों के राजा ने उनको ऐसा करने से रोक दिया।

वह बोला — "यह हमारा तरीका नहीं है।" फिर उसने एक जादू का ढोल बजाया तो कमरे के बीच में एक मेज पर बहुत सारा खाना प्रगट हो गया।

उन राक्षसों की नाकें लम्बी होने लगीं जिनसे वे खाने की खुशबू अच्छी तरह से ले सकते थे। जैसे ही उनकी नाकें लम्बी हुईं तुरन्त ही वे अपने मुँह के एक ही दाँत से माँस, डबल रोटी और केक पर टूट पड़े।

छोटे भाई को वह खाना सूँघने में बहुत ही स्वादिष्ट लग रहा था। उसने इतने स्वादिष्ट खाने की खुशबू पहले कभी नहीं सूँघी थी पर इस समय वह चुपचाप पड़ा रहा।

राक्षसों के राजा ने अपना वह ढोल एक बार फिर बजाया और बोला — "अब तुम लोग नदी तक हो कर आओ फिर हम अपने इस कैन्डी वाले आदमी को खायेंगे।" सारे राक्षस वहाँ से बाहर की तरफ भाग गये और छोटा भाई अब गुफा में अकेला रह गया।

वह बिल्कुल चुपचाप बैठा रहा ताकि राक्षस उसे न खायें। सबके जाने के बाद वह कूदा और वह जादू का ढोल उठा कर गुफा के बाहर भाग लिया और अपने घर का रास्ता ढूँढ कर अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने वह ढोल बजाया तो उसके पास तो खाने के लिये भी खाना था और बेचने के लिये भी खाना था। धीरे धीरे उसके पास भी अब अपने कुछ पैसे हो गये तो उसने भी अपने बड़े भाई जितना बड़ा घर खरीद लिया।

बहुत जल्दी ही उसके बड़े भाई को उसकी खुशकिस्मती के बारे में पता चल गया। उसने अपने छोटे भाई से प्रार्थना की कि वह उसको यह बता दे कि वह अमीर कैसे बना। छोटा भाई तो बहुत दयालु था सो उसने अपने बड़े भाई को सब बता दिया।

सुनते ही उसका बड़ा भाई उसी पहाड़ी के ऊपर दौड़ गया और वहॉ से रस की बालटियॉ ले कर लौटा तो अपने शरीर पर बहुत सारा रस लपेट लिया और पहाड़ी से नीचे लुढ़क गया।

वह भी अपने छोटे भाई की तरह उन राक्षसों के बीच आ पहुॅचा। उन राक्षसों में से एक राक्षस बोला — "अरे देखो यह तो हमारा वही कैन्डी वाला आदमी है।"

कहते हुए वे राक्षस उसको घसीटते हुए अपनी गुफा में ले गये। वह वहॉ चुपचाप ही रहा ताकि मौका पड़ने पर वह अपना जादू का ढोल वहॉ से उठा कर भाग सके।

"पिछली बार तो हमारा कैन्डी वाला आदमी हमारे खाने से पहले ही भाग गया था। इस बार हम ऐसा नहीं होने देंगे। चलो इसको हम पहले पिघलाते हैं और खाना खाने से पहले ही इसका रस पी लेते हैं।"

कह कर राक्षसों ने उस बड़े भाई को एक बड़े से बर्तन में रखा और उस बर्तन को ढक दिया। फिर उन्होंने उसके नीचे आग जलायी। जैसे ही उन्होंने आग जलायी वह बड़ा भाई तो तुरन्त ही उस बर्तन का ढक्कन हटा कर उसमें से बाहर कूद गया।

राक्षस बोले — "अरे यह हमारा वाला कैन्डी वाला आदमी नहीं है। लगता है यह तो कोई मामूली चोर है।"

राक्षसों के राजा ने अपना दूसरा जादू का ढोल बजाया और उस भाई की नाक खींचनी शुरू की। उस ढोल के बजाने से उसकी नाक लम्बी होती चली गयी। वे तब तक अपना ढोल बजाते रहे जब तक कि उसकी नाक सात फीट लम्बी नहीं हो गयी।

राक्षसों को नोचना बहुत अच्छा लगता है सो नाक बढ़ाने के बाद में उन्होंने उसके सारे शरीर को नोचना शुरू कर दिया।

बड़े भाई के पास अपने बचाव के लिये और तो कुछ था नहीं तो उसने अपनी लम्बी नाक को ही इधर उधर घुमा कर कोड़े की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

इस तरह उसने सब राक्षसों को नीचे गिरा दिया और गुफा से बाहर की तरफ भागा। घर आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "जल्दी दरवाजा खोलो।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही दरवाजा खोला। जैसे ही वह जल्दी से अपने घर में घुसा तो जल्दी में अपनी लम्बी नाक में उलझ कर घर में अन्दर की तरफ गिर पड़ा।

सब कुछ सुन कर उसकी पत्नी अपने पति के छोटे भाई के पास गयी और उससे कहा — "यह सब तुम्हारी अपनी गलती है। अगर तुमने मेरे लालची पति को यह न बताया होता कि तुम अमीर कैसे हुए तो आज उसकी नाक सात फीट लम्बी न हुई होती।"

छोटे भाई को पता था कि उसके भाई की नाक सात फीट लम्बी केवल उसके लालची होने की वजह से ही हुई है फिर भी वह क्योंकि अपने भाई को बहुत प्यार करता था उसने अपने भाई से वायदा किया कि वह उसकी सात फीट लम्बी नाक का कोई हल जरूर निकालेगा।

अगले दिन छोटा भाई फिर से उन राक्षसों की गुफा में गया। वहॉ उसने तब तक इन्तजार किया जब तक वे राक्षस अपनी गुफा से बाहर जाने लगे।

जाते जाते वे आपस में बात करते जा रहे थे — "कल उस चोर की नाक लम्बी करने में कितना मजा आया। यह कितनी बुरी बात है कि उसको यह नहीं मालूम था कि अपनी नाक को पहले जैसा करने के लिये उसको केवल जादू का ढोल पीट कर यह कहना था "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

बस छोटे भाई को तो यही मालूम करना था। यह सुन कर वह दौड़ा दौड़ा घर आया। उसने अपना वह जादू का ढोल बजाया और बोला "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

पहली बार इस तरह कहने से उसके भाई की नाक करीब दो इंच सिकुड़ गयी। यह देख कर छोटा भाई बहुत खुश हुआ। वह तब तक उस ढोल को बजाता रहा और "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।" दोहराता रहा जब तक उसके भाई की नाक तीन फीट नहीं रह गयी।

पर तब तक उसकी पत्नी से सब्र नहीं हुआ वह बेसब्री से चिल्लायी — "यह ढोल तुम मुझको दो। मैं देखती हूँ।"

कह कर उसने अपने पति के छोटे भाई से वह ढोल जबरदस्ती छीन लिया और उसे जल्दी जल्दी बजाना शुरू किया। अब उसके पति की नाक जल्दी जल्दी सिकुड़ रही थी और अब वह बहुत खुश थी।

पर फिर भी "नाक सिकुड़" कह कर उसने वह ढोल बहुत ज़ोर से पीट दिया तो एक ही बार में उसके पति की नाक छोटी हो कर उसके चेहरे से जा कर चिपक गयी।

अब आज तक उस भाई के कोई नाक नहीं है। उसको अपने लालच का फल मिल गया था।

27 चीता और मेंढक[68]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[69] – औसतन 16 हजार फीट और इसी लिये इसको "संसार की छत" भी कहते हैं।

यह तब की बात है जब दुनियॉ बनी ही बनी थी और सारे जानवर एक ही भाषा बोलते थे। एक दिन एक चीता अपना खाना ढूँढने के लिये बाहर निकला कि रास्ते में उसको एक बहुत बड़ा मेंढक दिखायी दे गया।

मेंढक ने भी चीते को देख लिया और वह जान गया कि वह भूखा था। इस समय उसके पास बचने के लिये कोई रास्ता नहीं था सो उसने अपने दिमाग से काम लेने का विचार किया।

जब चीता पास आ गया तो वह बोला — "हलो मिस्टर चीते तुम कहॉ जा रहे हो?"

---

[68] The Tiger and the Frog – a folktale from Tibet, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=227
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[69] Tibet is called "The Roof the World".

चीता बोला — "मैं जंगल जा रहा था अपने लिये कुछ खाना ढूँढने के लिये। मुझे बहुत भूख लगी थी पर क्योंकि अब मुझे तुम मिल गये हो सो अब मैं तुम्हें ही खा लेता हूँ।"

मेंढक ने अपना शरीर फुलाया और बोला — "क्या तुमको मालूम है कि तुम मेरी जमीन पर शिकार कर रहे हो? मैं मेंढकों का राजा हूँ और चारों तरफ की यह सारी जमीन मेरी है। मैं बहुतों से बहुत दूर कूद सकता हूँ और मैं बड़े बड़े जानवर खाता हूँ।"
यह सुन कर चीता मेंढक पर हँस पड़ा।

हँसते हँसते जब वह रुका तो बोला — "तुम तो बहुत ही छोटे हो मेंढक राजा। तुम तो निश्चित रूप से मुझसे ज़्यादा दूर तक नहीं कूद सकते। इससे पहले कि मैं तुम्हें खाऊँ मेरा और तुम्हारी कूद का मुकाबला हो जाये।"

वहीं पास में एक नदी बह रही थी। चीता उस नदी की तरफ देखते हुए बोला — "इस नदी के उस पार से भी ज़्यादा दूर तक कूदने की कोशिश करो तब देखूँ।" कह कर वह नदी के उस पार कूद गया।

पर चीते के कूदने से पहले ही मेंढक ने अपनी लम्बी जीभ से उसकी पूँछ पकड़ ली। जब चीता नदी के उस पार पहुँच गया तो पलट कर उसने नदी के पानी की तरफ देखा।

जैसे ही चीता पलटा तो मेंढक ने उसकी पूँछ छोड़ दी और वह चीता जहाँ उसको देखना चाह रहा था उस जगह से भी कहीं दूर कूद कर जा कर पड़ा।

वह वहीं से चिल्लाया — "मिस्टर चीते, तुम मुझे नदी में क्यों ढूँढ रहे हो? मैं तो यहाँ बैठा हूँ। मैं तुमसे कूद में आगे निकल गया। अब मुझे भूख लग आयी है अब मैं तुमको खाऊँगा।

पर इससे पहले कि मैं तुमको खाऊँ मैं अपने मुँह में से ज़रा चीते के बाल तो निकाल लूँ।" सो उसने अपने मुँह में से चीते की पूँछ के बाल थूकने शुरू कर दिये।

चीते को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेंढक के मुँह में चीते के बाल कहाँ से आये सो उसने मेंढक से पूछा — "पर तुम्हारे मुँह में ये चीते के बाल आये कहाँ से?"

मेंढक बोला — "ओह कल यहाँ एक चीता शिकार करने के लिये आया था। मैं उसके ऊपर कूदा और उसको खा लिया। वह था तो बहुत ही स्वादिष्ट पर उसके शरीर पर बाल बहुत थे। वे अभी तक मेरे मुँह में चिपके हुए हैं।"

अब चीते ने सोचना शुरू किया कि यह मेंढक देखने में तो कितना छोटा है पर लगता है कि बहुत ताकतवर है। यह तो मुझसे भी ज़्यादा दूर तक कूद गया और कल इसने एक चीता भी खा लिया। इससे पहले कि यह मुझे खा जाये मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये।

यह सोचते हुए चीता धीरे धीरे पीछे खिसकने लगा और फिर मौका देखते ही जंगल में दूर भाग गया।

जब वह भाग रहा था तो उसको एक लोमड़ा मिला। लोमड़े ने उससे पूछा — "क्या हुआ चीते भाई, तुम इतनी तेज़ तेज़ क्यों भागे जा रहे हो?"

चीता हॉफता सा बोला — "मैं अभी मेंढकों के राजा से मिला था। वह देखने में तो बहुत छोटा सा है पर है बहुत ही ताकतवर। वह मुझसे ज़्यादा दूर तक कूद सकता है और कल तो उसने एक चीता ही खा लिया था।"

यह सुन कर लोमड़ा बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम जैसा बड़ा चीता उस छोटे से मेंढक से डर कर भाग सकता है। मैं तो तुमसे भी छोटा हूॅ पर मैं उस मेंढक से ज़्यादा ताकतवर हूॅ। आओ मेरे साथ और मुझे उसको खाते हुए देखो।"

चीता बोला — "मुझे मालूम है कि मेंढक क्या कर सकता है पर फिर भी अगर तुम यह सोचते हो कि तुम उससे ज़्यादा ताकतवर हो तो चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूॅ।

पर मुझे डर है कि तुम भी उससे डर जाओगे और वहॉ से भाग जाओगे इसलिये हमको अपनी पूछें आपस में बॉध लेनी चाहिये।" सो दोनों ने अपनी अपनी पूॅछें आपस में गॉठ लगा कर बॉध लीं।

जब मेंढक ने दोनों को एक साथ आते हुए देखा तो बोला — "ओह मिस्टर लोमड़े अच्छा हुआ तुम समय से मेरा खाना ले कर आ गये। मुझे तो डर था कि कहीं मुझे बजाय चीते जैसे बड़े जानवर के तुम जैसे छोटे जानवर को ही न खाना पड़ जाये।"

चीता यह सुन कर फिर डर गया। उसको लगा कि यह लोमड़ा चालाकी से उसको मेंढक के पास उसको खिलाने के लिये ले जा रहा है सो वह तुरन्त पलटा और लोमड़े को अपने पीछे घसीटता हुआ वहॉ से भाग लिया।

अगर वे दोनों मरे नहीं हैं तो वे अभी भी मेंढक से डर कर भाग रहे होंगे।

28 दो खरगोश और एक भालू[70]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश[71] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक जंगल में दो खरगोश इधर उधर कूद रहे थे। वे बहुत खुश थे। एक खरगोश बोला — "मुझे खुशी है कि हम आपस में कितने अच्छे दोस्त हैं। हम दोनों साथ साथ घूमते हैं साथ साथ खाते हैं साथ साथ रहते हैं।

अब हमें आपस में यह वायदा भी करना चाहिये कि अगर कोई दुश्मन हम पर हमला करेगा तो हम एक दूसरे की सहायता करेंगे।"

दूसरा खरगोश बोला — "हॉ यह तो है। पर मैं तुम्हारी तब सहायता करूँगा जब तुम मेरी सहायता करोगे।"

उसी समय दोनों खरगोशों ने बहुत ज़ोर से गुर्राने की आवाज सुनी। दोनों खरगोशों ने एक दूसरे की तरफ देखा। यह तो भालू की आवाज थी। पहला खरगोश तुरन्त ही एक घनी सी कॉटे वाली झाड़ी में जा कर छिप गया जहॉ वह भालू उसको देख नहीं सकता था।

---

[70] Two Rabbits and a Bear – a folktale from Tibet, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=242 By Mike Lockett

[71] Tibet is called "The Roof the World".

दूसरा खरगोश थोड़ा मोटा था सो जब वह भाग रहा था तो वह गिर गया। समय कम था भालू पास आ रहा था सो वह वहीं ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

पहले वाले खरगोश ने अपने दोस्त की सहायता करने के बारे में अचानक अपना दिमाग बदल दिया और वहीं सुरक्षित खड़ा रहा जहॉ वह खड़ा था।

वह देख रहा था जब भालू उसके दोस्त के पास आया। भालू ने अपने पंजे से खरगोश को हिलाया डुलाया। फिर उसने अपना सिर नीचा कर के खरगोश के कान सूँघे। उसके बाद वह वहॉ से चला गया।

जब भालू वहॉ से चला गया तो वह दूसरा खरगोश अपनी जगह से उठ गया। पहला वाला खरगोश भी अपनी झाड़ी में से निकल आया।

उसने बाहर निकल कर दूसरे वाले खरगोश से पूछा — "ऐसा लगता था कि यह भालू तुमसे कुछ कह रहा था। क्या कह रहा था यह?"

दूसरा खरगोश बोला — "वह कह रहा था कि अपने दोस्त का विश्वास मत करना। वह तुम्हें तब छोड़ कर भाग गया जब तुम्हें उसकी सबसे ज़्यादा जरूरत थी।"

29 दस्ताने[72]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के यूक्रेन देश की है। एक बार की बात है कि एक छोटे बच्चे ने अपनी दादी से अपने लिये दस्ताने बनाने के लिये कहा ताकि बर्फ में उसके हाथ गर्म रह सकें।

उसकी दादी बोली — "ठीक है मैं तुम्हारे लिये लाल दस्ताने बना दूँगी।"

बच्चा बोला — "पर दादी मुझे तो सफेद दस्ताने चाहिये।"

दादी बोली — "नहीं नहीं। अगर तुम्हारा सफेद दस्ताना कहीं बर्फ में गिर गया तो फिर तुमको वह कभी मिलेगा भी नहीं। चलो मैं तुम्हारे लिये गुलाबी रंग के दस्ताने बना दूँगी।"

बच्चे ने फिर जिद की — "नहीं गुलाबी नहीं दादी। मुझे तो सफेद दस्ताने ही चाहिये।"

वह बच्चा उसका पोता था और वह दादी अपने पोते को बहुत प्यार करती थी सो उसने अपने पोते के लिये बर्फ जैसे सफेद रंग के दस्ताने बना दिये।

उस बच्चे ने अपने वे सफेद दस्ताने पहने और बाहर बर्फ में खेलने चला गया।

---

[72] The Mittens – a folktale from Ukraine, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=180 Retold and written by Mike Lockett. A book by Jan Brett is available through Scholastic. It retells this beautiful folktale.

वहाँ जा कर उसने बर्फ का एक आदमी[73] बनाया और एक ऐन्जिल[74] बनाया और कुछ बर्फ की गेंदें बनायीं उन पर मारने के लिये।

खेलते खेलते उसको कुछ गर्म लगने लगा तो उसने अपने दस्ताने उतार दिये और उतार कर उनको अपनी जेब में रख लिया। कम से कम उसको तो ऐसा ही लगा कि वे उसने उनको अपनी जेब में रख लिया।

पर उसको पता ही नहीं चला कि कब उन दो दस्तानों में से उसका एक दस्ताना तो उसकी जेब में रखा गया पर दूसरा दस्ताना वहीं नीचे जमीन पर गिर पड़ा। दस्ताने जेब में रख कर वह कहीं और खेलने के लिये भाग गया।

एक छोटे से जानवर बड़े चूहे[75] को वह दस्ताना मिल गया। वह उसको बहुत गर्म और आरामदेह लगा सो उसने अपनी नाक उसके अन्दर घुसा ली।

फिर उसने अपने कान भी उसके अन्दर घुसा लिये। इसके बाद उसने अपना पूरा सिर अन्दर घुसा लिया। उसको पहन कर अब वह चारों तरफ घूमने लगा और अब वह दस्ताना और बड़ा हो गया।

[73] Snowman
[74] Snow Angel
[75] Translated for the word “Mole”. See its picture above.

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उस बड़े चूहे को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक खरगोश आया।

खरगोश ने पूछा — "बड़े चूहे भाई, क्या मैं भी इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वह बड़ा चूहा "ना" कहना चाह रहा था पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उसने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

खरगोश ने भी उसके अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना पूरा सिर घुसा दिया। वह भी उसको पहन कर चारों तरफ घूम गया और वह दस्ताना और बड़ा हो गया। जल्दी ही वह दोनों जानवरों के लिये काफी बड़ा हो गया।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उसमें उन दोनों जानवरों को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक लोमड़ा आया।

लोमड़े ने पूछा — "क्या मैं भी इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे दोनों उस लोमड़े को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने उससे कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

लोमड़े ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी चारों तरफ को घूमा और उसके अन्दर आ गया। वह दस्ताना अब और भी ज़्यादा बड़ा हो गया था। पर अभी वह तीन जानवरों के लिये भी काफी बड़ा था।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उन तीनों जानवरों को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक भालू आ गया।

भालू ने पूछा — "क्या मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे तीनों उस भालू को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने उससे कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

भालू अपनी भारी सी आवाज में बोला — "हॉ हॉ। मैं इसमें आ सकता हूँ।"

भालू ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी उसके अन्दर घुस कर चारों तरफ को घूमा और वह भी उसके अन्दर आ गया। अब वह दस्ताना और भी ज़्यादा बड़ा हो गया था। अब वह चार जानवरों के लिये काफी था।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उन चारों जानवरों को नींद आने लगी वे सब सोने ही वाले थे कि तभी वहॉ एक छोटा सा चूहा आ गया।

चूहे ने पूछा — "क्या मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे चारों उस चूहे को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने उससे कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

भालू बोला — "जब मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ तो यह चूहा तो इसके अन्दर आ ही सकता है।"

सो चूहे ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी उसमें चारों तरफ को घूमा और वह दस्ताना और भी ज़्यादा बड़ा और और बड़ा हो गया। अब वह पॉच जानवरों के लिये भी काफी बड़ा था।

तभी "पाउ" और वह दस्ताना तो पलट गया और सारे जानवर उसमें से बाहर निकल पड़े।

भालू तो एक गुफा में जा कर गिरा जहॉ जा कर वह सो गया। लोमड़ा एक पेड़ के पास एक गड्ढे में जा कर गिरा और वहॉ जा कर वह भी सो गया।

खरगोश कहीं घास में जा कर गिरा था सो वह वहॉ सो गया और वह बड़ा चूहा बर्फ में जा कर गिरा जहॉ उसको अपने घर का रास्ता मिल गया सो वह अपने घर में जा कर सो गया।

और चूहा? वह बेचारा तो अभी तक अपना घर ढूँढ रहा है। शायद वह तुम्हारे घर सोने के लिये आ जाये। ज़रा ख्याल रखना।

उधर वह दस्ताना हवा में उड़ा और उड़ कर सीधा बच्चे के पैरों के पास जा पड़ा।

उसने वह दस्ताना उठाया अपने हाथ में पहना और अपने घर भाग गया दादी को यह बताने के लिये कि सफेद दस्ताने पहनने के लिये उस पर विश्वास किया जा सकता है और वह उनको खो नहीं सकता।

दादी अपने पोते से बहुत खुश थी कि उसका पोता बर्फ में सफेद दस्ताने पहन सकता था और उनको खो नहीं सकता था पर वह बेचारी यह कभी नहीं जान सकी कि उसका एक दस्ताना दूसरे दस्ताने से इतना ज़्यादा बड़ा क्यों था।

30 एक मछियारा, एक कीड़ा और एक घोंघा[76]

वियतनाम के बहुत सारे लोग वफादारी गुणों और अक्लमन्दी की बहुत कद्र करते हैं। और यह वहॉ की कहानियों में भी दिखायी देता है। वहॉ के लोग परिवार की भलाई के लिये अपनी इच्छाओं तक को छोड़ देते हैं।

यहॉ वियतनाम की दो लोक कथाऐं दी जा रही हैं जिनमें इन गुणों को दिखाया गया है। इनको पढ़ कर तुम सोचो कि तुमको इनमें से किसका चरित्र ज़्यादा अच्छा लगा – चीते का? या कीड़े और घोंघे का?

बहुत पुरानी बात है कि एक मछियारा अपनी बूढ़ी मॉ की बहुत अच्छी तरह से देखभाल करता था। हर शाम को वह अपना जाल नदी में फेंकता हर सुबह वह उस जाल में पकड़ी हुई मछलियॉ घर ले आता। इस तरह वे अपना गुजारा करते थे।

एक सुबह उसने देखा कि उसका एक जाल फट गया है और उसमें कोई भी मछली नहीं है। वह उस जाल को घर ले आया और उसको ठीक किया। शाम को वह फिर अपने कई जाल नदी में डाल आया।

[76] A Tiger, a Worm, and a Snail – a tale from Vietnam, Asia. Translated from the Web Site : http://urbanlegends.about.com/library/bltiger.htm Written by Peter Kohler

अगले दिन सुबह जब वह अपने जाल देखने गया तो यह देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उसके तो सारे जाल टूटे हुए थे और उलझे हुए थे। और उनमें से किसी एक जाल में भी एक भी मछली नहीं थी।

सो उस दिन सारे दिन उसने अपने सारे जाल फिर से ठीक किये और शाम को फिर उनको नदी में बिछा आया। पर अगले दिन उसको फिर वही देखने को मिला कि उसके सारे जाल फटे टूटे थे और उनमें से किसी एक जाल में भी कोई मछली नहीं थी।

यह सब कई दिनों तक चलता रहा। उसकी मॉ खाने के बिना रोज ब रोज कमजोर होती गयी। यह देख कर उसने निश्चय किया कि वह नदी के पास कहीं सायों में छिप कर रात भर पहरा देगा और उसको पकड़ेगा जो भी उसके साथ यह सब कर रहा था।

उसने ऐसा किया पर अगले दिन उसका मरा हुआ शरीर नदी के किनारे पाया गया। गॉव वालों का कहना था कि यह काम किसी चीते[77] का था जिससे वहॉ सब लोग डरते थे। उससे तो वे इतना डरते थे कि वे जंगलों में भी बहुत डर डर कर जाते थे।

यह सब देख सुन कर मछियारे की मॉ को बहुत ज़्यादा दुख हुआ। वह करीब करीब रोज ही उसकी कब्र पर जाने लगी।

[77] Translated for the word “Leopard”. See its picture above.

एक दिन जब वह दुख से भरी हुई अपने बेटे की कब्र से घर वापस लौट रही थी उसको एक चीता मिला।

दुखी तो वह थी ही सो उसी दुखी मन से उसने चीते से पूछा — "क्या तुम ही वह चीते हो जिसने मेरे बेटे को खाया है? अब तुम ही बताओ कि मैं क्या करूँ। मैं तो बहुत जल्दी भूख और अपने बेटे के दुख से मर जाऊँगी न।"

यह सुन कर चीता बेचारा वहीं का वहीं खड़ा रह गया। मछियारे की माँ फिर बोली — "क्या तुम मेरे लिये वह सब कर सकोगे जो मेरा बेटा मेरे लिये करता था?"

चीते ने हाँ में सिर हिलाया पर बुढ़िया ने उसका सिर हिलाना देखा नहीं और मुँह मोड़ कर अपने घर की तरफ चली गयी।

उस दिन के बाद अगले दिन और फिर हर कुछ दिन बाद उस बुढ़िया को अपने घर के दरवाजे पर एक मरा हुआ हिरन या एक सूअर पड़ा मिलता। वह जल्दी से उसे पकाती और पेट भर कर खाती। बाकी बचा हुआ माँस वह बाजार में बेच आती।

जब यह सब दो महीने तक चलता रहा तो उसने यह पता करने का निश्चय किया कि यह दया उस पर कौन दिखा रहा है। वह इस बात को पता करने के लिये रात भर जागती रही।

सुबह सबेरे उसने देखा कि वही चीता जिससे वह उस दिन कब्र से आते समय मिली थी एक ताजा शिकार ले कर आ रहा था।

उसने वह शिकार ला कर उसके दरवाजे पर छोड़ दिया और वापस जाने लगा।

बुढ़िया ने उस चीते को अन्दर बुलाया और फिर धीरे धीरे उन दोनों में दोस्ती हो गयी। अब जब भी वह उस बुढ़िया के घर शिकार ले कर आता वह बुढ़िया से जरूर मिल कर जाता।

एक बार वह चीता बहुत बीमार हो गया पर फिर भी वह उस बुढ़िया के घर आया। तो बुढ़िया ने उसको अपने घर में रख लिया और उसकी जब तक सेवा की जब तक वह ठीक नहीं हो गया।

यह सब तब तक चलता रहा जब तक कि वह बुढ़िया बहुत बीमार हो कर मरने वाली नहीं हो गयी।

मरते मरते उसने चीते से कहा — "तुम मुझसे वायदा करो कि तुम अब किसी और आदमी को नहीं मारोगे।"

यह सुन कर चीते ने सिर झुका लिया और हॉ में अपना सिर हिलाया। वह उसके पास सारी रात बैठा रहा।

जल्दी ही गॉव वालों को उस बुढ़िया के दरवाजे पर बहुत सारे शिकार किये जानवरों का ढेर मिला जो उसके दफ़न की दावत के लिये था। और जब उसका दफ़न हो रहा था तो गॉव वालों ने चीते की बहुत ज़ोर की दहाड़ भी सुनी।

वहॉ के सारे गॉवों में यह एक रिवाज था कि सारे लोग साल के आखिरी महीने के तीसवें दिन एक जगह इकट्ठा होते थे और आत्माओं को भेंट देते थे ताकि वे सब एक साथ कुछ समय गुजार

सकें। सो लोगों ने देखा कि उस दिन वह चीता भी एक शिकार की भेंट ले कर वहॉ आया करता था।

यह दूसरी कहानी एक घोंघे और एक कीड़े की है। एक बार पहाड़ों में जहॉ से लाल नदी की घाटी दिखायी देती थी एक परिवार रहता था। उस परिवार में दो लड़कियॉ थीं जो हमेशा अपना काम करती रहती थीं।

फिर भी एक दिन शाम को जब वे घर लौट रहीं थीं तो रास्ते में वे अंजीर खाने के लिये रुक गयीं। अंजीर खाने के बाद उस शाम को उनको बड़ा अजीब सा महसूस हुआ।

समय आने पर उन दोनों ने दो बच्चों को जन्म दिया। एक ने एक कीड़े को और दूसरी ने एक घोंघे को। जिन दो औरतों ने उनको जन्म देने में सहायता की थी वे वहॉ से चिल्लाती हुई भाग गयीं — "राक्षस राक्षस राक्षस।"

वे लड़कियॉ और सारा गॉव सभी इस घटना से डर गये और उस कीड़े और घोंघे को वाकई में राक्षस समझने लगे। सो सारे लोग उस कीड़े और घोंघे को खाली गॉव में अकेला छोड़ कर वहॉ से भाग गये।

वह कीड़ा और घोंघा वहॉ कई साल तक अकेले घूमते रहे। कभी कभी वे एक दूसरे से मिल जाते थे। फिर उन्होंने सोचा कि

अपने अकेलेपन को दूर करने के लिये अगर वे साथ साथ रहें तो ज़्यादा अच्छा है सो उसके बाद उन्होंने आपस में शादी कर ली और वे पति पत्नी बन गये।

इसके जल्दी ही बाद एक बरसाती रात को बहुत तेज़ तूफ़ान आया। खूब ज़ोर की हवाऐं चलने लगीं और तेज़ बारिश होने लगी। अगले दिन घोंघे ने देखा कि उनके घर में एक बहुत ही सुन्दर आदमी खड़ा है।

घोंघे ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो उस आदमी के जवाब ने तो उसको आश्चर्यचकित ही कर दिया। वह बोला — "मैं तुम्हारा पति हूँ।" और उसने अपनी कीड़े वाली खाल उतार कर जमीन पर फेंक दी।

बाद में उसी दिन उस आदमी ने देखा कि उसके घर में एक बहुत सुन्दर लड़की घुस रही है। उसने उस लड़की से कहा — "अभी मेरी पत्नी घर पर नहीं है।"

उस लड़की ने अपना घोंघे वाला खोल उतारा और जमीन पर फेंकते हुए कहा — "हाँ है न, और वह मैं हूँ।"

दोनों एक दूसरे को आश्चर्य और खुशी से देखने लगे। तब उन्होंने महसूस किया कि कल रात को जो तूफान आया था उसी ने उन दोनों का रूप बदल दिया है।

दोनों अपनी ज़िन्दगी प्यार से रह कर गुजारने लगे। उन्होंने वहॉ खेती करनी शुरू कर दी। वहॉ की जमीन बहुत उपजाऊ थी सो उनकी फसल भी खूब अच्छी होने लगी।

एक दिन जब वे अपनी फसल काट रहे थे उन्होंने दो कौओं को बराबर के गॉव के हालात को बुरा भला कहते हुए सुना कि वहॉ के खेत सूखे थे और फसल भी वहॉ अच्छी नहीं हुई थी।

इन पति पत्नी ने उन गॉव वालों की सहायता करने का निश्चय किया। वे उस गॉव में गये जहॉ से वे आये थे और जब वे वहॉ पहुॅचे तो लोगों को पता चला कि वे तो वे वही घोंघे और कीड़े थे जिनको वे बरसों पहले गॉव में अकेले छोड़ आये थे। और अब वे उन जैसे आदमी बन गये थे।

यह सब देख कर वे दूसरे गॉव वाले अपने पुराने गॉव में वापस आ गये और सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

31 चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे[78]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के वियतनाम देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक पानी वाला भैंसा[79] खेत में अकेला एक हल के सहारे खड़ा हुआ था। उसने उस दिन सारे दिन चावल के खेतों में हल चलाया था सो अब वह उसके सहारे खड़ा थोड़ा आराम कर रहा था।

जब वह इस तरीके से थोड़ा आराम कर रहा था तो वह कभी कभी खेत के चारों तरफ लगी घास भी खा लेता था और अपनी पीठ पर पड़ी धूप का आनन्द भी ले लेता था।

कि अचानक भैंसे को किसी चीज़ की बू आयी। वह चीते की बू थी। उसकी ऑखें बड़ी हो गयीं और उसने चारों तरफ देखा।

चीते की बू हवा में बिखरी पड़ी थी। उसने अपने दुश्मन की किसी आवाज को सुनने की भी कोशिश की पर उसे कुछ सुनायी नहीं पड़ा।

और पानी वाली भैंसें तो चीते का प्रिय खाना है।

---

[78] How the Tiger Got Its Stripes – a folktale from Vietnam, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=92
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[79] Translated for the words “Water Buffalo”

अचानक ही वह भैंसा चीते को अपने सामने खड़ा देख कर आश्चर्यचकित रह गया। क्योंकि न तो वह चीता चिल्लाया और न ही वह उसके ऊपर कूदा जैसे कि वह उसको खा जाना चाहता हो बल्कि वह तो बड़ी बहादुरी और चुपचाप से पेड़ों के पीछे से निकल कर भैंसे के सामने आ कर खड़ा हो गया।

भैंसा उसको देख कर थोड़ा घबराया पर हिम्मत से बोला — "अगर तुम कर सकते हो तो मुझ पर हमला कर के तो देखो। मैं अपने सींगों से अपनी रक्षा करूँगा। और अगर तुमने मुझे खाने की कोशिश की तो तुमको उसकी बड़ी मँहगी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

चीता बड़ी नर्मी से बोला — "मैं यहाँ तुमको खाने नहीं आया हूँ भैंसे भाई। मैं तो तुमसे एक सवाल पूछने आया हूँ कि ऐसा कैसे होता है कि तुम्हारे जितना बड़ा ताकतवर जानवर इस हल से बँध कर इतनी कड़ी मेहनत करता है? तुम उस आदमी के लिये क्यों काम करते हो जो तुमको इस तरह बाँध कर तुमसे काम लेता है?"

वह असल में उस किसान के बारे में बात कर रहा था जिसका वह भैंसा था।

भैंसा बोला — "मुझे नहीं मालूम। पर वह आदमी मुझ पर और खेत के दूसरे कई जानवरों पर राज करता है। उसका कहना है कि यह उसकी अक्लमन्दी का कमाल है जो उसको हम सबके ऊपर राज करने के लायक बनाती है। वैसे वह सचमुच में बहुत ही अक्लमन्द आदमी है।"

चीता बोला — "अगर मेरे पास उसकी जैसी अक्लमन्दी होती तो मैं भी सारे जानवरों पर राज करता। मैं उन सबको बिल्कुल शान्त खड़ा कर देता और फिर जिसको मेरा मन करता उसी को एक एक कर के खाता रहता।"

यह सुन कर भैंसा तो यह सोच कर ही डर के मारे कॉप गया कि अगर चीते के पास आदमी जैसी अक्लमन्दी होती तो वह तो न जाने क्या करता।

चीता फिर बोला — "मैं आदमी के पास जाता हूँ और उससे कहता हूँ कि वह मुझे अपनी अक्लमन्दी दे दे। अगर वह मुझे अपनी अक्लमन्दी नहीं देगा तो मैं उसी को खा जाऊँगा।"

उधर उस आदमी ने अपने हथियार तो अपने घर पर ही छोड़ दिये थे और वह वापस अपने खेत की तरफ लौट रहा था कि उसको चीता दिखायी दिया।

चीते को देख कर वह डर गया पर उसने अपना डर दिखाया नहीं। उसने चीते से पूछा — "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये, ओ जंगल के राजा? क्या तुम मुझे खाना चाहते हो?"

चीता बोला — "अगर तुम मुझे अपनी अक्लमन्दी मुझे दे दो तो मैं तुमको छोड़ दूँगा।"

आदमी बोला — "मिस्टर चीते। मुझे बहुत अफसोस है कि मैं अपनी अक्लमन्दी घर पर ही छोड़ आया हूँ। मैं उसको घर जा कर ला सकता हूँ अगर तुमको बहुत जल्दी न हो तो....।

पर मुझे एक और बात का डर है कि जब मैं अपनी अक्ल लेने के लिये घर जाऊँगा तो तुमको भूख लग आयेगी और तुम मेरे भैंसे को खा लोगे। और मुझे उसकी अपना हल खींचने के लिये बहुत जरूरत है।

सो अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं तुमको यहाँ एक रस्सी से एक पेड़ के साथ बाँध जाऊँ। इससे मुझे विश्वास रहेगा कि तुम मेरे भैंसे को नहीं खाओगे। इससे मैं अपने आपको भी सुरक्षित महसूस करूँगा और घर जा कर अपनी अक्ल शान्ति से ला सकूँगा।"

चीता राजी हो गया सो आदमी ने रस्सी का एक फन्दा उसके गले में डाल कर उसको एक पेड़ से बाँध दिया और वह खुद अक्ल लाने के लिये घर दौड़ गया। जब वह वापस लौटा तो उसके साथ एक गाड़ी भूसा था और एक जलती हुई मशाल थी।

आदमी बोला — "यह रही मेरी अक्ल।"

कह कर उस आदमी ने वह भूसा चीते के चारों तरफ इतनी दूर फैला दिया जिससे कि वह उसे अपने पंजों से न छू सके और फिर उसने उस भूसे में आग लगा दी।

वह फिर बोला — "जब यहाँ मेरा काम खत्म हो जायेगा तो तुम मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द हो जाओगे।"

जलते हुए भूसे की गर्मी ने चीते को झुलसा दिया। सारे समय वह दर्द के मारे चिल्लाता रहा जब तक कि आग ने उसकी रस्सी को

जला नहीं दिया। जैसे ही रस्सी जली चीता उस पेड़ से छूट कर वहॉ से भाग लिया।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह उस आग से जल कर मरा नहीं पर आग की लपटों और उसके धुॅए ने उसके शरीर पर काली धारियॉ बना दी थीं।

आज भी ये धारियॉ उसके शरीर पर देखने को मिलती हैं। उसके बाद उसने आदमी से कभी अक्ल लेने की कोशिश नहीं की।

List of Tales of "Folktales of Asia"

1. A Beggar and a Miser
2. A Little Drop of Honey
3. Why There are No Tigers in Borneo
4. The Singing Pumpkin
5. The Gift of Stories: Caliph of Baghdad
6. Ali Kojia and the Merchant of Baghadad
7. Hwan and Dang
8. The Pumpkin Seeds
9. The Magic Maneybag
10. What We Will Plant We Will Eat
11. The King Who Hated Old people
12. The Prince and the Fakir
13. Amin and Ghul
14. Seven Happy Villagers
15. Saving Moon
16. Why Male Mosquitoes Do Not Bite
17. The Man With the Coconuts
18. Why Chickens Scratch the Ground
19. Monkeys and Dragonflies
20. Lizard's Duel With Leopard
21. The King Who Changed His Ways
22. The Flies Who Paid a Debt of Gratitude
23. The Frog in the Well
24. Trapping Rabbits in Taiwan
25. Why Elephant Has a Long Nose
26. The Candy Man
27. The Tiger and the Frog
28. Two Rabbits and a Bear
29. The Mittens
30. A Tiger, a Worm and a Fisherman
31. How the Tiger Got His Stripes

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचाया जा सकेगा।

विंडसर, कैनेडा
2022